यंत्र विद्या के १२१ प्रयोग

सिद्ध बाबा औढ़र नाथ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सूचना

पिछले बीस वर्षों से यह ग्रन्थ इसी प्रारूप में छप रहा है जिसे हज़ारों लोगों ने पढ़ा व आजमाया है। इस कारण से इसकी मुद्रण शैली में भी कोई परिवर्तन नहीं किया जा रहा है।

यन्त्रमित्याहुरेतस्मिन देवः प्रीणाति पूजितः।
शरीरमिव जीवस्य दीपस्य स्नेहवत प्रिये॥

As body is to the soul and oil is to the lamp, a yantra is to the deity.

Kularnava Tantra (Chap. v.86)

जैसे शरीर आत्मा के लिये और तेल दीपक के लिये है उसी प्रकार यह यन्त्र इष्टदेव की प्रसन्नता के लिये हैं।

कुलार्णवतन्त्र (अ० ८६)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

॥ ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

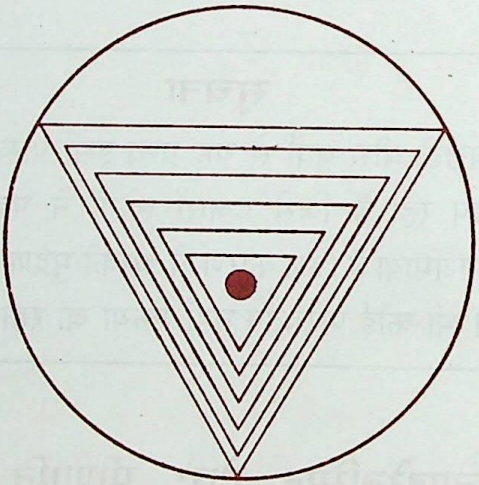

॥ नमः सर्वयन्त्रात्मिका ॥

I bow to the Goddess who is 'The Soul of All Yantras'.

Lalita Sahasranama (205)

मैं सर्वयन्त्रात्मिका (देवी) को प्रणाम करता हूँ जो समस्त यन्त्रों की आत्मा स्वरूप हैं।

ललिता सहस्त्रनाम (२०५)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मनोकामना सिद्धि के लिये

यन्त्र विद्या के १२१ प्रयोग

(एक प्राचीन ग्रन्थ)

अलभ्य 121 यन्त्रों का अमूल्य संग्रह
उनकी प्रयोगविधि एवं कुछ आवश्यक मंत्र

सिद्ध बाबा श्री औढर नाथ 'तपस्वी' जी
की अपार कृपा से प्राप्त

मूल्य : 60-00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006
फोन : (011) 23950635

संस्करण : प्रथम 1986, द्वितीय 1988, तृतीय 1990, चतुर्थ 1992, पंचम 1994, षष्ठम् 1998, सप्तम् 2001, **अष्टम् 2004**

मुद्रक : **केपीटल ऑफसेट प्रिंटर्स,** नई दिल्ली-110005

इस पुस्तक की सामग्री सिद्ध बाबा श्री औढर नाथ 'तपस्वी' जी से सधन्यवाद प्राप्त हुई। जनसाधारण की ओर से एवं पुस्तक के पाठकों की ओर से हम उनके आभारी रहेंगे।

— प्रकाशक

© रणधीर प्रकाशन

YANTRA VIDHYA KE 121 PRAYOG
Written By : Sidh Baba Odhar Nath 'Tapasvi'
Published By : Randhir Prakashan, Hardwar (INDIA)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र
पर विश्वास क्यों और कैसे

'देवदत्त मर जाये' कहने से देवदत्त मर नहीं जाता, यह बात तो लोग अब कहने लगे हैं लेकिन बहुत सी आदिम जातियों में अभी भी नाम छिपाने का प्रयत्न होता है। आदिम प्राणी मनुष्य के नाम और नामी की एकता में विश्वास करता है या करता था। यदि नाम मालूम हो जाये तो कभी दुश्मनी से कोई अभिचार कर सकता है। बहुत आदिम काल में लोग सोचते थे कि अगर ध्यान पूर्वक जप किया जाये तो 'देवदत्त' पद नहीं इस पद का अर्थ–पदार्थ–देवदत्त मर जायेगा। कोई चित्र बनाकर उसकी छाती में छुरा भोंके तो छुरा उस चित्र के अर्थ में––जीवन्त मनुष्य में लग जायेगा।

अब लोग कहेंगे कि ये सब बेकार बातें हैं पर अब भी गालियों में, अभिशाप में उनका अवशेष बचा है। दुनिया से कोई भी विश्वास एकदम गायब नहीं हुआ है। रूप बदलकर वह जी रहा है और अब तो यह विश्वास पुनः बलवान हो रहा है। अगर मंत्र तंत्र और यन्त्र पर विश्वास न होता तो अपने आप को प्रोग्रेसिव या प्रगतिशील कहने और मानने वाले ये लोग विरोधियों के पुतले क्यों जलाते? मुर्दाबाद के नारे क्यों लगाते? आदिम मनोवृत्ति यानी मंत्र तंत्र पर विश्वास की मनोवृत्ति जी रही है और जियेगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

बाबा की ओर से

आज के इस स्पुतनिक के युग में भी विश्व के सभी धर्मों के लोग मंत्र तंत्र और यंत्रों की गहनता को स्वीकार करते हैं। इस विद्या की कई प्राचीन श्रेष्ठ पुस्तकें हैं परन्तु उनका प्राचीन स्वरूप अब समाप्त हो गया है। वर्तमान पुस्तक आपके हाथ में 'यन्त्र विद्या के १२१ प्रयोग' इस विद्या की पुनर्स्थापना के लिए एक भागीरथ प्रयत्न है। इसमें दिये गये यंत्र व उनकी विधियाँ बड़े - २ साधु सन्यासियों व कुछ अलभ्य पुस्तकों के कटे-फटे अंशों से प्राप्त की गई हैं। मैंने सभी यन्त्रों को विश्वास से प्रयोग किया है जो हर स्थिति में ठीक उतरे हैं। परीक्षा करने के लिए यंत्र का प्रयोग करना इस विद्या का अपमान करना होगा क्योंकि श्रद्धा ही इस विद्या की सिद्धि के लिए एक मात्र कुंजी है। अतः श्रद्धाहीन पाठक या साधक ये पहले समझ लें कि यंत्रों की परीक्षा के लिए उनका कोई भी प्रयोग असफल हो सकता है अथवा उनके स्वयं के लिए हानिकारक भी।

इस संग्रह में सभी तरह के यंत्र शामिल किये हैं आप इन यंत्रों को बन्दूक से छोड़ी हुई गोली ही समझिये। अधिक प्रशंसा नहीं करना चाहता हूँ क्योंकि ये एक गुप्त विद्या है और इसका वास्तविक सार तो एक साधक ही समझ सकता है। इन सबको ऐसे सिद्ध पुरुषों से प्राप्त किया गया है कि जिसे आप मूल्य खर्च करके प्राप्त नहीं कर सकते। मेरी पिछली पुस्तक 'मन्त्र प्रयोग' पर साधकों के प्रेम और उनके आग्रह पर ही ये पुस्तक भी जनता के समक्ष लाई जा रही है।

आज का युग तो अधिक ज्ञान प्राप्त करके उन्नति करने का समय है अतः प्रत्येक मनुष्य को इस संसार की अधिक विद्याओं का ज्ञान रखना चाहिए। यह विद्या भी बड़ी ही गम्भीर व आश्चर्य जनक है जिस तरह से आज कल विज्ञान का चमत्कार दीख पड़ता है उसी प्रकार प्राचीन काल में

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इस विद्या का भी बड़ा चमत्कार था। ऋषि मुनि हजारों कोष दूर बैठे हुए लोगों के मनवाँछित कार्य एक पल में ही जान लिया करते थे। अब दुनिया पहले से बहुत आगे बढ़ी है। कोई भी कला अथवा मनुष्य पीछे नहीं रहना चाहता, कोई पोछे रहना भी चाहेगा तो पीछे नहीं रहेगा फिर ये कैसे संभव है कि ये अद्‌भुत विद्या पीछे रहे, यह तो संसार की सबसे आगे रहने वाली विद्या है।

इस विद्या को ही रावण ने कैसे अपनाया और ऋषियों ने कैसे प्रयोग किया इस पर हमें और जानकारी प्राप्त करनी है। इस सम्बन्ध में यदि कोई खोजपूर्ण विधि और अत्याधिक प्रभावशाली सामग्री मिल सकी तो मैं पुन: किसी अन्य रूप में प्रस्तुत कर दूंगा–क्योंकि मैंने तो अपना सम्पूर्ण जीवन ही मन्त्र तन्त्र यन्त्र को खोजने और इनको प्रयोग करके साधना करने में व्यतीत किया है। युग के अनुसार ही धर्मों की स्थापना होती रही है और इस विद्या के लिए तो कलयुग से बढ़कर दूसरा युग नहीं हो सकता यथा––

कलियुग सम नहिं आनयुग,
जो नर करे विश्वास।

इसी प्रकार से इस विद्या को प्राप्त करने का अधिकार भी सभी को है––

जात पात पूछे नहिं कोई,
हरि को भजे सो हरिको होई।

जो नियम बद्ध होकर साधना करेगा उसको सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

आशीर्वाद सहित

––ओढरनाथ 'तपस्वी'

कुम्भपर्व–१९८६

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
१.	सिद्धि प्राप्त करने का यन्त्र	१३
२.	धन वृद्धि का यन्त्र	१४
३.	हनुमान सिद्धि यन्त्र	१५
४.	शत्रु दुःख दायक यन्त्र	१६
५.	अभिलाषा पूर्ण यन्त्र	१७
६.	आकर्षण यन्त्र	१८
७.	सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र	१९
८.	अकाल मृत्यु रोधक यन्त्र	२०
९.	सिद्धि प्राप्ति यन्त्र	२१
१०.	शत्रु दूर करने का यन्त्र	२२
११.	वस्तु वापिस मिलने का यन्त्र	२३
१२.	बुद्धि वृद्धि का यन्त्र	२४
१३.	नजर न लगने का यन्त्र	२५
१४.	कामना सिद्ध यन्त्र	२६
१५.	रोग भगाने का यन्त्र	२७
१६.	सांप का विष उतारने का यन्त्र	२८
१७.	गये हुए मनुष्य के आने का यन्त्र	२९
१८.	सम्मान प्राप्ति यन्त्र	३०
१९.	मोहिनी यन्त्र	३१
२०.	गर्भवती स्त्री की पीड़ा दूर करने का यन्त्र	३२
२१	गर्भ रहने का यन्त्र	३३
२२.	भाग्यवादी अथवा बिक्री बढ़ाने का यन्त्र	३४
२३	पुरुष वशीकरण यन्त्र	३५
२४	स्त्री वशीकरण यन्त्र	३६
२५.	वाचा सिद्ध करने का यन्त्र	३७
२६	निद्रा के समय भय दूर भगाने का यन्त्र	३८
२७	व्यापार में लाभ होने का यन्त्र	३९

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पृष्ठ संख्या

२८. मित्र आकर्षण यन्त्र ४०
२९. मनोरथ सिद्धि यन्त्र ४१
३०. रोने वाले बच्चे के गले में बांधने का यन्त्र ४२
३१. भूत भगाने का यन्त्र ४३
३२. मस्तिष्क वृद्धि यन्त्र ४४
३३. सर्वजन वशीकरण यन्त्र ४५
३४ देवता प्रसन्न करने का यन्त्र ४६
३५. मुसलमानी सर्व वशीकरण मन्त्र-यन्त्र ४७
३६. प्रेम वशीकरण यन्त्र ४९
३७. शिव शक्ति बीसा यन्त्र ५१
३८. श्री नारायण बीसा यन्त्र ५३
३९ श्री रामभद्र बीसा यन्त्र ५४
४०. श्री वासुदेव बीसा यन्त्र ५५
४१. संकर्षण बीसा यन्त्र ५६
४२. श्री बीसा यन्त्र ५७
४३. महा श्री बीसा यन्त्र ५८
४४. स्वस्ति बीसा यन्त्र ५९
४५. श्री हंस बीसा यन्त्र ६१
४६. श्री गरुड़ बीसा यन्त्र ६२
४७. सिंह बीसा यन्त्र ६३
४८. श्री राम हृदय बीसा यन्त्र ६४
४९. श्री सुदर्शन बीसा यन्त्र ६५
५०. पुरुष बीसा यन्त्र ६६
५१. श्री मण्डन बीसा यन्त्र ६७
५२. श्री चतुर्भुज बीसा यन्त्र ६८
५३. श्री कुबेर बीसा यन्त्र ६९
५४. सौभाग्य बीसा यन्त्र ७०
५५. अमोघ बीसा यन्त्र ७१
५६. धन प्रकोष्ठ (विघ्नेश) बीसा यन्त्र ७२

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पृष्ठ संख्या

५७. द्यूत (जुआ) बीसा यन्त्र ७३
५८. इष्ट गृह कुमार बीसायन्त्र ७४
५९. स्त्री मोहन यन्त्र ७५
६०. राज्य मोहन यन्त्र ७६
६१. रणक्षेत्र मोहन यन्त्र ७७
६२. सर्व लोक मोहन यन्त्र ७८
६३. विजय यन्त्र ७९
६४. शत्रु वशीकरण यन्त्र ८०
६५. वशीकरण यन्त्र ८१
६६. राजा वशीकरण यन्त्र ८३
६७. राजा और स्त्री वशीकरण यन्त्र ८४
६८. राजा को प्रसन्न करने का यन्त्र ८६
६९. सर्व प्रजा व शत्रु वशीकरण यन्त्र ८८
७०. स्त्री वशीकरण यन्त्र ९०
७१. वाणिज्यार्थ वशीकरण यन्त्र ९१
७२. जग वशीकरण यन्त्र ९२
७३. राजा वशीकरण यन्त्र ९३
७४. द्यूत (जुआ) वशीकरण यन्त्र ९४
७५. कालाकलस्वाती वशीकरण यन्त्र ९५
७६. अथ वशीकरण यन्त्र ९६
७७. पति वशीकरण वन्त्र ९७
७८. वशीकरण यन्त्र ९९
७९. जग वशीकरण यन्त्र १००
८०. क्रोधित व्यक्ति को वश में करने का यन्त्र १०१
८१. पुरुष वशीकरण यन्त्र १०२
८२. स्वामी वशीकरण यन्त्र १०३
८३. शिव कृपा वशीकरण यन्त्र १०४
८४. स्त्री वशीकरण यन्त्र (विशिष्ट यंत्र) १०५
८५. वशीकरण यन्त्र (विशिष्ट सिद्ध यंत्र) १०६

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

	पृष्ठ संख्या
८६. सर्व वशीकरण यन्त्र	१०८
८७. यात्रा स्तम्भन यन्त्र	१०९
८८. अग्नि स्तम्भन यन्त्र	११०
८९. बुद्धि स्तम्भन यन्त्र	१११
९०. दिव्य स्तम्भन यन्त्र	११३
९१. मुख स्तम्भन यन्त्र	११५
सिद्ध बीसा यन्त्र	११७
यन्त्र लेखन विधि	११७
बीसा यंत्र का मूल यंत्र	११८
बीसा के यन्त्र का विधान	११८
बीसा यंत्र लिखने की विधि	११९
९२. सिद्ध बीसा यन्त्र	१२२
९३. ऋण मुक्ति के लिये यन्त्र	१२४
९४. रोग-मुक्त होने के लिये यन्त्र	१२५
९५. भाग्योन्नति यन्त्र	१२६
९६. पुत्री का विवाह होने का यन्त्र	१२७
९७. पारिवारिक सुख का यन्त्र	१२८
९८. यश तथा संतान प्राप्ति का यन्त्र	१२९
९९. ईश्वर कृपा पाने का यन्त्र	१३०
१००. पदोन्नति का यन्त्र	१३१
१०१. तीर्थ यात्रा का यन्त्र	१३२
१०२. मन्दिर निर्माण का यन्त्र	१३३
१०३. विद्या प्राप्ति का यन्त्र	१३४
१०४. सन्तान सुख का यन्त्र	१३५
१०५. धन प्राप्ति का यन्त्र	१३६
१०६. श्री सिद्ध मनोकामना पूर्ण यन्त्र	१३७
१०७. आजीविका प्राप्ति का यन्त्र	१३८
१०८. स्थानान्तरण का यन्त्र	१३९

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

	पृष्ठ संख्या
१०९. वाहन प्राप्ति का यन्त्र	१४०
११०. सर्व कार्य सिद्ध बीसा यन्त्र	१४१
१११. गृह निर्माण का यन्त्र	१४२
११२. विशिष्ट बीसा तन्त्र	१४३
११३. जलाशय निर्माण का यन्त्र	१४४
सिद्ध पन्द्रह के यन्त्र	१४५
पन्द्रह के यन्त्र साधने के न्यास	१४५
पन्द्रह के यन्त्र लिखने की संख्या	१४६
पन्द्रह के यन्त्रों की प्रयोगविधि	१४७
पन्द्रह के यन्त्र की अन्य विधियां	१४९
पन्द्रह के यन्त्र का मन्त्र	१५१
११४. पन्द्रह का यन्त्र	१५२
११५. पन्द्रह का यन्त्र (नं० २)	१५६
११६. पन्द्रह के यन्त्र के विविध स्वरूप	१६०
११७. बिच्छू सर्पादि नाशक यन्त्र	१६१
११८. महा विजय यन्त्र	१६२
११९. पन्द्रह के विविध यन्त्र (उत्तम यंत्र)	१६३
१२०. पन्द्रह के विविध यन्त्र (मध्यम यंत्र)	१६३
१२१. प्रत्येक कार्य में सफलता पाने के लिये प्रसिद्ध पन्द्रहे का यन्त्र	१६४
१२२. श्री गणेश धारण यन्त्र (मंत्र सहित)	१६५
१२३. श्री कृष्ण धारण यन्त्र (मंत्र सहित)	१६६
१२४. श्री दुर्गा धारण यन्त्र (मंत्र सहित)	१६७

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१.

सिद्धि प्राप्त करने का यन्त्र

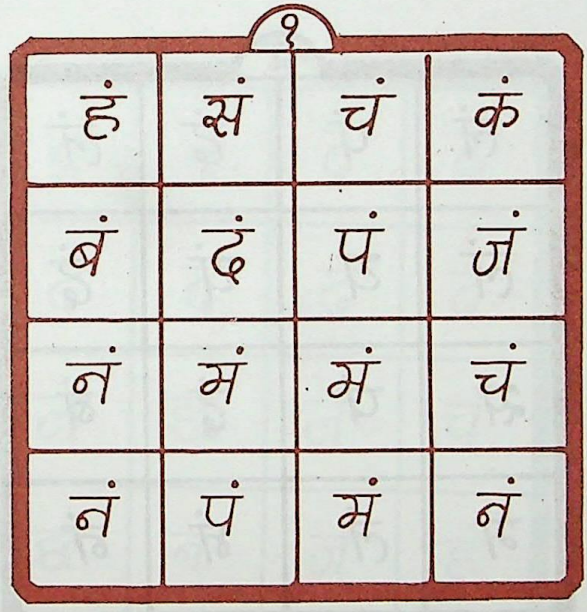

यन्त्र साधक को चाहिए कि किसी भी प्रकार का यन्त्र सिद्ध करने से पूर्व इस सिद्धि प्राप्ति के यन्त्र को कनेर के नीचे बैठकर दो लाख बार लिख ले, तो उससे कालिका देवी प्रसन्न होकर साधक को यन्त्र विद्या में प्रवीण होकर सर्वसिद्ध होने का आशीर्वाद देती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२.

धन वृद्धि का यन्त्र

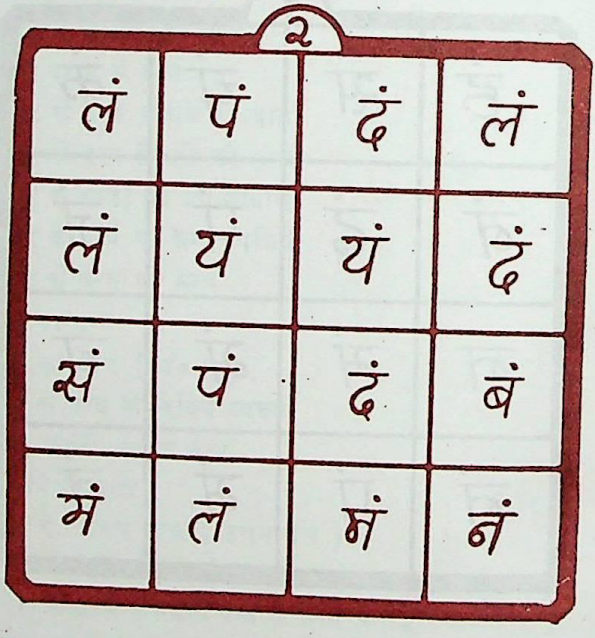

इस यन्त्र को एक लाख पच्चीस हजार बार आलू के रस से लिख कर अपने पास किसी भी शुद्ध स्थान पर सुरक्षित रख लें। इससे लक्ष्मी प्रसन्न होंगी और धन की कमी नहीं रहेगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३.

हनुमान सिद्धि यन्त्र

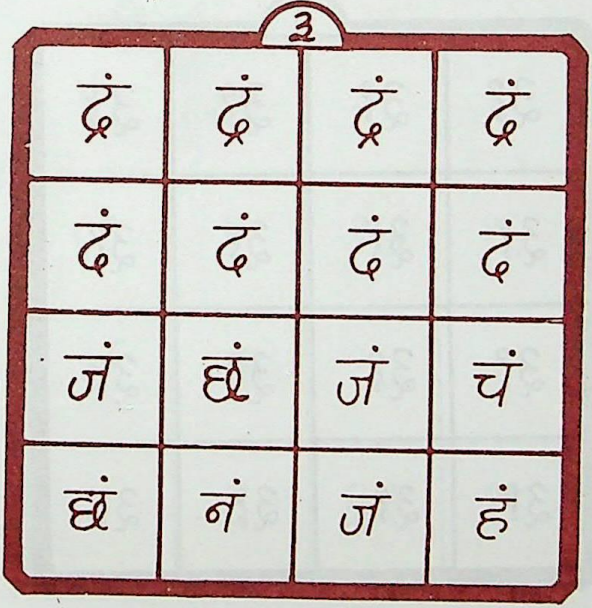

इस ऊपर दिखाये गये ढंग से यन्त्र को सिन्दूर से सवा लाख बार बनायें तो हनुमान जी प्रसन्न होंगें और सर्व कार्यों में सहायता प्रदान करेंगें।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४.

शत्रु दुःख दायक यन्त्र

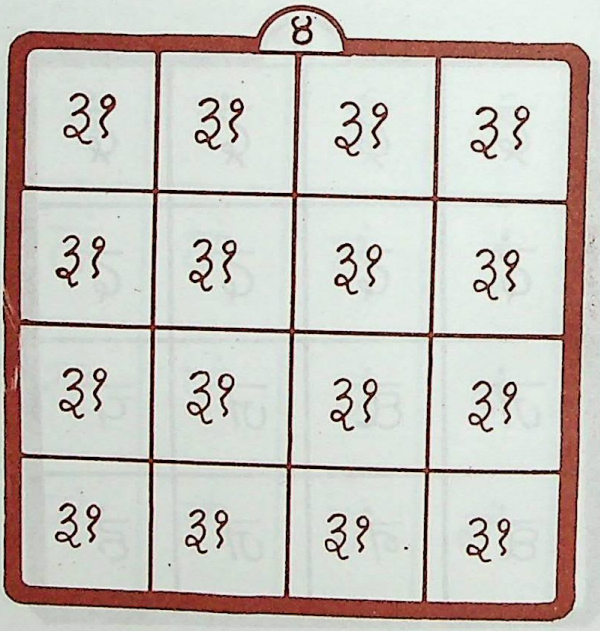

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर (लाल स्याही से) दुश्मन के दरवाजे के आगे मिट्टी खोद कर गाड़ दें तो शत्रु के यहां क्लेश होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५.

अभिलाषा पूर्ण यन्त्र

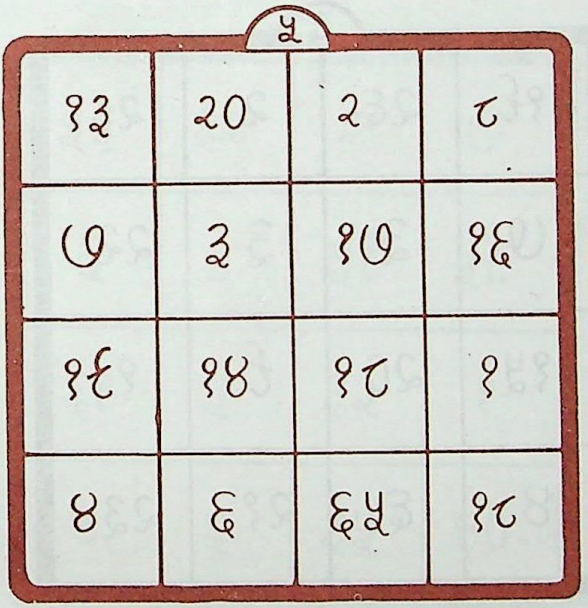

इस यन्त्र को बाँस की कलम से लिख लें तो सर्वकाय अभिलाषाएँ पूर्ण होंगीं, ये सत्य है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६.

आकर्षण यन्त्र

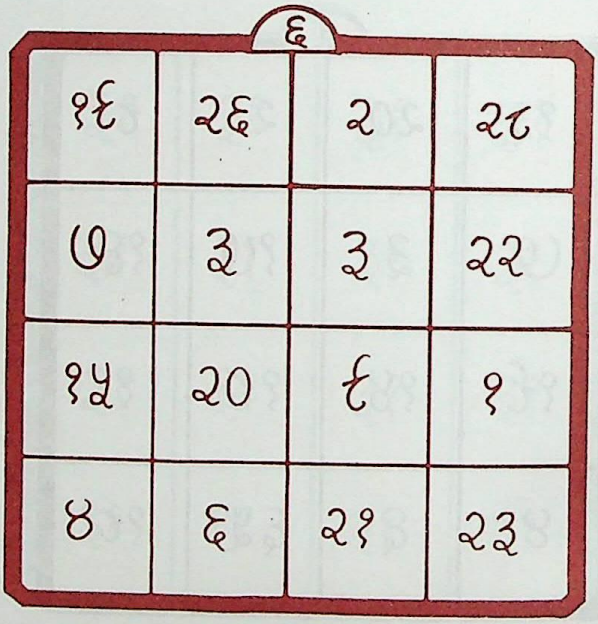

यह यन्त्र सेही के काटे से एक लाख बार लिखा जाये तो गया हुआ मनुष्य इस यन्त्र के आकर्षण से वापिस आ जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७.

सर्व कार्य सिद्ध यन्त्र

यह यन्त्र कुत्ते के नाखून से सवा लाख बार लिख कर बाँध लें तो जहां भी जिस किसी भी कार्य से जायें, वह काम सिद्ध होगा, इसमें संदेह न करें।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८.

अकाल मृत्यु रोधक यन्त्र

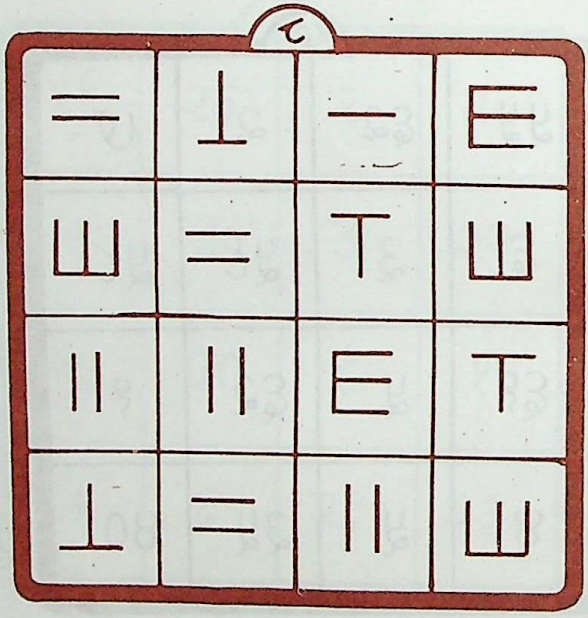

यह यन्त्र लिख कर या ताबीज में रख कर गले में बांधे तो अकाल मृत्यु न होगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६.

सिद्धि प्राप्ति यन्त्र

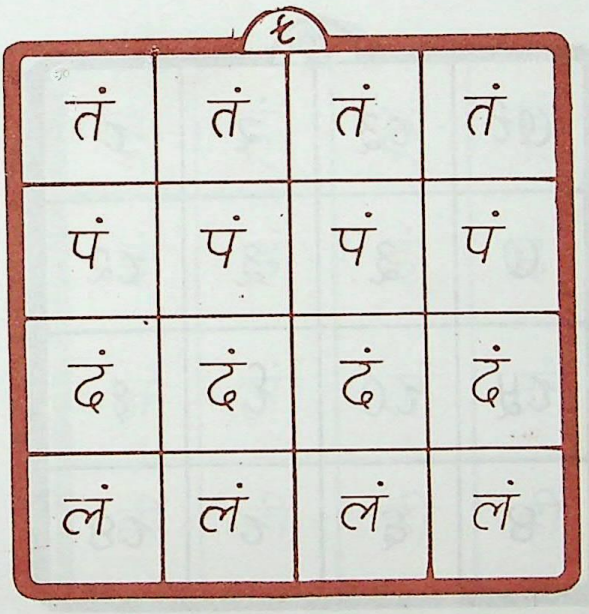

उपर्युक्त मन्त्र को सरस के पेड़ के नीचे बैठ कर दो लाख बार लिखें तो इष्ट देवता प्रसन्न होकर सिद्धि प्राप्ति का वरदान देता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०.

शत्रु दूर करने का यन्त्र

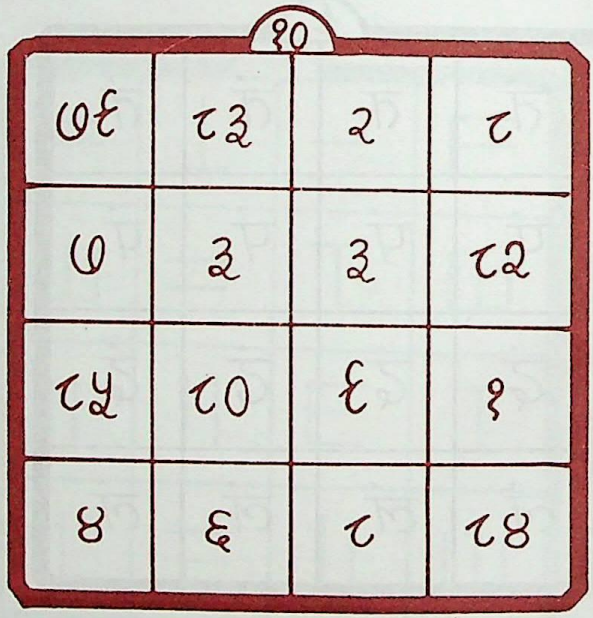

इस यन्त्र को धतूरे के रस से लिख कर अपने या जिसे शत्रु से बचाना हो उसके कंठ में बांधे तो शत्रु से बचा रहेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११.

वस्तु वापिस मिलने का यन्त्र

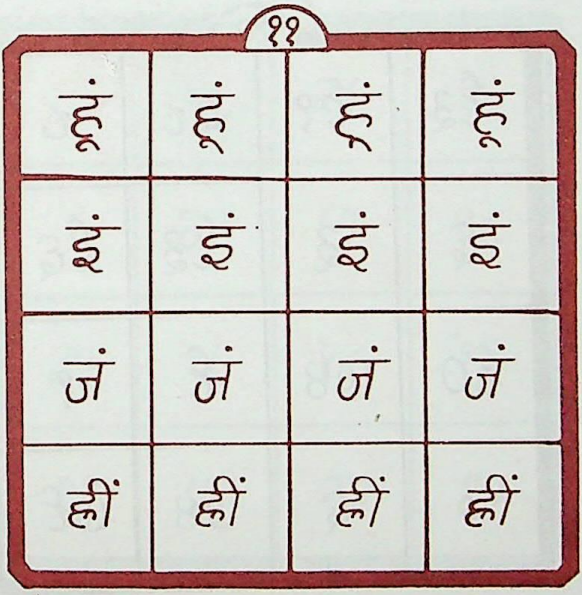

इस यन्त्र को कनेर की छाया में बैठ कर बकरे की अस्थि कलम से लिखे। जब तक खोई हुई या चोरी गई वस्तु वापिस न आ जाये प्रतिदिन लिखे। वस्तु अवश्य लौट कर आयेगी, ऐसी इस यन्त्र की शक्ति है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१२.

बुद्धि वृद्धि का यन्त्र

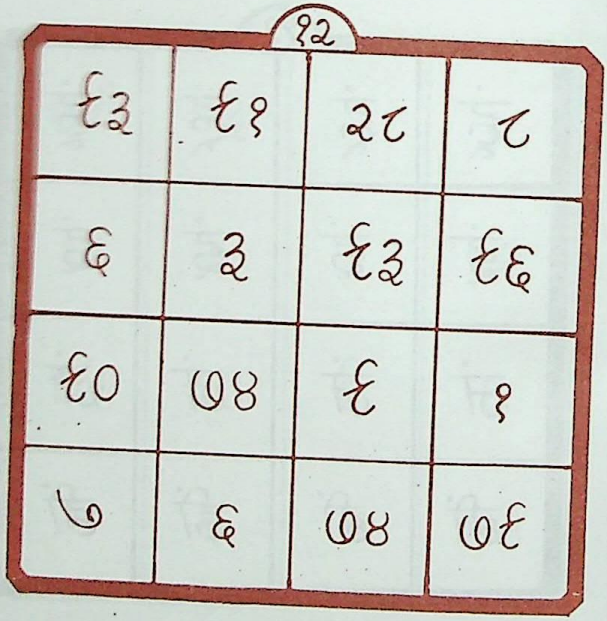

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष की रात में थाली पर लिख कर उसमें खीर का भोजन करे तो बुद्धि बढ़ेगी।

(थाली पीतल अथवा तांबा की लें और लिखने के लिए सिंदूर या रोली का प्रयोग करें।)

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१३.

नजर न लगने का यन्त्र

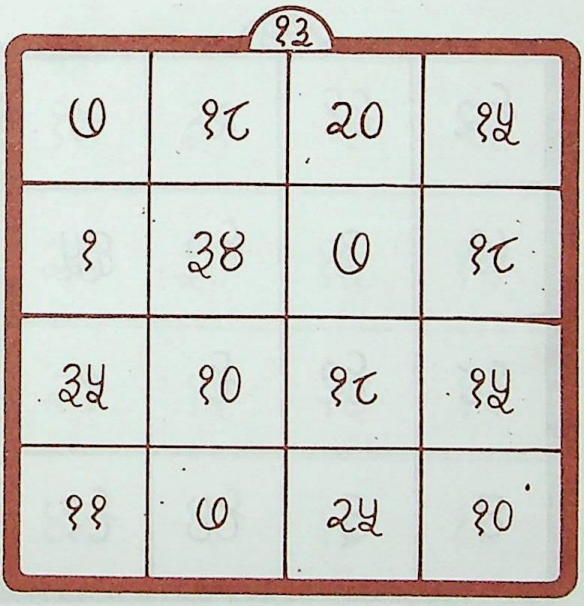

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लाल रंग से लिख ले फिर जिसके गले में बांधे उसे नजर नहीं लगेगी ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१४.

कामना सिद्ध यन्त्र

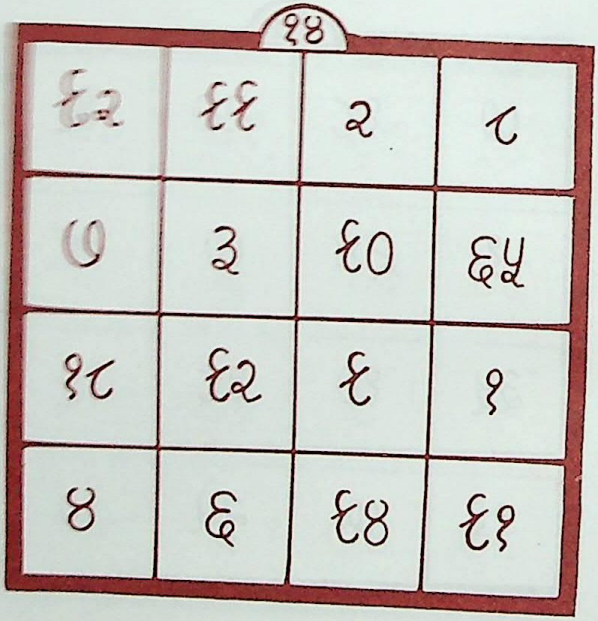

इस यन्त्र को गंगा किनारे या बन में बैठकर सरसों के रस से एक सौ पच्चीस बार लिख कर आवे तो मन चीता काम होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१५.

रोग भगाने का यन्त्र

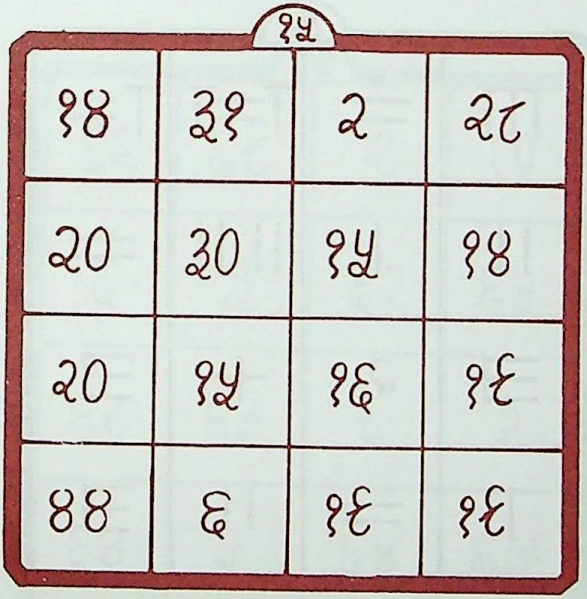

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखें और बीमार के गले में काले धागे में पिरोकर डाल दें तो उसका रोग जाता रहेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१६.

साँप का विष उतारने का यन्त्र

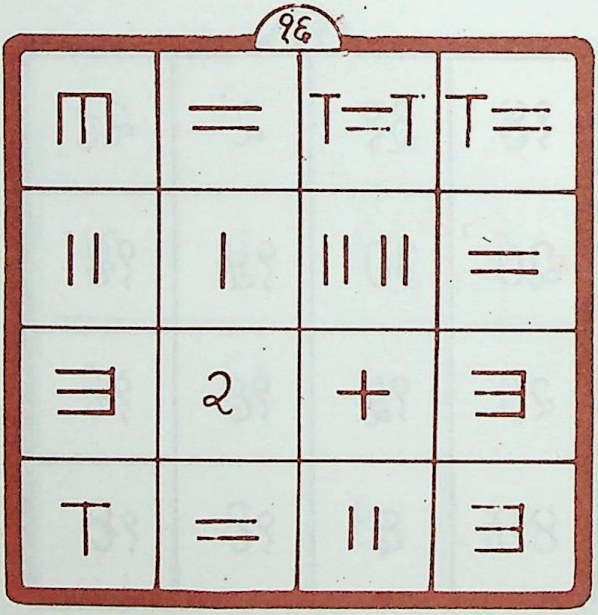

इस यन्त्र को शुद्धता पूर्वक कागज पर लिखकर रोगी को धोकर पिलावे तो विष उतरे। बार-२ धोकर पिलाता जाये पूरा विष उतर जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१७.

गये हुए मनुष्य के आने का यन्त्र

१७

६२	६६	२	७
६	३	६२	६५
६८	६३	८	२
६४	५	६४	६७

इस यन्त्र को किसी स्थान पर बैठकर जैसे दीवार, रेत या मिट्टी में बीच की उँगली से लिखें (बनावे) तो गया हुआ मनुष्य घर आये, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१८.

सम्मान प्राप्ति यन्त्र

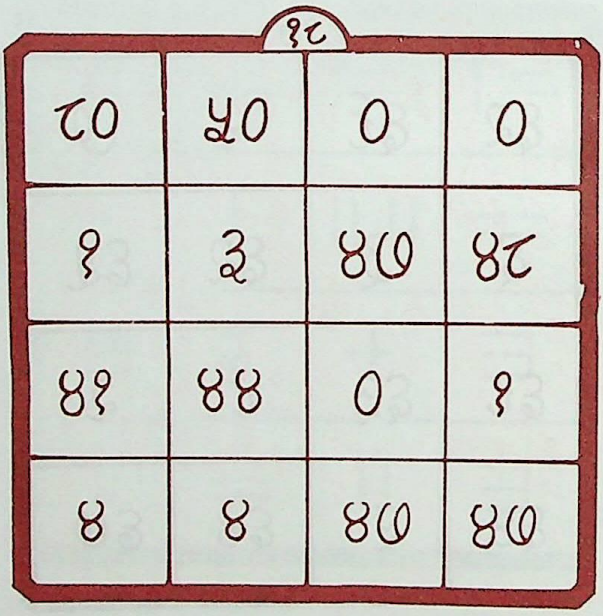

इस यन्त्र को कपूर और कस्तूरी मिलाकर लिखे तो राज सभा में आदर प्राप्त होगा। प्रति दिन लिख कर जाये तो दिन पर दिन सम्मान में वृद्धि होगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१६.

मोहिनी यन्त्र

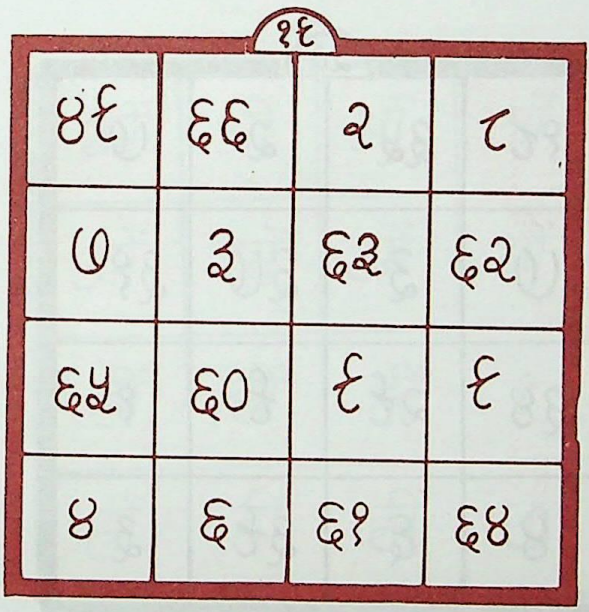

इस यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में स्त्री के दूध से लिखे तो वह स्त्री जो कहोगे वो ही करेगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२०.

गर्भवती स्त्री की पीड़ा दूर करने का यन्त्र

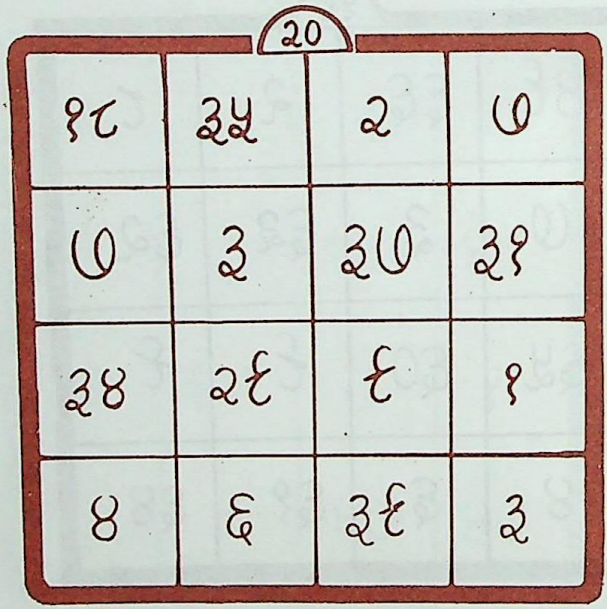

इस यन्त्र को काँसे की थाली पर लिख करके गर्भवती स्त्री को पिलावे तो उसको कष्ट नहीं होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२१.

गर्भ रहने का यन्त्र

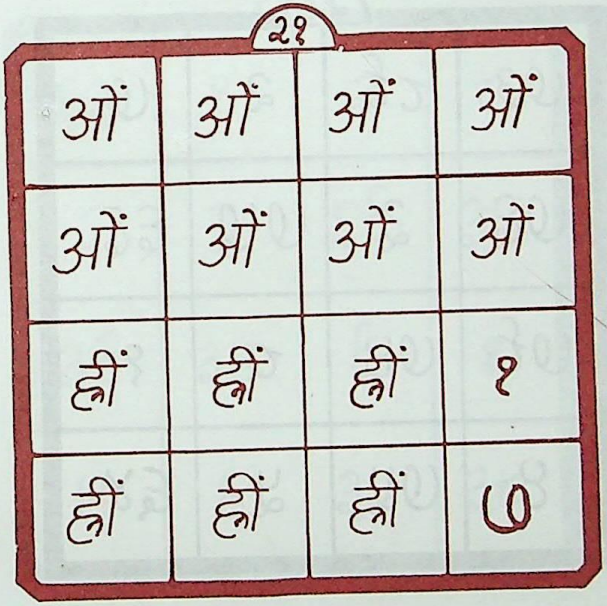

मूल नक्षत्र में रविवार को अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर ये यन्त्र बनाओ फिर स्त्री के बांयी भुजा पर बाँधो तो उस स्त्री के गर्भ रहेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२२.

भाग्यवादी अथवा बिक्री बढ़ाने का यन्त्र

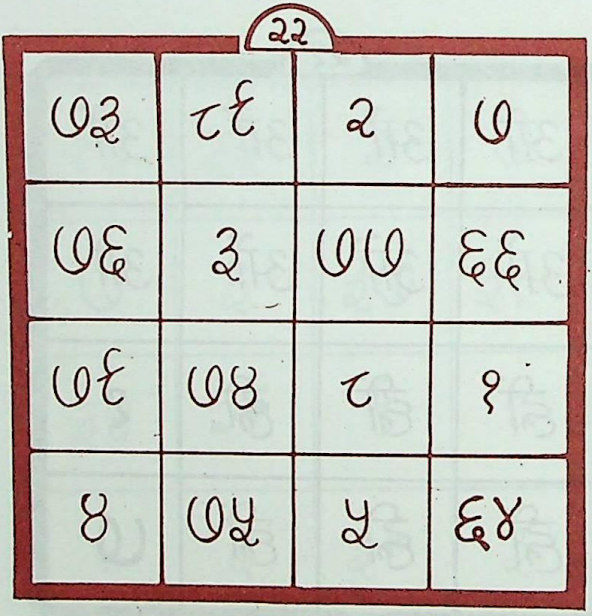

इस यन्त्र को दीपावली के दिन लिखकर दुकान के सामने रखे तो बिक्री अधिक होगी। फिर यन्त्र को बार-२ दुकान या व्यापार के स्थान पर रख सकते हैं लेकिन सर्व प्रथम दीपावली के दिन बनावें और प्रयोग करें इससे यन्त्र सिद्ध हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२३.

पुरुष वशीकरण यन्त्र

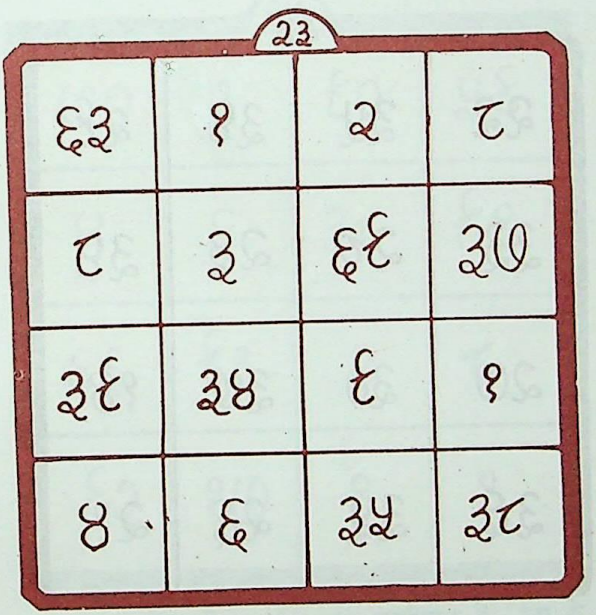

इस उपर्युक्त यन्त्र को प्याज के रस से रोटी पर लिखलें और रोटी को स्त्री जिस पुरुष को खिलायेगी वह वश में हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२४.

स्त्री वशीकरण यन्त्र

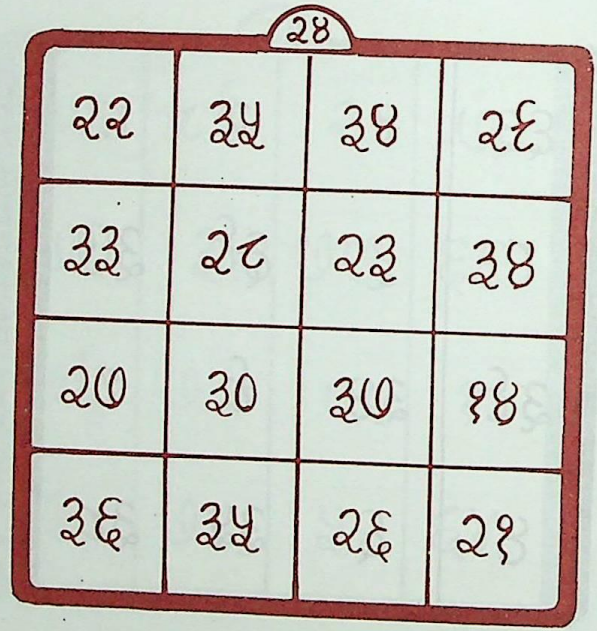

जो कोई मनुष्य इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिख कर अपनी दाहिनी भुजा में बांध ले तो औरत उससे प्रसन्न रहेगी तथा उस स्त्री का ध्यान इधर–उधर नहीं भटकेगा वह स्त्री उस पुरुष के वस में हो जायेगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२५.

वाचा सिद्ध करने का यन्त्र

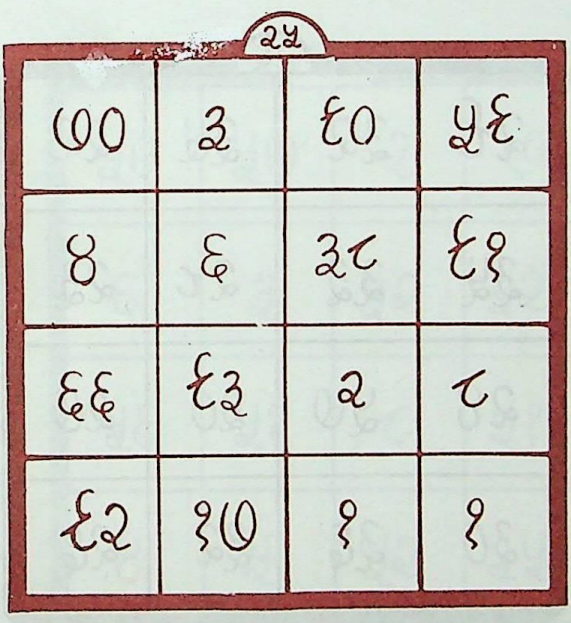

इस यन्त्र को भोज पत्र पर कुलींजन के रस से लिखे फिर उसे ताँबे की ताबीज में मढ़वाकर, ताबीज को काले धागे से गले में बांधे तो वाचा सिद्ध होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२६.

निद्रा के समय भय दूर भगाने का यन्त्र

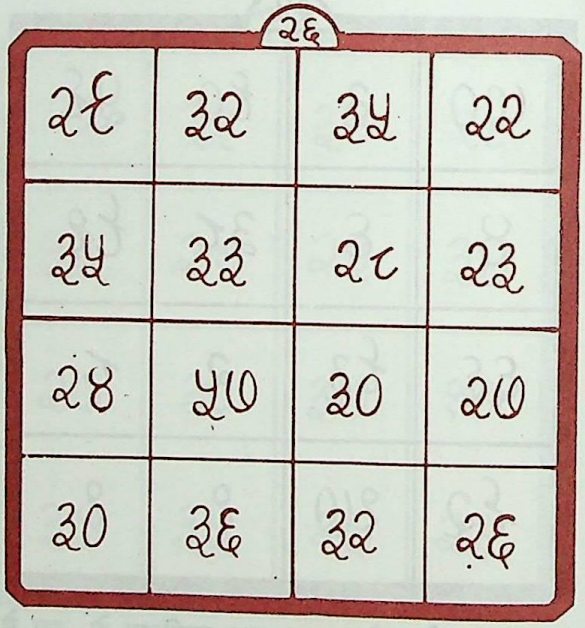

जो बच्चा या बड़ा सोते समय डर से चिल्लाता हो या घबराकर बैठ जाये या सोते समय को किसी और बाधा से दुःखित हो तो इस यन्त्र को लिख कर तांबे की ताबीज में रख कर भुजा पर बांधे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२७.

व्यापार में लाभ होने का यन्त्र

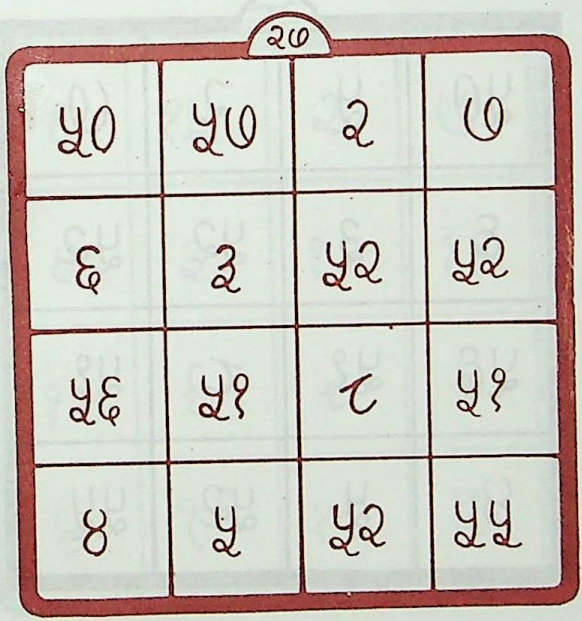

यह यन्त्र भोज पत्र पर बनाना है।

विधि— केसर की स्याही में बहती नदी का जल डाल कर चमेली की कलम से शुक्रवार को ७०० यन्त्र भोज पत्र पर लिखकर आटे की गोली बनाकर उसमें मिलादें और उन आटे की गोलियों को मछलियों को खिलाये। यही यन्त्र दुकान पर भी लिखलें। व्यापार में दिन प्रतिदिन लाभ होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२८.

मित्र आकर्षण यन्त्र

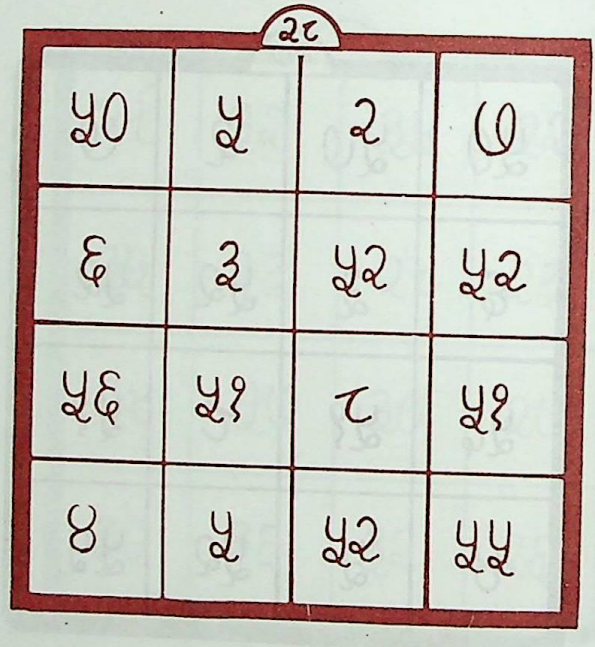

यदि किसी का मित्र रूठ गया हो और उसने मिलना छोड़ दिया हो तो इस यन्त्र को केसर की स्याही में बहती नदी का जल डालकर चमेली की कलम से लिखे। इस प्रकार से तैयार किये यन्त्र को उसके बालों के साथ जला डाले तो मित्र मिलने अवश्य आयेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२९.

मनोरथ सिद्धि यन्त्र

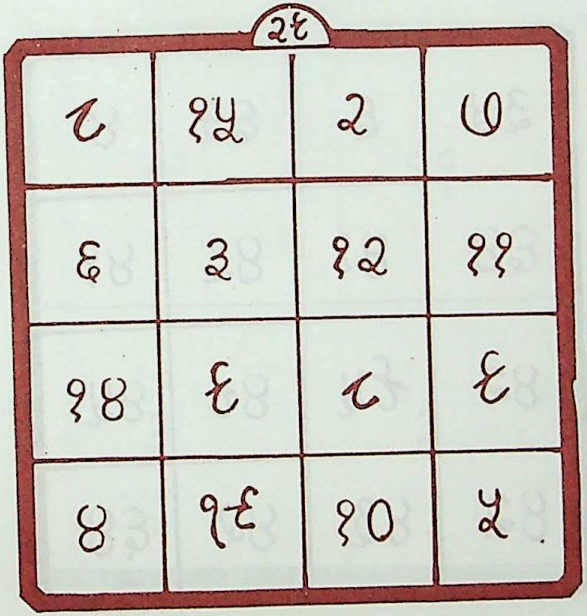

इस यन्त्र को हल्दी के रस से कागज पर लिखे, यन्त्र के नीचे अपना मनोरथ भी लिख दे। उसे इतवार को पलीता लगाकर जलाये। सात इतवार लगातार करे तो दुःख नाश हो और मनोरथ पूर्ण होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३०.

रोने वाले बच्चे के गले में बांधने का यन्त्र

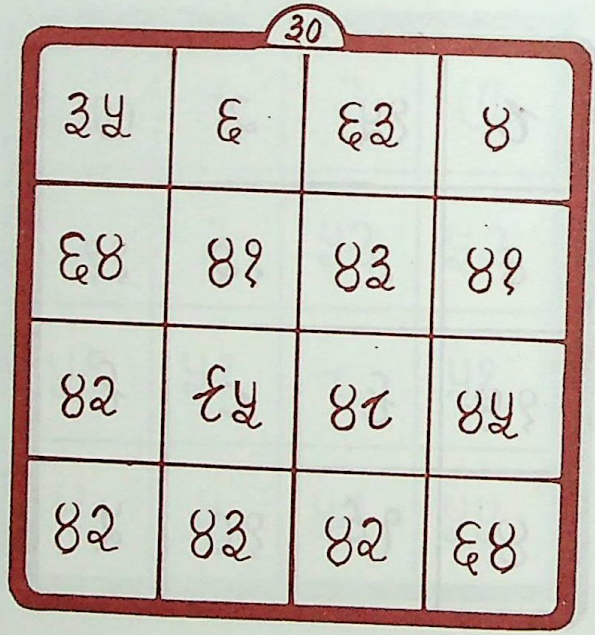

यदि बच्चा रोता बहुत हो और रात–दिन चैन न लेने देता हो; बच्चे को गहरी नींद न आती हो तो ये यन्त्र लिखकर बच्चे के गले में डाल दें, बच्चे का रोना बन्द हो जायेगा। यन्त्र को तांबे के ताबीज में रखकर गले में लटकाना अच्छा होगा अन्यथा यन्त्र के खराब हो जाने का डर है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३१.

भूत भगाने का यन्त्र

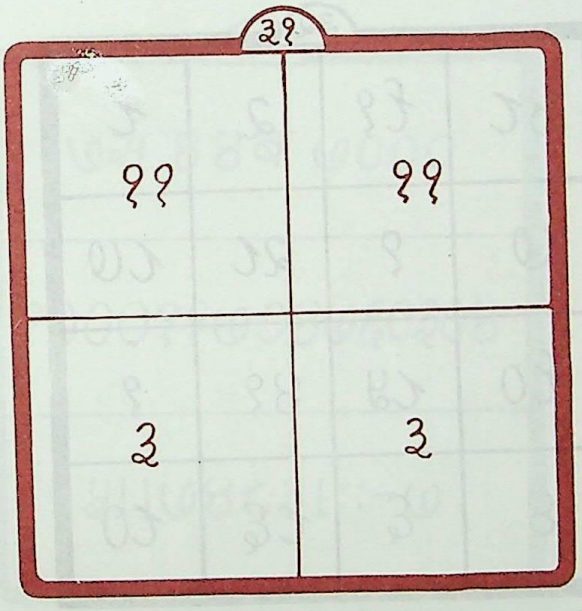

इस यन्त्र को पहले एक सादा कागज पर तैयार करलें फिर सुधाकर यन्त्र में राई भर कर जलादे। जिन्न, मसाने, भूत, प्रेत, बरगक्स, चुड़ेल आदि दूर भाग जायेंगे। यह श्रेष्ठ यन्त्र है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३२.

मस्तिष्क वृद्धि यन्त्र

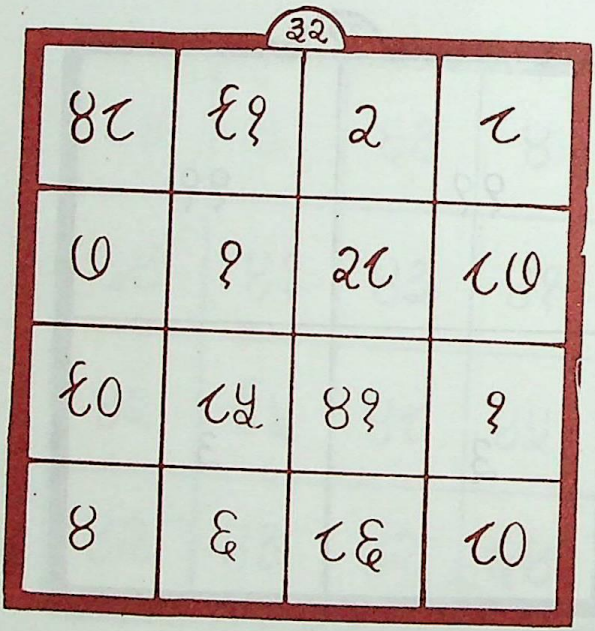

यह मन्त्र. माल कंगनी के रस से शुक्ल पक्ष की चौदस को लिख कर भुजा पर बांध ले तो बुद्धि अवश्य बढ़ेगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३३.

सर्वजन वशीकरण यन्त्र

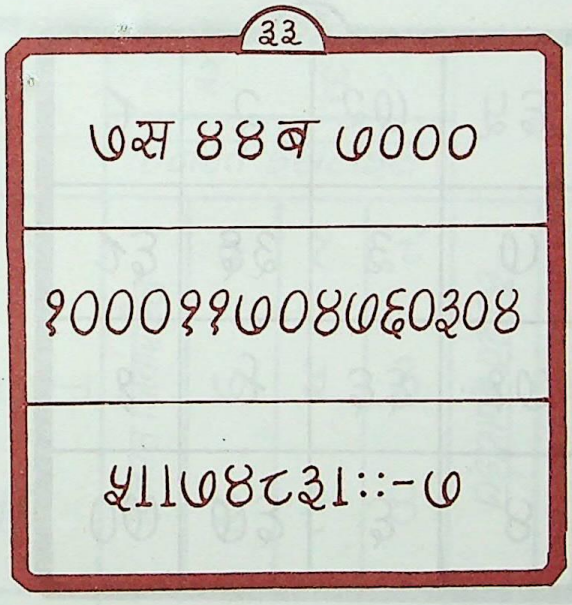

इस यन्त्र को पत्थर पर लिख कर उस पत्थर को चूल्हे के नीचे गाड़ दे। सात दिन तक गड़ा रहने दे फिर जिसे वश में करना हो उसका तथा उसकी माता का नाम लिखकर दुबारा गाड़े तो वाचा खाली नहीं जायेगी,

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३४.

देवता प्रसन्न करने का यन्त्र

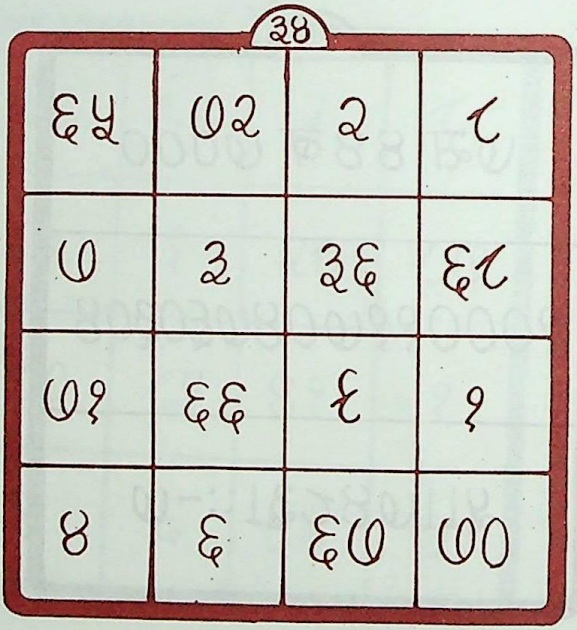

इस यन्त्र को आक की लकड़ी से सादे कागज पर बनाये और उस पर अपना मस्तक नवाये तो इष्ट देवता प्रसन्न हो जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३५.

मुसलमानी सर्व वशीकरण मन्त्र-यन्त्र

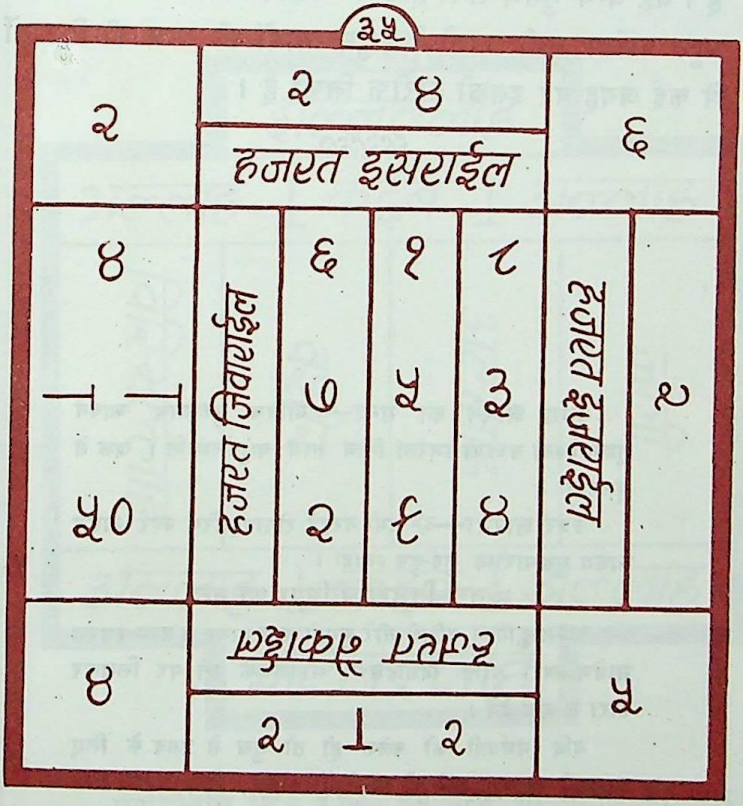

सर्वप्रथम इस यन्त्र को लिखकर सूर्य अमीर की नमाज १०० बार पढ़े; फिर लोबान की धूनी देकर यन्त्र को तांबे के ताबीज में मढ़वाले तो ऐसा कोई भी कार्य नहीं रहेगा जो इसके प्रभाव से न बने। मुकदमा, जुआ, व्यापार, मान-सम्मान, यात्रा और भले-बुरे दिनों का निवारण आदि में बहुत प्रभावशाली

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

है। यह यन्त्र मुसलमानी होने के कारण मौलवियों में इसकी बहुत प्रशंसा सुनी जाती है। मुसलमानों की मन्त्र की किताबों में कई जगह पर इसकी तारीफ लिखी है।

आँख झारने का मन्त्र—शर्यातिच सुकन्याच च्यवनं शुक्रमश्विनौ सध्वयो स्मरतां नित्यं तस्य चक्षुर्नश्यति। जल से घुलवाना।

ज्वरं झारना—ॐ नमो नरहरे रोगापहारिणे ज्वरं नाशय नाशय सुखमारोग्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

अन्तरा तिजरा चौथिया का मन्त्र

'ॐलङ्कायाम् दक्षिणे तीरे कुमुदो नाम वानरः। तस्य स्मरण मात्रेण ज्वरो याति दिशोदश॥ पीपल के पत्ते पर लिखकर डोरा से बाँध देवें।

यदि गर्भवती को क्लेश हो तो सुख से प्रसव के लिए चन्दन से चक्रव्यूह कांसे की थाली में बनावे; फिर धोकर धर्मराज का स्मरण करे।

मन्त्र—हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनाम यक्षिणी। तस्य नूपुर शब्देन विशल्या गर्भिणी भवेत्।

चिरचिरा (चिचड़ी) मस्तक में बाँधने से सुख से प्रसव होता है। इन सब मन्त्रों को १०८ बार पढ़ना चाहिये॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३६.

प्रेम वशीकरण यन्त्र

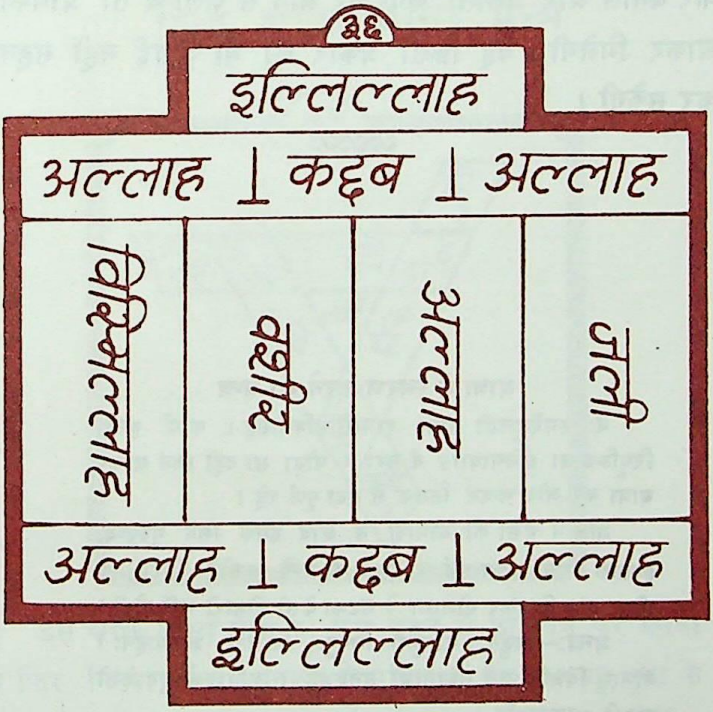

प्रयोगविधि (नं० १)— इस यन्त्र को पीतल की चादर पर लिख कर या खोद कर जुमे की नमाज पढ़े तथा लोबान की धूनी देकर किसी अनार के पेड़ पर लटका दे फिर प्रेमी या प्रेमिका का ध्यान करे तो ऐसा करते रहने से एक सप्ताह के अन्दर माशूक या माशूका जरूर मिलेगी। यह इस यन्त्र को प्रयोग करने की मुसलमानी पक्की विधि है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रयोगविधि (नं० २)— इस यन्त्र को कागज पर लिख कर बनाले और पलीता लगा कर आग से जला दे तो प्रेमिका आकर मिलेगी। वह क़िसी प्रकार की भी जुदाई नहीं सहन कर सकेगी।

यात्रा में स्मरण करने का मन्त्र

यः स्मरेत्तुलसीं सीतां रामसौमित्रिणासह। कार्यं कृत्वा रिपून्जित्वा क्षेमेणायाति वै नरः॥ थोड़ा सा दही स्वयं खाकर यात्रा करे और चन्दन तिलक से सदा पूर्ण रहे।

गाँव में भैंसों की बीमारी न आवे इसके लिये गुरुपुष्य, हस्तार्क अथवा उत्तम पर्व में मिट्टी के कच्चे कसोरे (परई) के भीतर मंत्र लिखकर गोशाला में लटका दे तो बीमारी नहीं होगी।

मन्त्रः—अर्जुनः फाल्गुनो जिष्णुः किरीटी श्वेत्वाहनः। बीभत्सु विजयी पार्थ सव्यसाची धनञ्जयः। कपिध्वजो गुड़ाकेशो गांडवी कृष्णसारथि।

एतान्यर्जुन नामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्। न तत्र पशु-रोगादि शुभ शीघ्रं प्रजायते॥

ज्वर झारने का मन्त्र—ॐ नमो अजयपाल की दुहाई जो ज्वर रहे तो महादेव की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाच।

इस मन्त्र को सात बार पढ़कर झारे तो ज्वर न रहे। इस मन्त्र को दीपावली की रात्रि में सात बार पढ़कर तथा धूप-दीप देकर सिद्ध कर लेना चाहिए।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३७.

सत्यं शिवं सुन्दरम्

शिव शक्ति बीसा यन्त्र

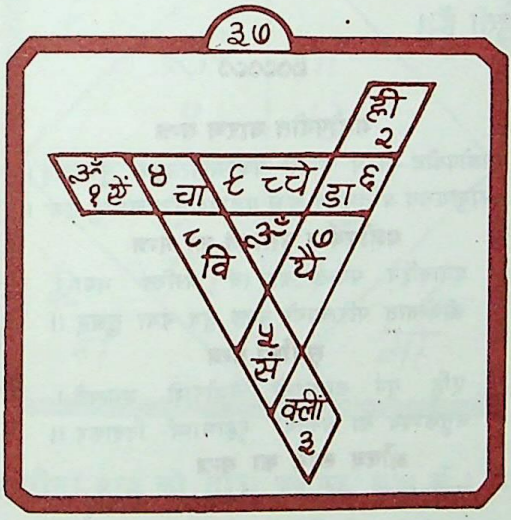

इस शक्ति बीसा यन्त्र को शुभ मुहूर्त में ताम्रपत्र पर बनवा ले फिर नित्य प्रति स्नानादि से पवित्र होकर ऊन या कुश के आसन अथवा मृगचर्म के ऊपर लाल वस्त्र बिछा कर बैठे। मस्तक पर त्र्यम्बक मन्त्र से विभूति धारण करके इस यन्त्र को एक चौकी के ऊपर लाल वस्त्र बिछाकर स्थापित करे और गंगा जल या किसी पवित्र नदी, सरोवर अथवा कूप के जल से स्नान कराके लाल चन्दन, रोली, लाल कनेर, गुड़हल के फूल अथवा किसी भी लाल फूलों से पूजन करे। फिर १०८ दानों की रूद्राक्ष की माला अथवा लाल चन्दन की माला से नवार्ण मन्त्र (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) की एक माला जप करके

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

दुर्गा सप्तशती के चतुर्थ अध्याय का नित्य पाठ करे। इस प्रकार से भगवती प्रसन्न हो जाती हैं। मनचाहा धन, स्त्री, पुत्र, विद्या आदि सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है। देवी सभी प्रकार के रोगों, संकटों और शत्रुओं को नष्ट करके अभय प्रदान करती हैं।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

यज्ञोपवीत उतारने का मन्त्र

एतावद्दिन पर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया।
जीर्णत्वात् परित्यागो गच्छ सूत्र यथा सुखम्॥

सूर्यार्घ्य मन्त्र

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

औषध खाने का मन्त्र

अच्युतानन्द गोविन्द नामोच्चारण भेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

नव ग्रहों की शान्ति के लिये तान्त्रिक मन्त्र

सूर्य—ॐ घृणि सूर्याय नमः	जप संख्या	७०००
चन्द्र—ॐ सों सोमाय नमः	,,	११०००
मंगल—ॐ अं अंगारकाय नमः	,,	१००००
बुध—ॐ बुं बुधाय नमः	,,	९०००
गुरु—ॐ बृ बृहस्पतये नमः	,,	१९०००
शुक्र—ॐ शु शुक्राय नमः	,,	१६०००
शनि—ॐ श शनैश्चराय नमः	,,	२३०००
राहु—ॐ रां राहवे नमः	,,	१८०००
केतु—ॐ कें केतवे नमः	,,	१८०००

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३८.

श्री नारायण बीसा यन्त्र

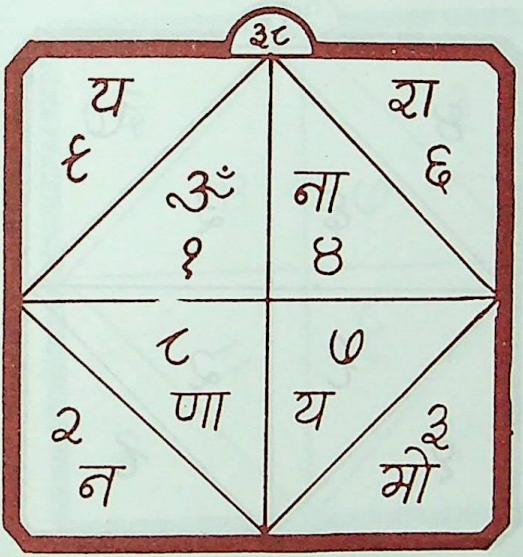

इस बीसा यन्त्र को ताम्र पत्र पर खोद लें। प्रातः काल स्नान करके पवित्र होकर इस यन्त्र को उत्तम आसन पर स्थापित करें और गंगाजल आदि पवित्र जल से स्नान करायें फिर केशर युक्त चंदन या श्वेत चंदन से क्रमशः अंकवार "ॐ नमो नारायण" इस मन्त्र को आठों कोष्ठों में लिखकर पुष्प और घी के दीपक से पूजन करके इसी मंत्र का आठ माला जप करें। श्री विष्णु सहस्रनाम या पुरुषसूक्त का पाठ करें तो भगवान विष्णु की प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार लक्ष्मी जी का निवास स्वतः हो जाता है। शत्रु संहार, भय, रोगादि, का निवारण होकर जीवन परम सुखी हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

३९.

श्री रामभद्र बीसा यन्त्र

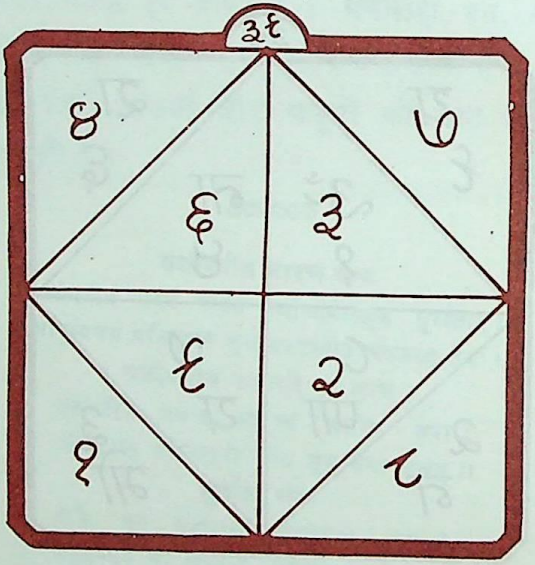

भगवान राम की कृपा प्राप्त करने के लिए इस यंत्र का निर्माण किया गया है। इसी कारण से इसका नाम भी रामभद्र बीसा यंत्र रखा गया है। "ॐ नमो राम भद्राय" इस मंत्र को यन्त्र के प्रत्येक कोष्ठक में अंकवार क्रम से लिख लें अर्थात ॐ १नं० वाले कोष्ठक में, न २नं० वाले कोष्ठक में, मो ३न० वाले कोष्ठक में, रा ४नं० वाले कोष्ठक में, म ५नं० वाले कोष्ठक में, इस प्रकार से पूरा मंत्र आठों खानों में पूरा आ जायेगा। पूरा मन्त्र लिख कर इसी मन्त्र का आठ माला जप करें। तत्पश्चात रामायण या रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर भगवान रामजी की कृपा से सब काम सफल होते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४०.

श्री वासुदेव बीसा यन्त्र

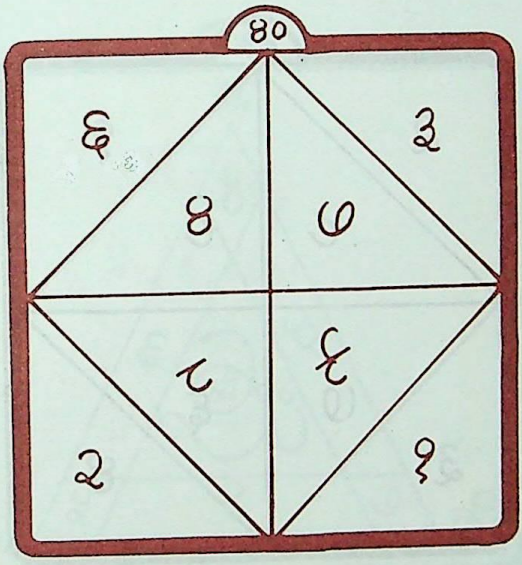

भगवान श्री कृष्ण जो की प्रसन्नता के लिए नारायण यन्त्र और रामभद्र बीसा यन्त्र की भांति इस यन्त्र में भी "ॐ नमो वासुदेवाय" इस मन्त्र को लिख कर इसी मन्त्र का आठ माला जप करें। तत्पश्चात गोपाल सहस्र नाम स्तोत्र या पुरुष सूक्त का पाठ करना चाहिए। श्रीकृष्ण जी की कृपा प्राप्ति के लिए यह यंन्त्र उत्तम है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४१.

संकर्षण बीसा यन्त्र

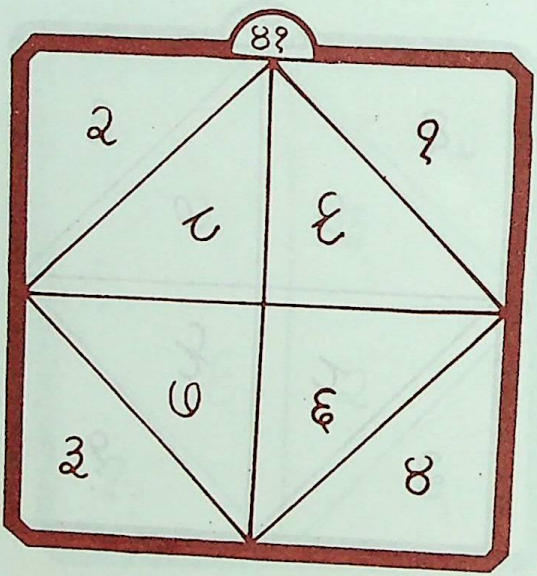

श्री संकर्षण भगवान की कृपा पाने के वास्ते इस यन्त्र में भी पिछले यन्त्र की भाँति "ॐ नमो संकर्षणाय" इस मन्त्र को क्रम वार लिख दे। प्रत्येक कोष्ठक में पूरा मन्त्र भी लिख सकते हैं और मन्त्र का एक-एक अक्षर भी एक-एक कोष्ठक में लिख सकते हैं। मन्त्र पूरा ही एक कोष्ठक में सुस्पष्ट लिखा जाये इसके लिए यन्त्र को सुविधानुसार बड़े आकार में बनाना चाहिए। तत्पचात् इसी मन्त्र का आठ माला (१०८×८) जप करें। इसमें भी गोपाल सहस्त्रनाम का पाठ ही फलदायी है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४२.

श्री बीसा यन्त्र

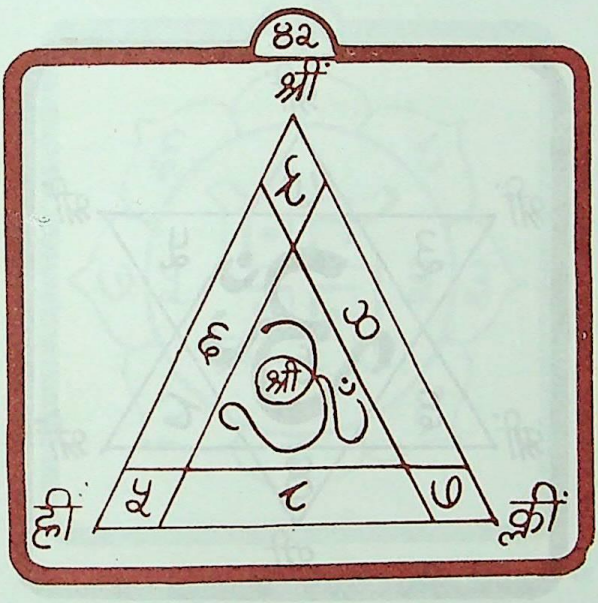

इस प्रकार से ये श्री बीसा यन्त्र ताम्र पत्र पर खुदवा लें फिर सूर्योदय के समय इस यन्त्र का केशर युक्त चन्दन से पूजन करके "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं लक्ष्मी देव्यैः नमः" इस मन्त्र का बीस माला (१०८×२०) जप करके श्री सूक्त का पाठ करें तो अति शीघ्र लक्ष्मी जी की कृपा हो जाती है। आजीवन इस क्रम को बन्द न करें तो अखंड कृपा बनी रहती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४३.

महाश्री बीसा यन्त्र

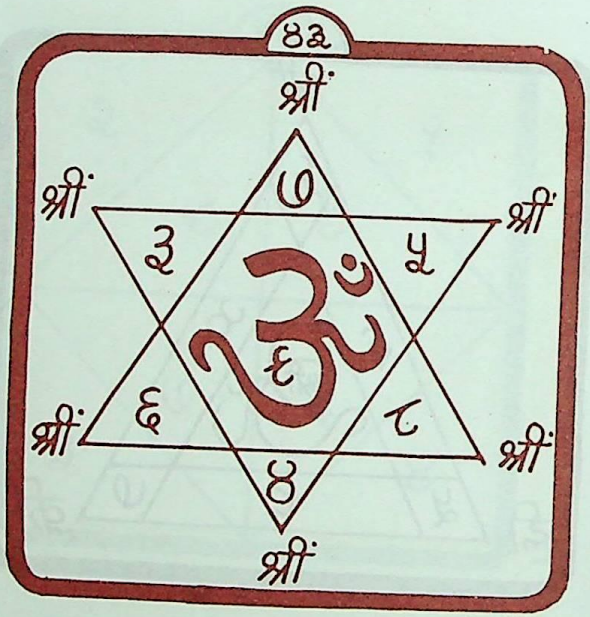

इस यन्त्र को ताम्र पत्र पर बनवाकर अर्धरात्रि के समय केशर युक्त चन्दन से इस यंत्र पर 'ॐ' के ऊपर 'श्रीं' लिखकर पीले फूलों से पूजन करे और श्री सूक्त की १५ वीं ऋचा के अन्त में 'श्रीं' सम्पुट लगाकर सात माला जप करके श्री सूक्त का सम्पूर्ण शुद्ध पाठ करें। ऐसा करने से महालक्ष्मी की शीघ्र ही कृपा हो जाती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४४.

स्वस्ति बीसा यन्त्र

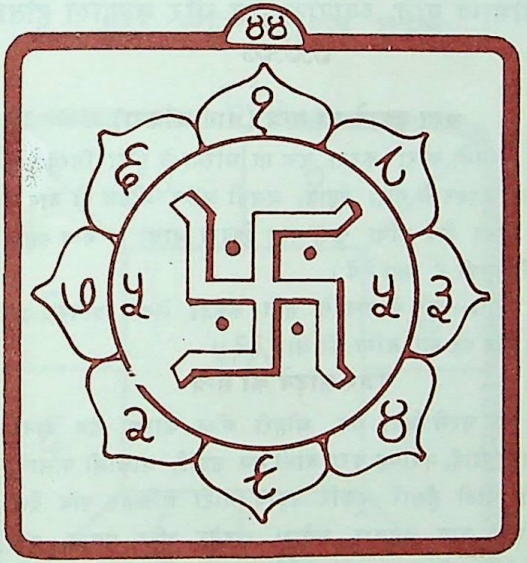

तांबे पर बने हुए इस बीसा यंत्र को सूर्योदय के समय पीत वस्त्र पहनकर सूर्य देव के समक्ष इस यंत्र को स्थापित कर ले। जल, पुष्प, घृत, मिठाई आदि हल्दी से रंगी हुई विभिन्न प्रकार की सामग्री अर्पण करके अखण्ड दीप के समक्ष गायत्री मंत्र की बारह माला का जप करें। फिर आदित्य हृदय स्तोत्र का आद्योपांत पाठ करे तो सूर्यदेव की कृपा से समस्त मनचाहा अभिप्राय पूरा हो जाता है। पुरातन ग्रन्थों में लिखा है कि इस यंत्र के विधिवत पूजन से धन धान्य सन्तान आदि की प्राप्ति होती है। कैसा भी निराश्रित हो उसकी भी आशा और आशयपूर्ण हो जाते हैं। यदि कोई पूजन को नित्य करने में असमर्थ हो तो प्रत्येक रविवार को इसी विधि से जप व पूजनादि करें तो

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं। इसी यंत्र को घृत सिन्दूर से दुकान, कोठार आदि की दीवार पर लिखकर नित्य धूप दीप करने मे सोभाग्य वृद्धि, व्यापार वृद्धि और कल्याण होता है।

आग बुझाने का मन्त्र (आग बाँधना)

ॐ नमो कोरा करवा जल सा भरिया ले गौरा सिरके पर धरिया, ईश्वर ले गौरा नहाय, जलती अग्नि शीतल हो जाय। शब्द साँचा पिंड काँचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा ।। मन्त्र ग्रहण या दीपावली में जगा लेवें।

विधि—कूप के पास से सात कंकड़ी लेकर प्रत्येक पर सात बार पढ़ कर अग्नि की ओर देवें ।।

नजर झाड़ने का मन्त्र

गुरुर चरणे दिया मन, श्रीहरी मोक्ष कारण, देव दानव दैत्याणी खाई, नरसिंह वरा आसी सब उड़ाई, आलाली पालाली चोटी चाटी हुँकारे फूकरि उड़ाव माटी शलिकेर पाँव देख, टुकरिया जाय अमुकार अंगे ।। डाइनेर दृष्टि पलाय, कार अक्षावीर नरसिंह आज्ञा ।। दीपावली में सिद्ध करके इस मन्त्र से झारने का विधान है।

सर्पविषनाशक मन्त्र-औषधि

गारुणास्त्र मन्त्र—ॐ सुपर्णोसि गरुत्मा स्त्रीवृत्ते शिरा गावतं चक्षुर्बृहद्रथन्तरेवक्षी। सोम आत्माच्छेन्दा स्यद्धानि यजूंषि-नाम। साम ले तनुर्वाम देव्थंयज्ञयज्ञि यम्युच्छन्धिष्टायाऽशव्या सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गन्छ स्वःपत ॐ इसे ग्रहण में सिद्ध कर नीम की टहनी या अपामार्ग से झारने का विधान है।

दधि मधु नवनीता, पिप्पली शृङ्गवेरं।
मिरचमपि कूटे, प्रतिहन्सा सुकेसी ।।
यदि डसति सरोषो, तक्षको वासुकी वा।
यमसदनगतानां नास्ति मृत्युर्नराणाम् ।।

गाय के ताजे दूध से निकाला ताजा मक्खन, गाय का दही, शहद, पीपल, अदरक, मिर्च और कूट बराबर मात्रा मे मिला-कर सांप से डसे हुए व्यक्ति को खिला देने से विष उतर जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४५.

श्री हंस बीसा यन्त्र

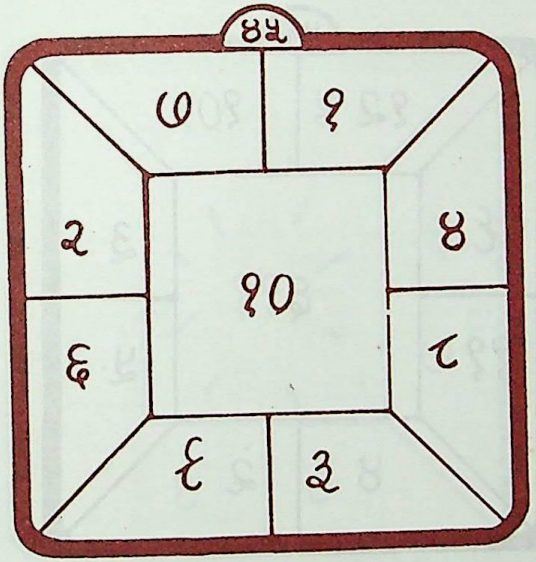

ताम्र पत्र पर बने इस यंत्र का पूजन करने से विद्याध्यन में बहुत लाभ मिलता है अर्थात शीघ्र स्मरण की शक्ति को बल मिलता है। भूल जाने का भय नहीं रहता है। इसी यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर धारण करने से बुद्धि कुशाग्र हो जाती है। यन्त्र के प्रातः दर्शन करने से अन्तःकरण पवित्र और निर्मल बनता है। इसी यंत्र की कृपा से सरस्वती प्रसन्न होती है। अतः विद्यार्थियों के वास्ते ये यंत्र बहुत लाभदाई है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४६.

श्री गरूड़ बीसा यन्त्र

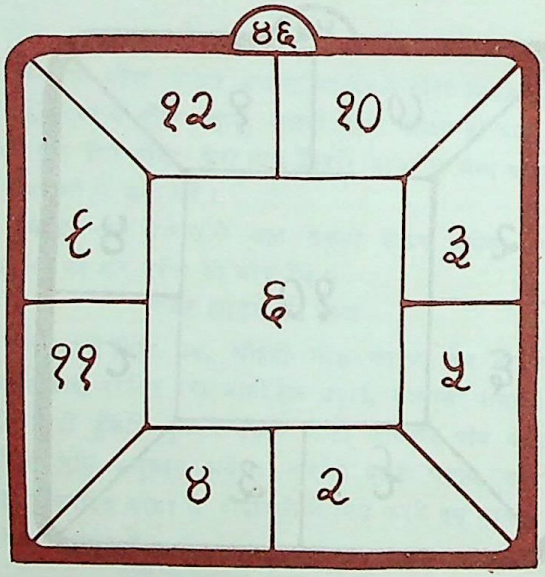

इस यंत्र को भी ताम्रपत्र पर बनवाना होता है। ताम्र-पत्र पर बने इस यंत्र का नित्य पूजन करने से भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त होती है शत्रु का भय दूर होता है। सर्पभय तथा अनेक व्याधियां भी दूर हो जाती हैं। इस यंत्र को घर में दीवार पर घृत सिंदूर से बना देने पर घर में निवास करने वाले सभी सर्प घर छोड़कर भाग जाते हैं। (क्योंकि यह गरूड़ यंत्र है।) सर्व प्रकार से आनन्द में वृद्धि करने वाला ये यंत्र बहुत फलदाई है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४७.

सिंह बीसा यन्त्र

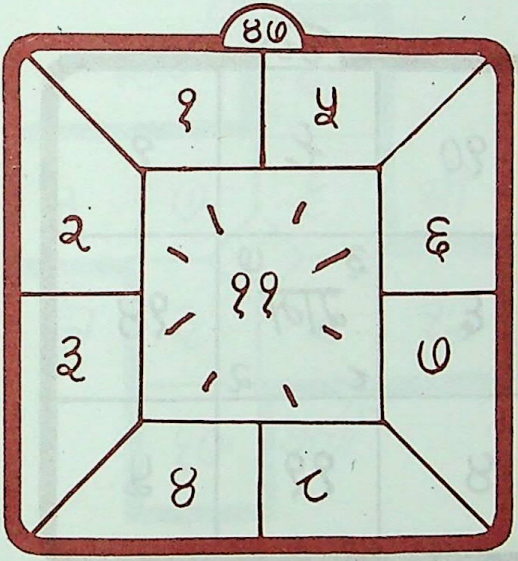

माता चण्डिका (भगवती) की असीम दया प्राप्त करने का यह अचूक यन्त्र है। जिससे हर प्रकार का भय दूर हो जाता है।

तांबे पर बने इस यंत्र को पलास पत्र पर स्थापित करके पूजन करना चाहिए। इससे हर प्रकार के शत्रु और विरोधी अनुकूल हो जाते हैं। इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर भुजा पर धारण करने से दुश्मन अधिक भयभीत होगा और भयभीत शत्रु हार जाता है; चाहे वह कितना भी बलशाली क्यों न हो। अतः आत्मविश्वास बनाने और शत्रु को भयभीत करने का यह सिंह बीसा यंत्र है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४८.

श्री राम हृदय बीसा यन्त्र

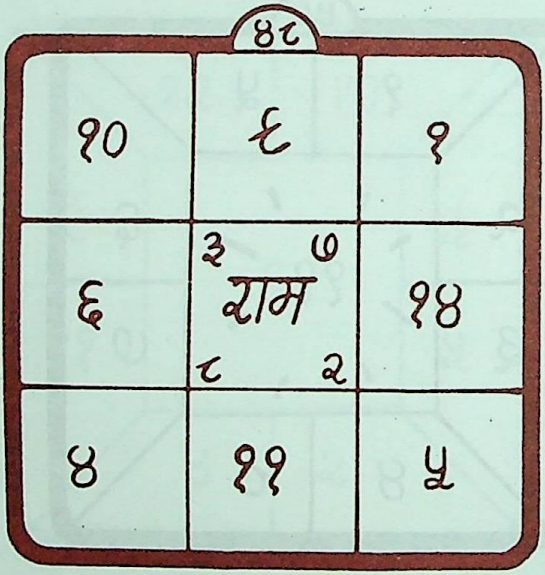

तांबे पर बने या भोज पत्र पर लिखे इस यंत्र का यथा-शक्ति पूजन करके रामायण की किसी भी फलदायक चौपाई का पाठ करें। फिर "राम–राम" की दस माला का जाप रोजाना सबेरे उठकर करें। श्री राम जी की कृपा से इच्छित कार्य सिद्ध हो जाता है। फल की प्राप्ति बहुत जल्दी होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

४६.

श्री सुदर्शन बीसा यन्त्र

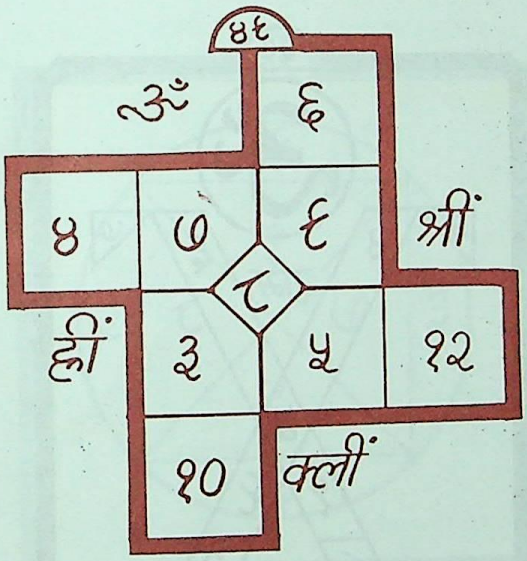

इस यंत्र को ताम्र पत्र पर लिखकर मकान निर्माण के समम नींव में रख देने से मकान चिरकाल तक स्थाई रहता है। मकान में निवास करने वालों की सुखशान्ति बनी रहती है; और घर धन धान्य से सम्पन्न होता है।

दूसरा प्रयोग—इस यंत्र को कांसे की थाली में गेरू से लिखकर धूप दीप करके जल में घोल लें और उस घोल को प्रसूता स्त्री को पिलावे तो प्रसव सुलभ होता है।

तीसरा प्रयोग— इसी यंत्र को घी और सिंदूर से मकान में दीवार पर लिखने से हर प्रकार का कष्ट और अनिष्ट दूर होता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५०.

पुरूष बीसा यन्त्र

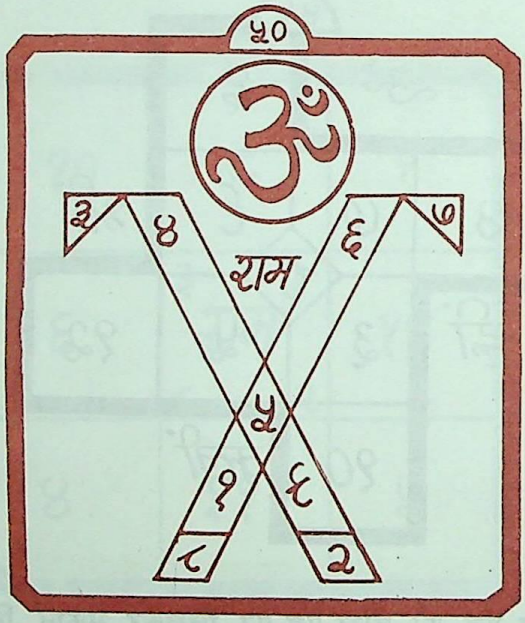

भोजपत्र पर लिखे हुए इस यंत्र का नित्य प्रातः नियमित पूजन करते रहने से सभी संकट टालने की शक्ति इस यंत्र में है। दूसरा प्रयोग ये कि रोगी या पीड़ित जिस रोग से या संकट से ग्रसित हो वह उस कष्ट को इस यंत्र के ऊपर लिखकर धूप दीप करके हाथ में, लाल वस्त्र में बांधकर धारण करे, रोग और संकट से मुक्ति मिलती है। भूत-प्रेत और यक्ष-राक्ष की बाधाएं भी इस यंत्र के धारण करने से दूर होती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BAU, Jammu. Digitized by eGangotri

५१.

श्री मण्डन बीसा यन्त्र

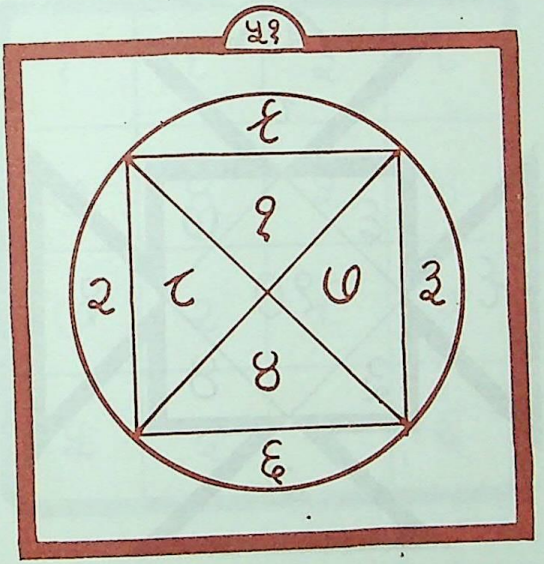

प्रथम प्रयोग—इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर कोठार या खजाने में रखने से अन्न-धन की कमी नहीं रहेगी।

द्वितीय प्रयोग—भोजपत्र पर बने इस यंत्र को हाथ, भुजा या गले में (ताबीज बनाकर) धारण करने से शारीरिक बल और स्वास्थ्य-सौन्दर्य में वृद्धि होगी।

तृतीय प्रयोग—यह यंत्र भोज पत्र पर तैयार करके बाग या खेत में गाड़ देने से फल और अन्न की हानि नहीं होती।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५२.

श्री चतुर्भुज बीसा यन्त्र

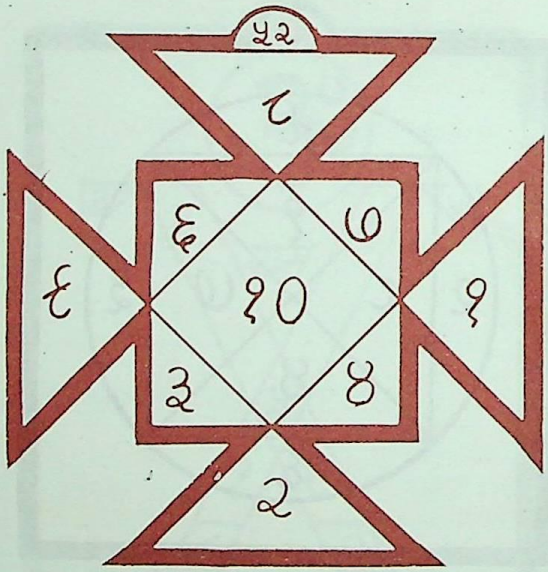

इस यन्त्र को भोज पत्र पर लिखकर धारण करने से अकाल मृत्यु का भय, शत्रु का भय और भूत प्रेत सम्बन्धी बाधाओं से मुक्ति मिलती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५३.

श्री कुबेर बीसा यन्त्र

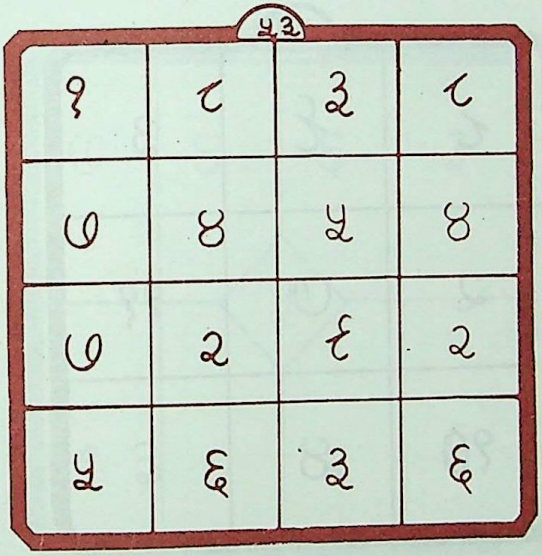

प्रथम प्रयोग—इस यंत्र को घी और सिंदूर से व्यापार स्थल, गद्दी या दुकान की दीवार पर लिखें। नित्य प्रति दीप-धूप करके व्यापार आरम्भ करें। व्यापार में दिन प्रतिदिन वृद्धि और सफलता मिलती है।

द्वितीय प्रयोग—भोजपत्र पर लिखकर दाहिने हाथ में धारण करने से आयु बढ़ती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५४.

सौभाग्य बीसा यन्त्र

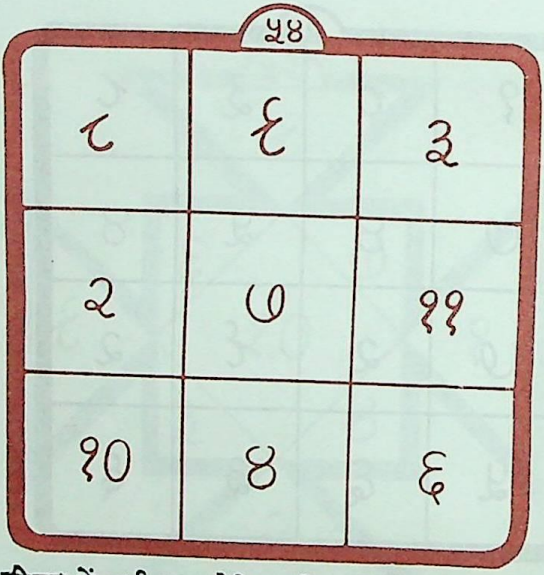

जीवन में कई बार ऐसे व्यक्ति भी मिल जाते हैं जो व्यापार या नौकरी के लिए भरपूर प्रयत्न करते हैं फिर भी सफलता नहीं मिलतीं, ज्योतिषी कुण्डली देखकर बता देते हैं कि इस व्यक्ति के भाग्य में बहुत धन है लेकिन प्रत्यक्ष में वह कुछ विशेष नहीं होता अर्थात भाग्य में लिखा है फिर भी वही दरिद्रता में ही जीवन यापन चलता रहता है। ऐसे व्यक्तियों के लिए यह यंत्र विशेष रूप से फलदाई है। इस यंत्र का काम सौभाग्य जागृत करना है।

प्रयोग विधि— भोजपत्र पर लिखकर दाहिने हाथ में धारण करने से सौभाग्य खुलेगा। घी और सिंदूर से व्यापार स्थल आदि पर लिखें और नित्य धूप दीप से पूजन करें। ८०

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५५.

अमोघ बीसा यन्त्र

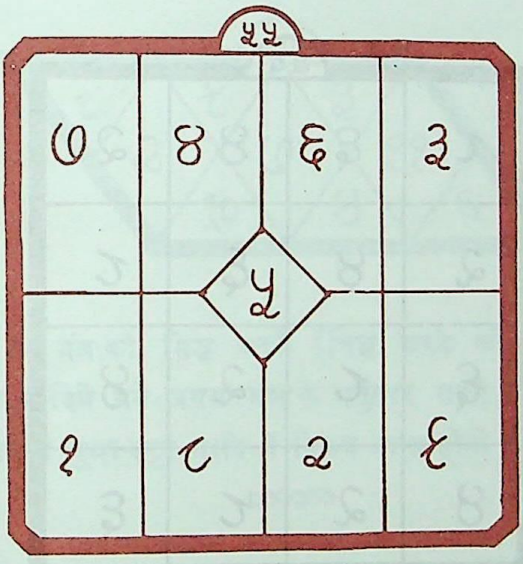

इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर ताबीज बना लें, बालक के गले में बांधने से नजर लगना, भूत–प्रेत बाधा व व अन्य किसी प्रकार का रोग भय नहीं रहता।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५६.

धन प्रकोष्ठ (विघ्नेश) बीसा यन्त्र

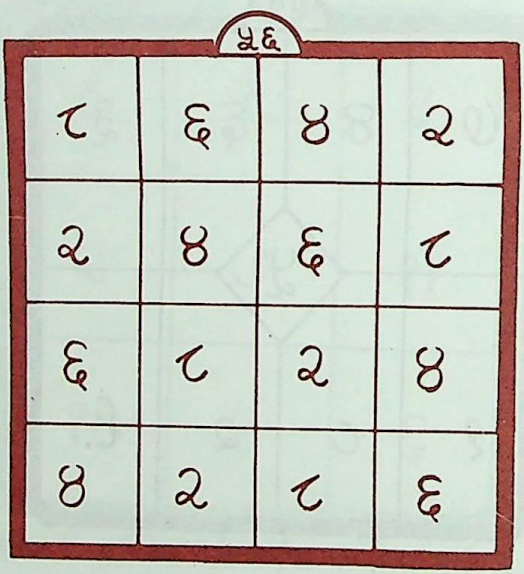

इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर अपनी दाहिनी भुजा पर बांधकर आप जो भी कार्य करना चाहें वह अवश्य सिद्ध होगा। मकान–दुकान की दीवार पर घी सिंदूर से लिखने पर किसी प्रकार का विघ्न नहीं होता। बाग या खेत में गाड़ने से उसमें होने वाले नुकसान जैसे चूहे, चोर, जानवर पक्षी, इत्यादि से तथा ओले व पत्थर आदि का भय नहीं रहता।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५७.

द्यूत (जुआ) बीसा यन्त्र

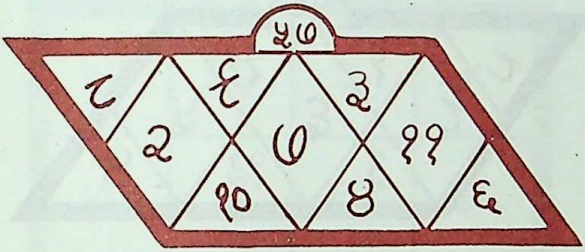

इस यंत्र को सिद्ध करके (सिद्ध करने की विधि इसी पुस्तक में दिये गये प्रथम यंत्र के अनुसार अपने पास रखने से द्यूत अर्थात जुआ-सट्टा आदि में विजय प्राप्त होगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५८.

इष्ट ग्रह कुमार बीसा यन्त्र

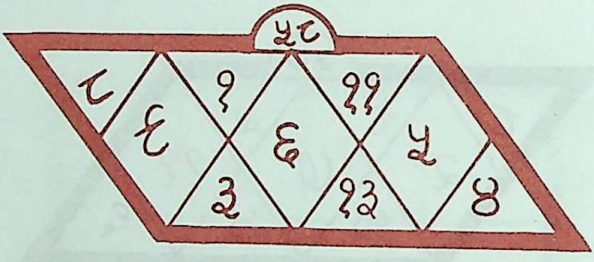

प्रथम प्रयोग—इस यंत्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर जिस ग्रह से पीड़ा या संकट हो उस ग्रह का नाम लिख लें और पृथ्वी में गाड़कर उसके ऊपर उस ग्रह के मंत्र से हवन करके नमस्कार कर दें। इस तरह से कुपित ग्रह शांत होते हैं।

दूसरा प्रयोग—पीपल के पत्ते पर बने इस यंत्र के ऊपर चोरी गई वस्तु का नाम लिखकर घी, दीप, धूप, के सम्मुख रख कर पूजन करके 'हुँ' इस मंत्र की ४० माला का जाप प्रातः काल ब्रह्म मुहर्त में करके इस यंत्र का बहते जल (नदी) में विसर्जन कर दे तो चोरी गई या खोई हुई वस्तु मिल जाती है।

तीसरा प्रयोग—ताम्रपत्र या भोजपत्र पर ये यंत्र बनाकर (ताम्रपत्र या भोजपत्र के अभाव में किसी अच्छे कागज पर बना लें) शीशे में मढ़ा लें और उसको घर में रखें। घी, दीप, धूप से पूजन करें तो सौभाग्य की वृद्धि होकर सभी प्रकार के संकटों से छुटकारा मिल जाता है। भोजपत्र पर लिख कर अपने पास रखने से सदा विजय होती है और वह व्यक्ति सभी का प्रिय बन जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

५६.

स्त्री मोहन यन्त्र

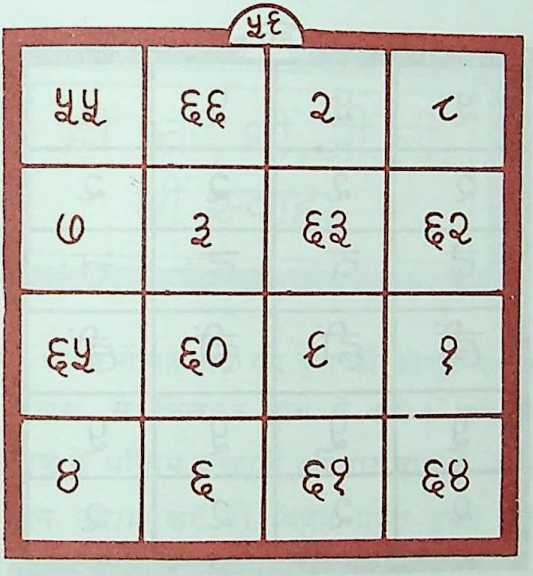

इस यंत्र को पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र पर स्त्री के दूध से लिखकर भुजा पर बांध लेने से स्त्री स्वयं आकर क्षमा मांगती है अथवा विमोहित होकर आती है। यही इस यंत्र का विशेष प्रभाव है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६०.

राज्य मोहन यन्त्र

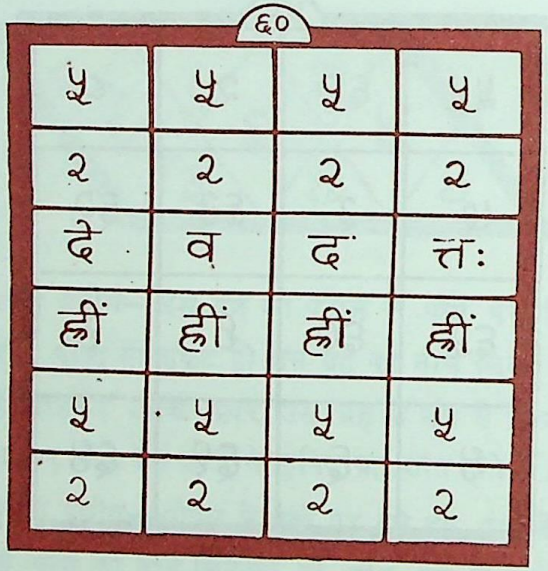

इस यंत्र को अनार की कलम तथा बारूद की स्याही से लिखने का विधान है तत्पश्चात व्याघ्र रोम से बांध लेना चाहिए। इस प्रकार से राज्य मोहन हो। ये मिथ्या नहीं हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६१.

रणक्षेत्र मोहन यन्त्र

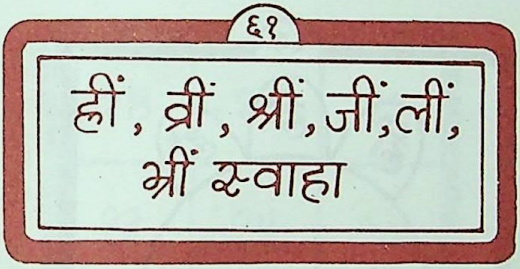

आद्रा नक्षत्र में यह यंत्र वट वृक्ष की कोपल या आम के वृक्ष की कोपल से लिखकर हाथ में बांधे। कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र के अन्तिम चरण में हथियार हाथ में लेकर पुष्य नक्षत्र के दिन संग्राम करें तो विजय प्राप्त होगी और बैरी मोहित हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६२.

सर्वलोक मोहन यन्त्र

इस यंत्र को गोरोचन से बनाकर रविवार के दिन भोज-पत्र पर रखकर सम्मान पूर्वक फल, फूल धूप, दीप आदि से निम्नलिखित मंत्र द्वारा पूजन करें—

'लीलमोहन मंत्रं हूँ मंत्र मित्र उक्त सदा वर मोहाय ।'

इसी बार मंत्र को १०८ बार जप लें तो यन्त्र सिद्ध हो जायेगा। यंत्र को अपने पास पवित्रता पूर्वक रखे तो लोक मोहित हो जायेगा और बन्दी से छूट जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६३.

विजय यन्त्र

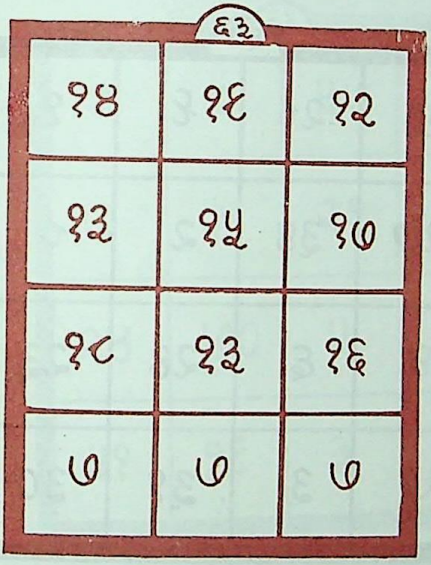

इस यंत्र को शुद्धता पूर्वक भोजपत्र पर लिखना चाहिए। होम करके यंत्र को अपने पास रखने से संग्राम में सफलता मिलती है, स्त्री अपने पास रखेगी तो पुत्रवती होगी बांझ का बाँझपन छूट जायेगा, तथा वैरी मोहित होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६४.

शत्रु वशीकरण यन्त्र

६४

३३	२८	९	१
२७	३४	२	८
४	६	२४	२३
७	३	३१	३०

इस यंत्र को नगाड़े पर लाल स्याही से लिखकर स्याही सूख जाने पर नगाड़े को बजावे तो शत्रु वशीभूत होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६५.

वशीकरण यन्त्र

६५

२	८	५७	२५
७	२	२१	७
२४	७०	५	४
५१	१६	३	६

इस यंत्र को भोजपत्र पर प्याज के रस से लिखकर अपनी बांई भुजा पर बांधकर जो पुरुष जिस स्त्री को देखे वह वशीभूत होगी।

१–स्त्री वशीकरण प्रयोग–

गोरोचन व कुंकुम दोनों को सफेद पत्थर पर घिसकर स्याही बना लें उस स्याही से भोजपत्र पर कमलाकार षटकोण यंत्र बनावें। उसके चारों ओर त्रिभुज बनायें। त्रिभुज की उत्तर-दक्षिण भुजा पर ह्रीं क्रीं शब्द लिख लें। पूर्व पश्चिम में साधक स्त्री का नाम लिखकर (जिसे वश में करना हो) सरैया में रखे। दूसरे दिन सरैया में से निकालकर गन्धक और तगर की धूनी देकर काले कपड़े में सिलकर दाहिनी भुजा पर बांध ले तो स्त्री वशीकरण होगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

२–वेश्या वशीकरण प्रयोग–

विल्व के वृक्ष के नीचे काले मृग की छाल पर बैठकर श्वेत फूलों और विल्व पत्र को निम्न मंत्र पढ़कर अग्नि में आहुति दे–

मंत्र–

ॐ सकल कामिनी आठा बाठा शूल सकाला
पाजल अंचाल ओ३मः यः यः यः ।

जिस वेश्या का ध्यान मन में करे वह वशीभूत हो जायेगी ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६६.

राजा वशीकरण यन्त्र

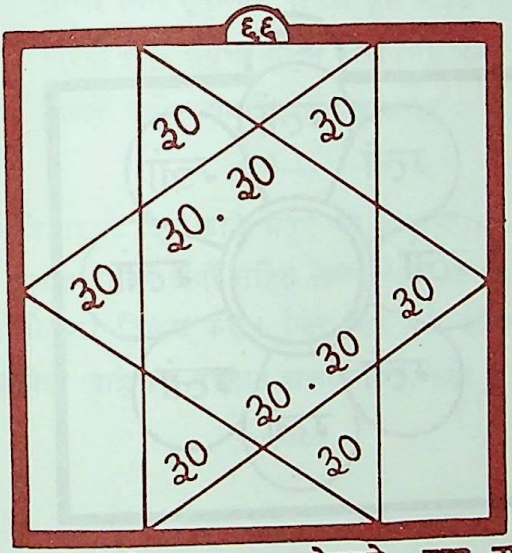

कुंकुम गोरो वनाभ्या भोजपत्रे यस्य नाम ।
लिखित्वा शिखायां बंधयेत् स राजा वश्यं भवति ॥

अर्थात गोरोचन, कुंकुम व कपूर की स्याही बनाकर वट-पत्र पर चमेली की कलम से एक षटकोण यंत्र बनाकर उसके ऊपर गोलचक्र खींच दें। ईशान कोण में तीन, दक्षिण भाग में दो कमलदल स्थापित करें। भीतर साध्य व्यक्ति का नाम लिख दें। कमलदलों में 'ह्रीं' लिखकर पूर्व में कोण 'क्रीं' लिखें और पूर्ण भक्ति भाव से धूप, दीप और नैवेद्य से पूजन करके सफेद वस्त्र धारण कर लें। फिर यथाशक्ति द्विज को भोजन कराके दक्षिणा से तृप्त करें। इस प्रकार सात दिन प्रयोग करने के वाद आठवें दिन त्रिलोह के ताबीज में यंत्र को रखकर भुजा पर बांध लें। इस प्रकार से राजा वशीभूत हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६७.

राजा और स्त्री वशीकरण यन्त्र

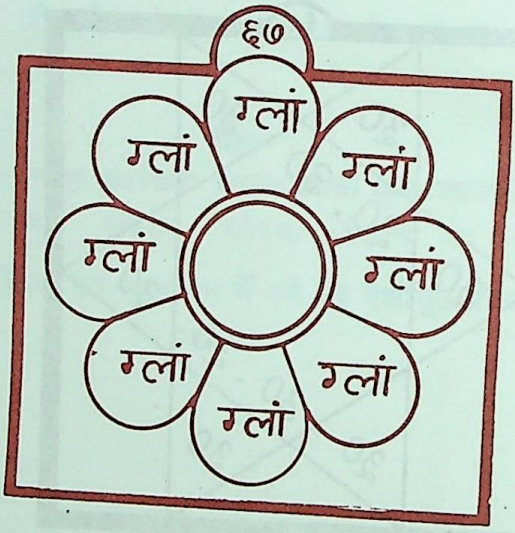

राजा वशीकरण प्रयोग—

कुंकुम गोरोचनाभ्यां भोजपत्र यंत्र मध्ये यस्य नाम।
लिखित मस्तकं धारयेत स राजा वश्यं भवति ॥

अर्थ—

कुंकुम, गोरोचन से भोजपत्र पर इस यंत्र को बनायें और यंत्र के मध्य में जिसको वश में करना हो उसका नाम लिख लें तत्पश्चात इस यंत्र को मस्तक पर धारण कर लेने से राजा का वशीकरण हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

स्त्री वशीकरण प्रयोग—

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्ण धतूर पुष्पकम् ।
शाखा लता गृहीत्वा सुफलं फूलं तथैव च ॥
पिश्वा कर्पूर संयुक्त कुंकुम गोरोचनम् खनन् ।
तिलके स्त्री वशयाति यदि साक्षावरूधन्ती ॥

अर्थ—

रविवार के दिन काले धतूरे के फूल, पत्ते, जड़, शाखा सहित अर्थात पांचों अंगों सहित लेकर केसर गोरोचन व रोली के साथ पीसकर तिलक करे। फिर जिस स्त्री को देखे वह वश में हो जायेगी चाहे वह साक्षात अरून्धती ही क्यों न हो।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६८.

राजा को प्रसन्न करने का यंत्र

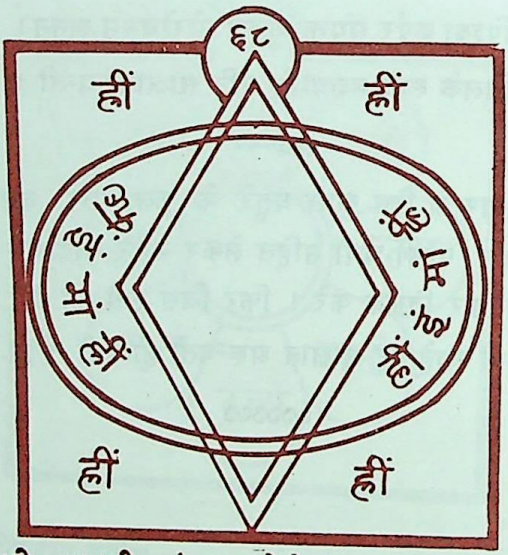

श्री भवानी कुंकुम गोरोचनाभ्यां भुजपत्रे।
यस्य नाम यंत्रेम् शुक्र सम राजा प्रसन्नम् भवति ॥

अर्थ—

कुंकुम व गोरोचन से यंत्र को भोजपत्र पर बनाकर जिसको प्रसन्न करना हो उसका नाम यंत्र के मध्य में लिखें ऐसा करने से शुक्र के समान तेजस्वी राजा भी प्रसन्न हो जाया करते हैं।

पति को प्रसन्न करने के लिए प्रयोग —

गोलाकार चक्र में गोरोचन से भोजपत्र पर अष्टदल बनाकर चारों ओर दिशाओं के नाम लिखकर मध्य में साध्य

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

व्यक्ति का नाम लिखें। तीन दिन व तीन रात गंधादि से पूजन करें चौथे दिन पूजा करके निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

अनंग अनंग बललने देबी स्त्वयम प्रिय।
नाम्मितः एवं नहवम्यं कुरू त्वस्मा बल्लभे ॥

इसके बाद यंत्र को ताबीज में मढ़ाकर कंठ में धारण करे तो स्त्री का पति उससे प्रसन्न रहेगा।

(१) चिन्ता निवारण लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्रः—
ॐ श्रीं ह्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः।

(२) पुत्र, कन्या के विवाह में यदि कठिनाई उपस्थित होता हो या विघ्न हो तो श्रीकात्यायनी देवी का पूजन विधि से करावें।

स्थायी धनस्थिति मन्त्रः—ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः ॥

प्रसवमयजलमन्त्र—आकाश टले पर्वत टले राम लक्ष्मण दुई लाचा सुन कीकर कोका को की रिवत कुण्डली वसिया बाहरी हव असिया सिद्ध गुरु कालिका चण्डी रवरें शीघ्र करिया भूमें वे पड़े ॥ ताजा शुद्ध जल को सात बार मन्त्र पढ़कर परोरने के पश्चात् पिलाने का विधान है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६९.

सर्वप्रजा व शत्रु वशीकरण यंत्र

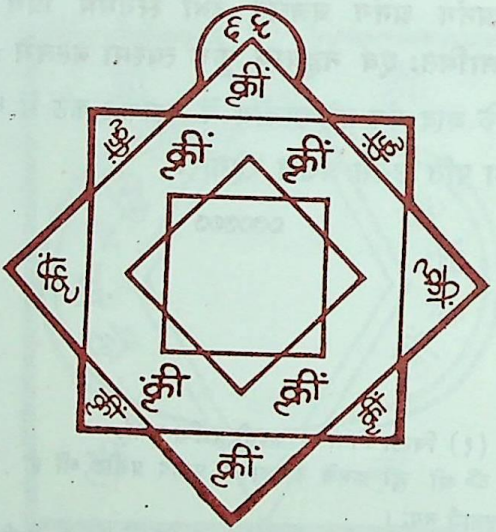

भोजतपत्र पर गोरोचन की स्याही से पहले चतुष्कोण बनाले, फिर उसमें रेखा के भीतर ही लिखकर क्रमानुसार १२ कोणों में शत्रु के नाम का एक-एक अक्षर लिखें। जितने अक्षर नाम के हों प्रत्येक के आगे 'ह्रीं' तथा अन्त में 'ई' लिखें। फिर पीपल के वृक्ष के नीचे की धूल को लाकर शत्रु की मूर्ति बना लें। मूर्ति के हृदय भाग में यंत्र को रखकर गंधादि से पूजन करके अमावस्या की रात में चूल्हे की करवट में गाड़ दें। उस चूल्हे पर अज के रूधिर में भात पकायें। उस भात को दिकपालों को समर्पित करें। शेष भात में घी और लाल फूल मिलाकर काले कौवे और काले कुत्ते को खिला दें।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

तब चूल्हे की करवट में दबे हुए यंत्र को निकालकर काले कपड़े में सिलवाकर भुजा पर बांधे तो शत्रु वशीभूत हो जायेगा। इस यंत्र को कालनल यंत्र भी कहा गया है।

धनधान्य पूर्णकर अन्नपूर्णा का मन्त्र

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा, क्लीं श्रीं ह्रीं ॐ—इस मन्त्र के प्रभाव से धनधान्य पूर्ण रहता है। २ लक्ष जप, तिल, लाल धान की लाई, खील, दाख, गोघृत से हवन करना चाहिये। २ लक्ष का पुरश्चरण। क्षेत्र के भीतर यंत्र या तावीज गाड़ देते हैं, उससे धान्य बढ़ता है।

आपदुद्धारक बटुक भैरव मन्त्र

ॐ नमो भगवते वटुकाय आपदुद्धारकाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं। भात, घी, सरसो, चन्दनचूरा आदि से हवन कराना चाहिए।

सर्व सिद्धप्रद हनुमानजी का अष्टादशाक्षर मन्त्र

ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महबलाय स्वाहा। खीर, दाल, ऊख रस, पलास, पीपल, खैर की लकड़ी से हवन। १ लक्ष का पुरश्चरण। भेद यह है कि कामना के अनुकूल हवन वस्तु होनी चाहिये।

बिच्छू झारने का मन्त्र

ॐ छः फट् स्वाहा। जल अभिमन्त्रित करके देना। आदित्य-रथबेगन विष्णुबाणबलेन च श्री तार्क्ष्य पक्ष निपातेन भूम्यां गच्छ महाविष। (तार्क्ष्य = गरुड़)।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७०.

स्त्री वशीकरण यंत्र

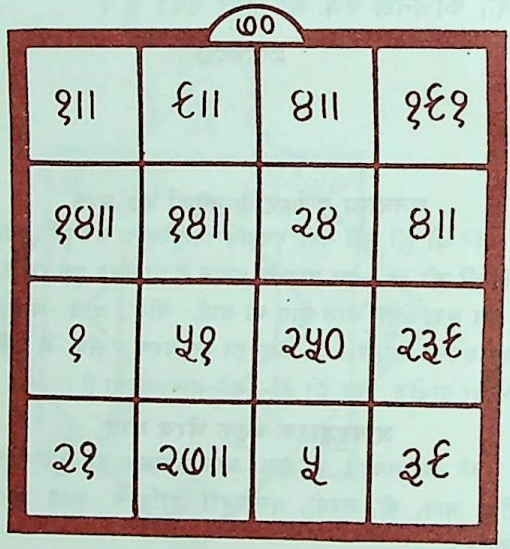

इस यंत्र को पुष्य नक्षत्र में शनिवार के दिन पाठशानिकी की जड़ से लपेटकर तांबीज में रखलें और कंठ अथवा भुजा पर धारण करने से स्त्रीका वशीकरण हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७१.

वाणिज्यार्थ वशीकरण यंत्र

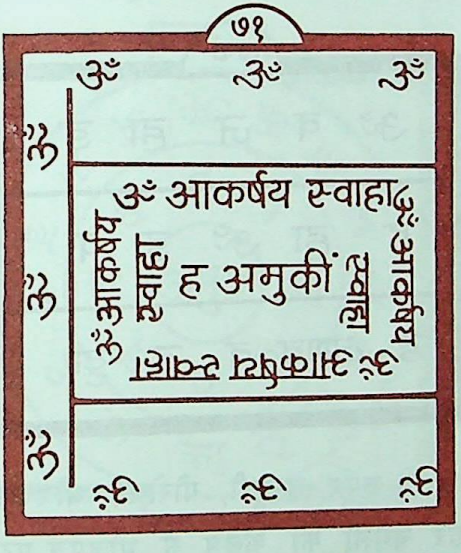

इस यंत्र को बनाने के लिए अपने रूधिर में गोरोचन मिलाकर भोज़पत्र पर लिखें और सूख जाने पर सुगंधित द्रव्यों से पूजन करके एकांत में रख दें। 'ॐ आकर्षण स्वाहा' ये मंत्र जपता रहे। जब यंत्र सिद्ध होगा तो वाणिज्य वशीभूत हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७२.

जग वशीकरण यंत्र

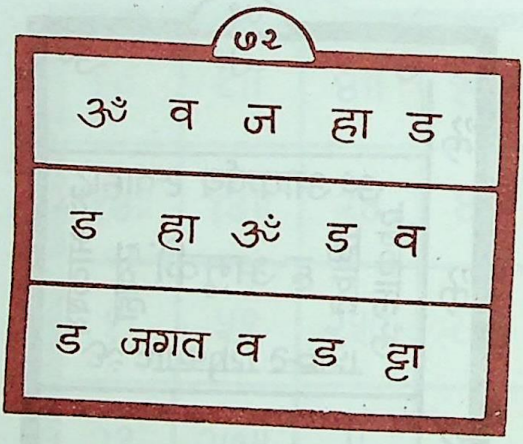

इस यंत्र को कर्पूर, कस्तूरी, गोरोचन और चन्दन की स्याही बनाकर चमेली को कलम से भोजपत्र पर लिखकर तीन दिन तक सुगन्धित द्रव्यों से पूजन करके ताबीज में रख कर भुजा पर बांध लें तो जिसके पास भी जायें वह वशीभूत हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७३.

राजा वशीकरण यन्त्र

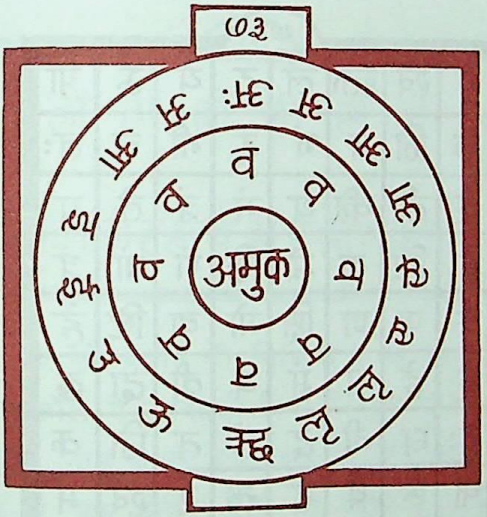

यह यंत्र बनाने के लिए कांसे के पत्र को मांजकर चमेली की लकड़ी की कलम बनाकर गोरोचन और चन्दन की मिश्रित स्याही से बनाये फिर जिसे वश में करना हो उसका नाम लिखें और उस नाम के चारों ओर एक गोलाकार (वृत्त) खींच दें। जिस प्रकार से अकारादि क्रम से सोलह स्वर यंत्र में दिखायें गये हैं वह भी लिखें ओर यंत्र पूर्णरूप से बन जाये तो सफेद कमल के फूलों से यंत्र की भक्ति पूर्वक पूजा करें। सुगन्धित द्रव्य समक्ष रखें ओर एक सफेद कपड़े से यंत्र को ढक दें। पूजा करने के बाद ये महामोहन यंत्र तैयार हो जायेगा। सोने या चांदी की ताबीज में मढ़ाकर गलें में लटकायें या भुजा पर बांधे तो वशीकरण होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७४.

द्यूत (जुआ) वशीकरण यंत्र

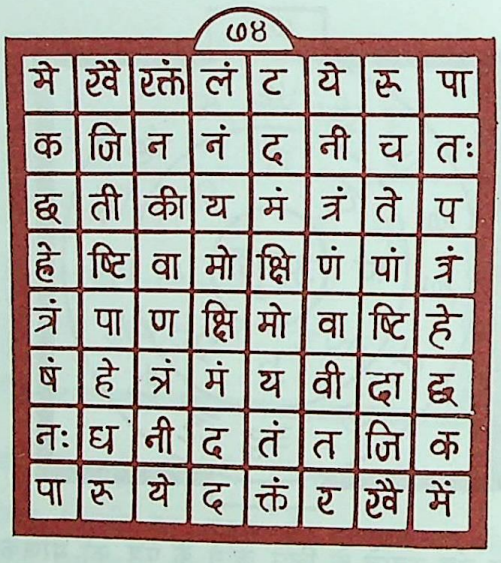

यह यंत्र दीपावली की अर्द्धरात्रि में अरण्डी के पत्ते पर कौआ के पंख से गोरोचन व रोली की स्याही से लिखें। यह चौंसठ कोने का यंत्र है, अतः पवित्र होकर (स्नानादि करके) इसे बनायें। इस यंत्र में बत्तीस अक्षर के मंत्र को अनुलोम और प्रतिलोम की रीति मे लिखें।

मन्त्र—

मेखैं रक्तं दये रू पाक जिननेदनी चतः छः
दाणीय मैत्रे तेब हिष्ठवा लोक्षिण पात्रंम् ।।

इस प्रकार से यह यंत्र बनाकर पूजन करके दाहिनी भुजा पर बांध कर जुआ खेले तो निश्चित ही जीत होगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७५.

कालाकल स्वाती वशीकरण यंत्र

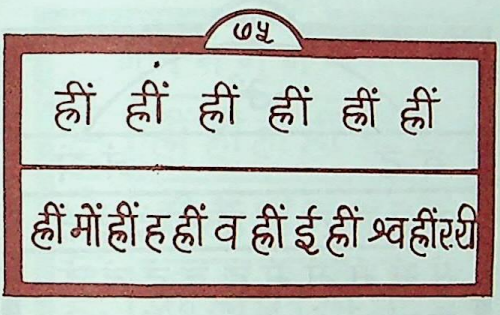

इस यंत्र को बनाने की विधि ये है कि एक तीन रेखाओं से युक्त चतुष्कोण में उतना ही लिखें जितना कि साध्य के नाम में अक्षर हों। नाम के हर एक अक्षर को 'ह्रीं' के गर्भ में लिखे और अन्त में 'एक ईश्वर' ऐसा भी लिख दें। यह यंत्र भी गोरोचन से भोजपत्र पर लिखा जाता है। इसे बनाकर एक चांदी की प्रतिमा के हृदय भाग पर रखकर उस मूर्ति का विधिवत पूजन कर लें। फिर चतुर्दशी की रात्रि में चूल्हे की जमीन को खोदकर उसमें प्रतिमा को स्थापित करें। स्थापित करते समय निम्न मंत्र का पाठ करता रहे—

'ॐ महाकालाय स्वाहा'

इस मंत्र को १००० आहुति पूरी हो जायें तो कैसा भी हठी स्वामी क्यों न हो वह सम्मोहित हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७६.

अथ वशीकरण यंत्र

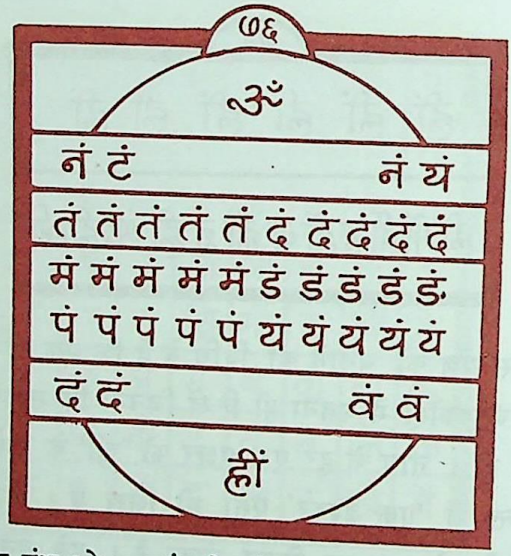

इस यंत्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर विधिवत पूजन करे और मंगलवार के दिन तावीज में रखकर भुजा पर बांधे तो जो भी देखेगा वह वश में होगा।

इस यंत्र को पान के पत्ते पर चूने से लिखें और निम्न मंत्र पढ़कर पान को चबायें तो जो भी व्यक्ति पान खाने वाले को देखेगा उसका वशीकरण होगा।

मंत्र—

"हरे पान चिकनी सुपारी श्वेत चूना निधि मोहिले।
पान हाथ में लेय पेय पेठ पेठ पेठ रस॥
लेय श्री नरसिंह वीर तुम्हारी शक्ति।
मेरी भक्ति फुरा मंत्र ईश्वरो वाचा॥" ∞

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७७.

पति वशीकरण यंत्र

एक बड़े आकार का भोजपत्र लें जो बिल्कुल साफ हो। उस पर अनामिका उंगली का रक्त, हाथी का मद, चावल और गोरोचन इस सबको मिलाकर चमेली की लकड़ी की कलम से यंत्र को लिखें। फिर खेत की काली मिट्टी से गणेश जी की मूर्ति बनायें और मूर्ति के उदर पर इस यंत्र को स्थापित करें। धूप-दीप नेवैद्य आदि से और फूल माला पहनाकर मूर्ति का पूजन करके नेवैद्य लगाकर इस मंत्र को पढ़ें—

मंत्र

देव देव गणाध्यक्ष सुरासुर नमस्कृत।
देववत्त महावश्य यावज्जव कुरु प्रभो॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इस मंत्र को तीन बार पढ़कर एक हाथ गहरा गड्ढ़ा खोदकर उसमें उस मूर्ति को रख दें और ऊपर से मिट्टी डालकर बंद कर दें। इस प्रकार से गणेश जी की कृपा से स्त्री का पति जन्म जन्मान्तर तक वश में होकर रहेगा।

मन्त्र-शक्ति

अथ मृत्युञ्जय मन्त्रः—ॐ ह्रौं ॐजूंसः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवस्वरों जूं सः ह्रौं ॐ।

पुराणोक्तमृत्युञ्जय मन्त्रः—'मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे। अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः''।

ॐ ह्रौं जूं सः त्र्यक्षरमन्त्र है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७८.

वशीकरण यंत्र

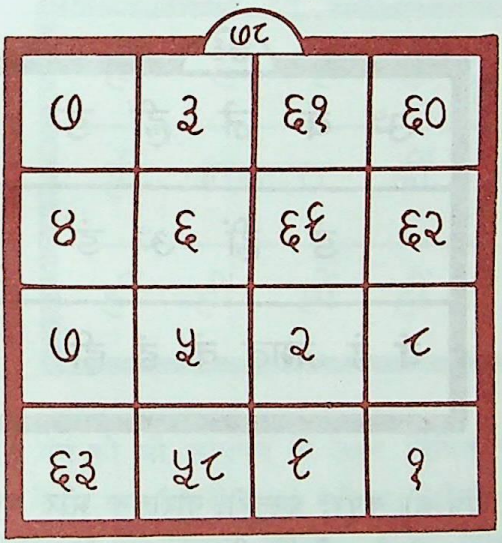

इस यन्त्र को योनि के रक्त से अपनी हथेली पर लिखकर जिसे दिखायें वह वशीभूत होगा ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

७९.

जग वशीकरण यंत्र

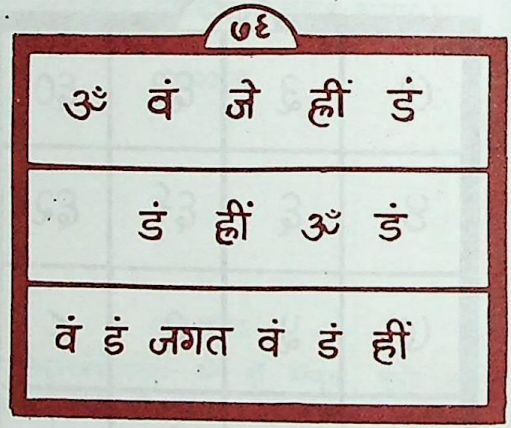

इस यंत्र को कपूर, कस्तूरी, गोरोचन और चन्दन की मिली जुली स्याही से चमेली की कलम द्वारा भोजपत्र पर लिखें। तीन दिन तक विधिवत पूजा क़रके ताबीज में मढ़ाकर बांह पर बांधे तो जिसके पास भी वह व्यक्ति जायेगा देखने वाला वश में हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८०.

क्रोधित व्यक्ति को वश में करने का यंत्र

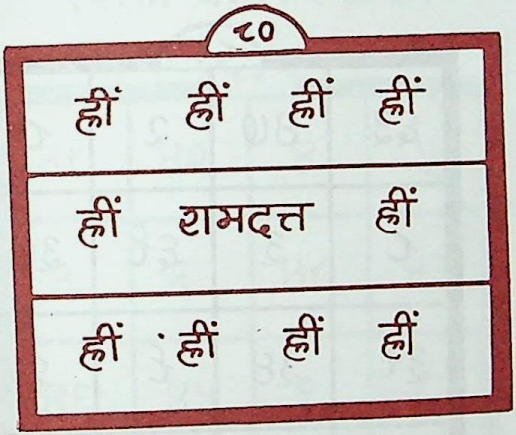

इस यंत्र को भी भोजपत्र के ऊपर चित्रित करना है। गोरोचन, केशर व चन्दन में अपनी कनिष्का (छोटी उंगली) का रूधिर मिलाकर इसे बनाना चाहिए। अनेक प्रकार के पुष्प, मिठाई और माँस से इस यन्त्र का पूजन किया जाना चाहिए। फिर विधिवत ब्राह्मण को भोजन कराये। ब्राह्मण, गुरु और योगी जनों को नमस्कार करके मुट्ठी में इस यंत्र को लेकर राजा के समक्ष भी जाये तो उसका कोध जाता रहेगा। किसी क्रोधित व्यक्ति को वश में करना हो तो उसका यही उपाय है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८१.

पुरुष वशीकरण यंत्र

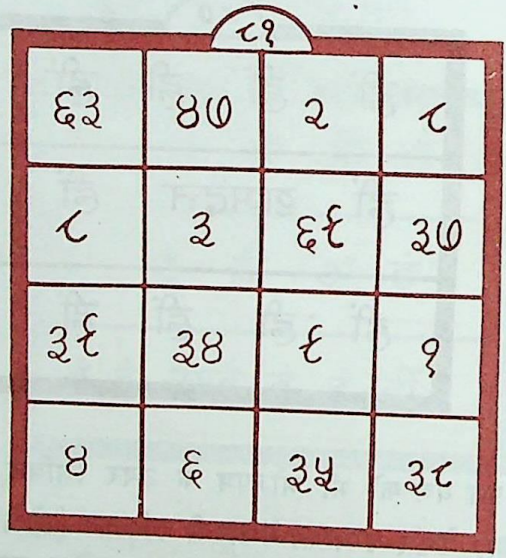

इस यंत्र को रोटी पर प्याज के रस से लिख लें। फिर इस रोटी को जो भी स्त्री जिस पुरुष को खिलायेगी वह वश में हो जायेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८२.

स्वामी वशीकरण यंत्र

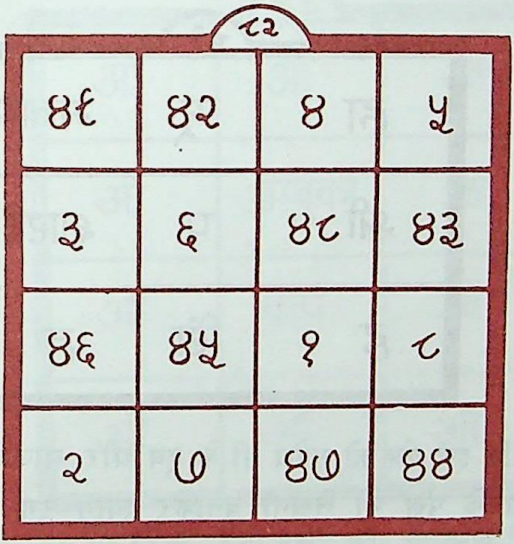

इस यंत्र को किसी भी शुभ मुहर्त में भोजपत्र पर या सफेद कागज पर बनाकर अपने पास रख ले। फिर नौकरी पर पर जाये तो मालिक प्रसन्न रहेगा। यह यंत्र लिखते समय निम्ननिखित मंत्र को पांच बार अवश्य जप ले—

मंत्र

ॐ तालुम्बरी दह दह दरै माल भाल ग्रां ग्रां।
हुं हुं हुं हे हे काल कमानि कोट कांटिया ॐ ठः ठः॥

दूसरा प्रयोग—उक्त मंत्र को पांच बार पढ़ते हुए ही कोंचनी के फूल और प्रातः काल में गौ के दूध को खीर से अग्नि में आहुति दें तो चित्त में जिसको वश में करना हो उसका ध्यान धरे तो तत्काल सिद्धि होती है। ∞∞∞

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८३.

शिवकृपा वशीकरण यंत्र

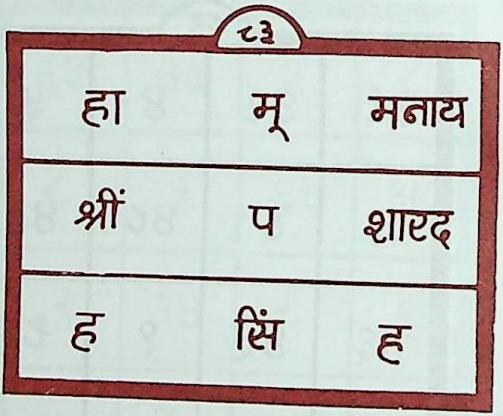

यदि इस यंत्र को सफेद गौ के दूध और लाजवंती के रस से सारस के पंख की लेखनी बनाकर श्याम रंग के पत्ते पर लिखकर प्रदोष व्रत करके १२ महीने तक लगातार शिव जी (शिवलिंग) को चढ़ावे फिर जब सिद्ध हुआ जाने तो यंत्र को मढ़वाकर भुजा पर बाँधकर राज दरबार में उपस्थित होने से राजा वश में रहेगा। साधक को यंत्र की सिद्धि का पता स्वप्न में या भगवान शंकर की कृपा से अन्य किसी भी ढंग से चल जायेगा। सन्देह न करे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८४.

स्त्री वशीकरण यंत्र (विशिष्ट यंत्र)

इस यंत्र को किसी ऊनी वस्त्र पर कमलाक्ष की लेखनी और अष्टगंध से तैयार करे। मंगलवार या रविवार को पूजन करके खीर की ११ आहुति अग्नि में देवे और 'अमुकी वश मानय' यह मन्त्र प्रत्येक आहुति में पढ़ें। आने वाली एकादशी तक इसका प्रयोग करता रहे। इस प्रकार से एकादशी तक करने से वह स्त्री जिसका नाम आहुति के समय उच्चारण किया गया है वश में हो जायेगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८५.

वशीकरण यंत्र (विशिष्ट सिद्ध यंत्र)

जैसा की यंत्र की आकृति से भी स्पष्ट है कि यह यन्त्र विशिष्ट श्रेणी का यंत्र है।

विधि

कुंकुम गोरोचनाभ्यां भोजपत्रे यंत्र मध्ये
यस्य नाम लिखित्वा कण्ठे धारयेत स वस्यं भवत् नित्यमेव।

अर्थात कुंकुम गोरोचन को स्याही से भोजपत्र पर लिखकर यंत्र के मध्य भाग में जिसका वशीकरण करना हो उसका नाम लिखकर कण्ठ में यन्त्र को धारण करले तो वह वशीभूत होगा।

स्त्री वशीकरण तन्त्र –

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पुष्य नक्षत्र में धोबी के पैर की धूल लाकर जिस स्त्री के सिर पर संध्या के समय रविवार के दिन डाले तो वह वश में होगी।

स्त्री वशीकरण तन्त्र (द्वितीय)

चिता की राख, कुट, बच, तगर और कुंकुम को पीस कर स्त्री के सिर और शेष बचे हुए को पुरुष के पांव तले डाले तो उस पुरुष की वह स्त्री आजन्म दासी बनी रहेगी।

यह दोंनो सिद्ध टोटके हैं। कोई भी व्यक्ति श्रद्धा पूर्वक नियमानुसार करे तो सफलता अवश्य मिलती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८६.

सर्वं वशीकरण यंत्र

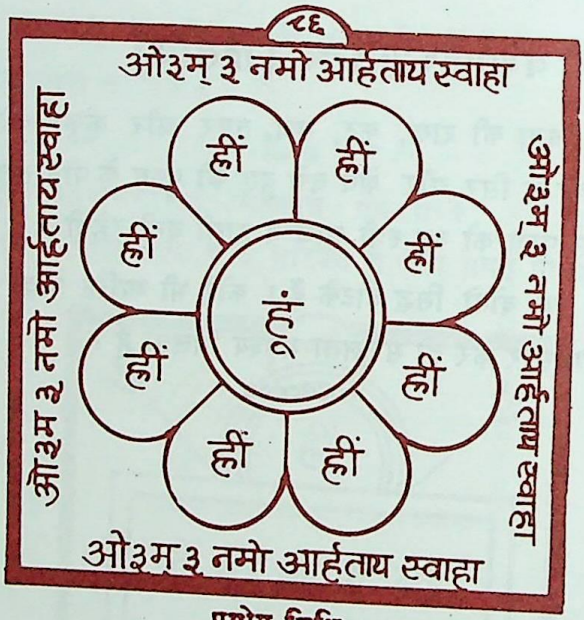

प्रयोग विधि—

चिन्तामणि यन्त्रस्य एद्भावति कल्पोक्तं ।
या पूज्यपति सः युक्ति बभाभक्ति तस्य सर्वं ॥
बतयं यान्ति लक्ष्य अष्टदलेनु रीं क्रीं श्रीं ग्रीह्रीं ।
ब्लक्लोयु इति ॐ आर्हितारो श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहः ॥

तन्त्र ग्रन्थों में इसकी यही विधि बताई गई है। साधक को चाहिए कि समझ कर विधिपूर्वक सिद्धि करने का प्रयत्न करे। मुझे यह यन्त्र बनाकर पवित्रता से अपने पास रख लेने से ही सर्वप्रकार के वशीकरण का अनुभव हुआ है। इसलिए इसे यहां प्रकाशित किया गया है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८७.

यात्रा स्तम्भन यंत्र

अथाग्रे सम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्ताम्भनाभिदम् ।
यस्य साधन मंत्रेन सिद्धि करतले भवेत् ॥

अब स्तम्भन का वर्णन करते हैं जिसके साधन से सभी सिद्धियां हस्तगत हो जाती हैं। ऐसा शास्त्र का उल्लेख है।

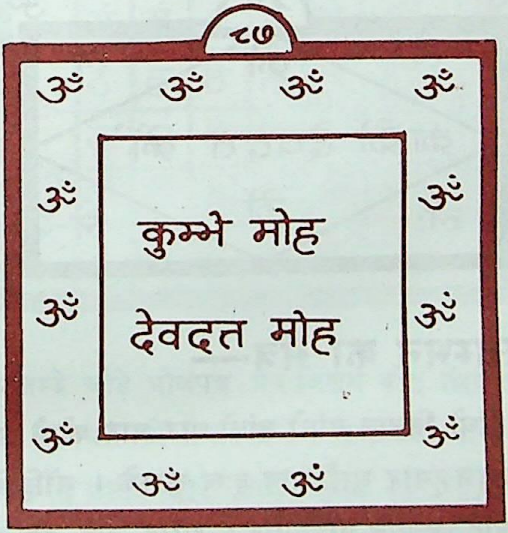

इस यंत्र को पत्थर के टुकड़े पर हरताल कुंकुम मैनसिल और गोरोचन से लिखकर फूलों से पूजा करके धूप–दीप नैवेद्य दिखाकर यंत्र को बराबर की भूमि में गाड़ दे तो जिस व्यक्ति का नाम आप 'देवदत्त' के स्थान पर लिखेंगें उसकी यात्रा का स्तम्भन होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८८.

अग्नि स्तम्भन यंत्र

इस यंत्र को भोजपत्र पर केशर और हल्दी से लिखकर विधिवत पूजन करें। पूजन के पश्चात ब्राह्मण को भोजन करा दें। तत्पश्चात यंत्र को पृथ्वी में गाड़कर उस पर जल की धारा छोड़े तो अग्नि का स्तम्भन हो जायेगा।

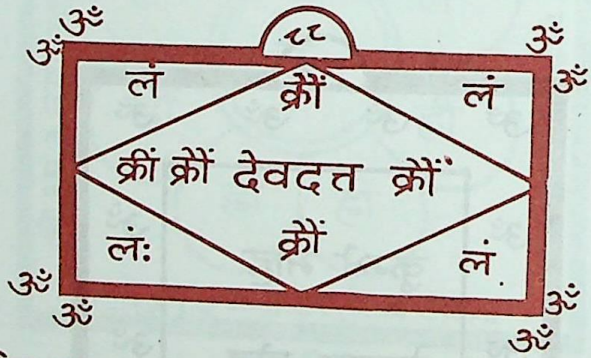

अग्नि स्तम्भन का मंत्र—

अग्नि बांधो विज्ञान बांधो बांधो घाट घाट कोठी सदर बांधो आज हमार भाई आन दुःख झझके। मोंहि देख बुझै जाई हनुमत पानी होई। अग्नि भवै तक भयै कम क्षमति हाथी होय सदन बांधो नारायण साथी मेरी शक्ति गुरू की शक्ति मन्त्र ईश्वरो वाच॥

विश्वास के साथ इस मंत्र का जप करने भी अग्नि स्तम्भन होगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

८९.

बुद्धि स्तम्भन यंत्र

एक लम्बे चौड़े भोजपत्र पर जिसमें कोई छिद्र इत्यादि न हो उस पर इस यंत्र को तैयार करें। यंत्र बन जाने पर पूजन करें और मंत्र से प्रातः और सायं १०८ बार तीन दिन तक पाठ करें तो इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु की गति–मति, बुद्धि बिल्कुल नष्ट हो जायेगी। शत्रु ऐसी दशा को प्राप्त होगा कि जैसे मूर्ख और गूंगा हो।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अग्नि और बुद्धि स्तम्भन मंत्र—

अज्ञान बांधो विज्ञान बांधो घोड़ा घाट
काट मसन्दर बाँधो मत्त हमार भाई
आने दे के झझक बोदि बुझाई
हनुमत बांधो पानी होई जाई
अग्नि के भवेत भने जसमत हाथी होई
है सुंदर बांधो नारायण साखी मेरी
भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाच ॥

बुद्धि स्तम्भन मंत्र (नं० २)—

ओम मत्त के ढाटे छय घने मेकटाय।
भल लोयसी आलिम्ब सख मुदीयते शतक ॥
बोले मंदी ह्रीं फट ॐ ह्रीं महिष वाहिनी।
स्तम्भन मोहन भेदये अग्नि (बुद्धि) स्तम्भय ठः ठः ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६०.

दिव्य स्तम्भन यंत्र

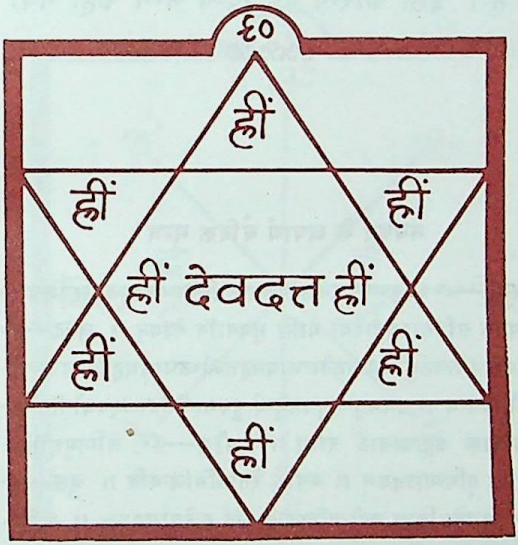

इस यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर गोरोचन तथा कुंकुम से लिखकर शराब के सम्पुट में रखकर धूप, दीप और नैवेद्य से पूजा करे। दूसरे दिन नित्यकर्म के बाद इस यन्त्र को अपनी शिखा में बांधे तो दिव्य स्तम्भन होगा। शिखा में बांधते समय इस मन्त्र जाप करता जाये—

"ॐ नमो नमो ह्रीं ह्रीं अग्नि रूपाय स्तम्भनं मम शरीरे स्वाहा॥"

द्वितीय प्रयोग—

यह दिव्य स्तम्भन मन्त्र को दीपावली की रात को १००० बार जप करके सिद्ध करले तो जब भी किसी प्रकार

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

का स्तम्भन प्रयोग करना हो तो १०८ बार मन्त्र जप करलें। अग्नि स्तम्भन से लेकर अन्य सभी प्रकार के स्तम्भन में प्रयोग कर सकते हैं। इसी कारण यह दिव्य मन्त्र कहा गया है।

नवग्रह के जपार्थ वैदिक मन्त्र

सूर्य—ॐ आकृष्णेन रजसावर्तमानोनिवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ॥ हिरण्मयेन सवितारथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन् ॥ चन्द्र—ॐ इमन्देवाअसपत्नꣳसुवध्वं महतेक्षत्रायमहतज्यैष्ठयायमहतेजानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इमममुष्यपुत्रममुष्यं पुत्रमस्यै विशऽएषवोमीराजासोमोऽस्माकं ब्रह्मणानाꣳ राजा ॥ भौम—ॐ अग्निमूर्धादिव. ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ॥ अपाꣳ रेताꣳसिजिन्वति ॥ बुध—ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेप्रतिजा गृहीत्वमिष्टापूतसꣳ सृजेयामयञ्च ॥ अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्विश्वेदेवा यजमानञ्चसीदत ॥ गुरु—बृहस्पतेऽअतियदर्योऽजर्हाद्युमद्विमाविक्रतुमज्जनेषु ॥ यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ शुक्र—ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपिवत्क्षत्र पयः ॥ सोमं प्रजापतिः । ऋतेनसत्यमिन्द्रिय विपानꣳ शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतंमधु ॥ शनि—ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ राहु—ॐ कयानिश्चत्रऽआभूवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्टयावृता ॥ केतु—ॐ केतुकृण्वन्नकेतवेपेशोमर्याऽपेशसे ॥ समुषद्भिरजायथाः ॥ इति ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६१.

मुख स्तम्भन यंत्र

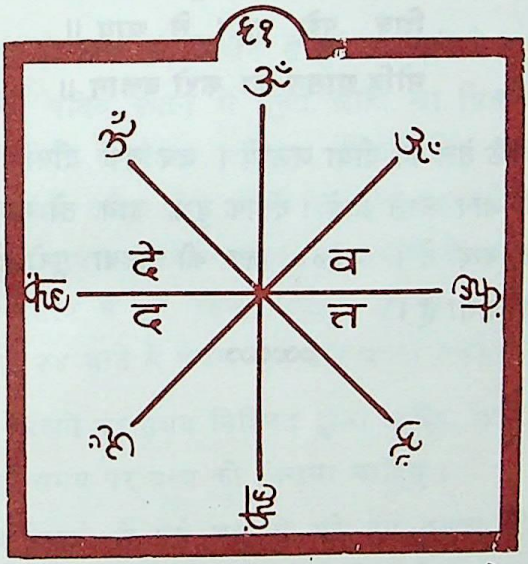

इस यन्त्र को अपने मकान की दीवार पर सफेद खल से लिख लें। यन्त्र के बीच में शत्रु का नाम लिख दें। सफेद फूल से यन्त्र की पूजा करके सफेद कपड़े से ढक दें। एक या दो ब्राह्मणों को भोजन जरूर करावे। ब्राह्मण या योगीजन अथवा साधु के भोजन से तृप्त होते ही शत्रु का मुख स्तम्भित हो जायेगा।

स्तम्भन मंत्र—

"ओ३म् ह्रीं ह्रीं चंचल स्वाहा"

इस महामन्त्र को २५०० बार जप करके सिद्ध कर लें। अपने लिए जब आसन बिछायें तो निम्न मन्त्र पढ़ें—

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

आधा आसन मैं करूँ बखान ।
तब पीछे करो व्याख्यान ॥
जब आसन विष्णु बिछाये ।
शिव पूछे ब्रह्मा से आय ॥
मोहि आसन का करो बखान ॥

मीठे तेल का दीया जलायें । जब तक दीया जलता रहे मन्त्र का जाप करते जायें । दीपक बुझ जाये तो मन्त्र का जाप भी बन्द कर दें । २५०० जप की संख्या पूरी हो जाने पर सिद्ध हो जाता है ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सिद्ध बीसा यन्त्र

यन्त्र लेखन विधि—

किसी भी यन्त्र को लिखने से पूर्व स्नानादि से शरीर को पवित्र करके, पवित्र स्थान में मुहूर्त आदि का विचार करके कूर्मासन की विधि से बैठना चाहिए। जितने दिन तक यन्त्र-साधन का कार्य करे, उतने दिनों तक पूर्ण ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए, सत्य भाषण करना चाहिए, हर प्रकार की बुराई, पाप कर्म तथा असत्य से दूर रहना चाहिए, हल्का भोजन करना चाहिए तथा २४ घन्टे में केवल एक बार खाना चाहिए।

यंत्र लिखने का समय निश्चित होना चाहिए अर्थात प्रति-दिन एक ही समय पर यन्त्र को लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने से पूर्व जल से भरे हुए कलश को अपने सामने स्थापित कर लेना चाहिए तथा दिन हो अथवा रात्रि, दीपक जलाकर, उसके सामने ही यंत्र को लिखना चाहिए।

यदि एक से अधिक यंत्र लिखने का विचार हो, अर्थात प्रत्येक को कई बार लिखने का निश्चय किया हो, वहां सबसे अन्तिम बार लिखे जाने वाले यन्त्र का विधिवत पूजन करना चाहिए। जहां एक ही यंत्र लिखने का विचार हो, वहां पहले ही यंत्र का विधिवत यंत्र पूजन करना चाहिए। पूजन में धूप, दीप नैवेद्य, पुष्प आदि का होना आवश्यक है।

मित्रता के लिए यंत्र लिखना हो, तो मुँह में मिश्री अथवा गाय का घी रख कर लिखना चाहिए तथा अगर तगर, चन्दन

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

चूरा, गूगल, मिश्री, गाय का घी, शहद, कपूर, दालचीनी, जायफल और मेवा इन सबको एकत्र करके धूप देनी चाहिए।

मारण-उच्चाटन के लिए यंत्र लिखना हो तो मुँह में मोम रख लेना चाहिए तथा उसी (मोम) की धूनी देनी चाहिए। यदि स्वप्न बन्द करने के लिए लिखना हो तो मुँह में केवल नमक रखना चाहिए तथा उसी की धूनी देनी चाहिए।

नोट—

यंत्र सिद्धि करने वाले को पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रती तथा साधना काल में मौनव्रत रखना चाहिए। इसके साथ ही मनसा, वाचा, कर्मणा शुद्ध, परहित के कल्याण की दृष्टि से करना चाहिए। जब तक योग्य ज्ञाता से क्रियात्मक विधि न जानी जाय, सिद्धि में संदेह रहता है।

बीसा यन्त्र का मूल मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं मम सर्व वांछितं देही देही स्वाहा ॥

बीसा के यंत्र का विधान

(१) ॐ ह्रीं श्रीं विंशति महेन्द्राय स्वाहा ॥

दांये हाथ पर ३ उंगलियों में अष्टगंध से बीसा मंत्र लिखना और प्रातःकाल पुष्य नक्षत्र के तृतीय चरण में शुरु करना है। पीली वस्तु का भोजन करना चाहिए। तीन दिन में १२००० मंत्रों का जाप करे तो सिद्ध होगा।

(२) ओ३म् ह्रीं विंशति रुद्रदेवताये स्वाहा ॥

बाएं हाथ पर तीन अंगुलियों पर अष्टगंध से यह मंत्र

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

लिखे और पुष्य नक्षत्र के तीसरे चरण में शुरू करे। इसमें लाल वस्तु का भोजन करना चाहिए पांच दिन में २१००० मंत्र जाप से इसको सिद्धि हो जाती है।

(३) ओ३म् ह्रीं ह्री श्रीं परमो सहिताय स्वाहा ॥

इस मंत्र का विधान भी पूर्वोक्त प्रकार से ही है। सात दिन में २३००० मत्र जाप से सिद्धि होती है।

(४) ओ३म् ह्रीं क्लीं कलि कुण्ड स्वामिने नमः ॥

इस मंत्र का भी उपर्युक्त मंत्रों की भाँति विधान है। मगर छः दिन में ७००० मंत्र का जाप करने से सिद्धि होती है।

पुष्य नक्षत्र को रवि, मंगल, गुरुवार हो तथा शुक्ल पक्ष हो।

(५) ह्रीं श्रीं सर्वांगम् स्फोटाय स्वाहा ॥

इस मंत्र का दो लाख बार जप करने से जो अंक हिलना शुरू कर दे उसी अंक को तर्जनी अंगुली पर लिखकर फिर उसी अंगुली से पुनरावर्तन करने से सिद्धि होती है।

बीसा यंत्र लिखने की विधि

प्रत्येक बीसा यंत्र में छः अंक अवश्य होते हैं। साधक को कार्य सिद्धि की दृष्टि से अलग-अलग भिन्न-भिन्न अंको से बीसा यंत्र लिखना चाहिए।

भाव शुद्ध होने पर सिद्धि शीघ्र प्राप्त की जा सकती है। मान लीजिए किसी व्यक्ति को धन की अभिलाषा है तो वह बीसा यन्त्र की आकृति बनाकर ४ के अंक से लिखना प्रारम्भ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

करे। शेष अंक बराबर लिखे। गणना में ऊपर नीचे बराबर आने चाहिए। सिद्धियों की दृष्टि से नीचे लिखे अंकानुसार फल जानें।

१ के अंक से प्रारम्भ करने पर संतान की प्राप्ति होती है।

२ के अंक से प्रारम्भ करने पर सब प्रकार की सिद्धि होती है।

३ के अंक से प्रारम्भ करने पर भूमि प्राप्त होती है।

४ के अंक से प्रारम्भ करने पर धन प्राप्त होता है।

५ के अंक से प्रारम्भ करने पर राज सम्मान प्राप्त होता है।

६ के अंक में प्रारम्भ करने पर मनचाहा फल अथवा कन्या प्राप्त होती है।

७ के अंक से प्रारम्भ करने पर यश की प्राप्ति होती है।

८ के अंक से प्रारम्भ करने पर भय व पीड़ा दूर होकर, उच्चाटन भी सिद्ध होता है।

९ के अंक से प्रारम्भ करने पर सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

प्रतिदिन १०० यंत्र अथवा अधिक लाभ प्राप्ति के लिए ३०० यंत्र लिखे। पहले बताये अनुसार पुष्य नक्षत्र, शुक्ल पक्ष तथा मंगलवार या गुरुवार को आरम्भ करके आठ दिन में ५००० यंत्र लिखे। पन्द्रह दिन में १०००० लिखे। इस प्रकार पांच हजार यंत्र के लिए प्रतिदिन ६२५ और दस हजार यंत्र लिखने के लिए प्रतिदिन १२५० यंत्र लिखने चाहिए।

पहले दिन जितने यंत्र लिखे प्रतिदिन उतने ही यंत्र लिखने का नियम रखना चाहिए। यंत्र तांबे, चांदी या सोने के पतरे पर, चन्दन, केशर अथवा अष्टगन्ध से लिखना चहिए।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

गेरू कांसी को थाली में डालकर लिखकर मिटाते जाना चाहिए। साथ ही गिनती नोट करते जाना चाहिए।

सफेद कागज पर स्याही से भी यंत्र लिखे जा सकते हैं। मगर उस स्याही में थोड़ी केशर या अष्टगन्ध मिला लेना आवश्यक है। जब संख्या पूरी हो जाये तो उन कागजों को किसी नदी या समुद्र में विसर्जन कर देना चाहिये।

पृथ्वी पर पीली मिट्टी बिछाकर ऊँगली से लिखे। इसी प्रकार लिख कर मिटाते जाना चाहिये। जब संख्या पूरी हो जाये तब फूल, मिठाई, धूप, दीप, से पूजन करके यदि सम्बन्धित मंत्र हो तो उसका भी जप करे। तत्पश्चात उस यंत्र को मिटाकर पृथ्वी पर पानी डाल दे और वहाँ की मिट्टी को उठाकर नदी में बहा दे।

यन्त्र के साथ यदि किसी मंत्र का जाप करना हो तो पहले मंत्र निश्चित संख्या में जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए। उसके बाद ही यंत्र लिखना प्रारम्भ करे।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६२.

सिद्ध बीसा यंत्र

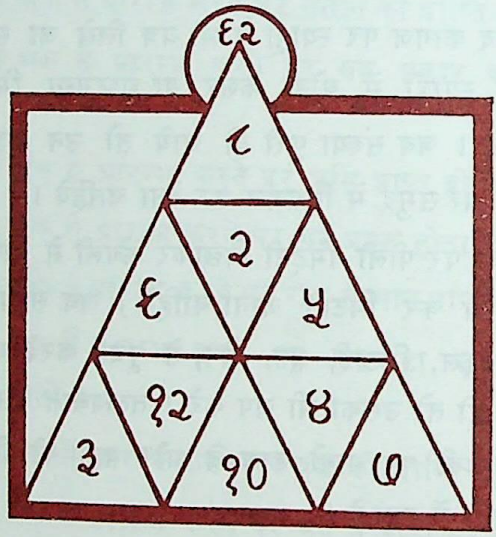

इस यंत्र को २० दिन तक प्रतिदिन २१ की संख्या में अष्टगंध से लिखना चाहिए। दीपक जलाकर लोबान की धूनी दे। २०वें यंत्र को कागज पर लिखकर उसका पूजन करना चहिए। फिर मूल मंत्र का जाप कर लेना चाहिये। प्रत्येक मंत्र को गोली बनाकर आटे में रखकर गोली बना ले। इस प्रकार प्रतिदिन ये इक्कीस गोली बनाकर इनमें से २० गोली मछलियों को खिलावे और एक गोली प्रतिदिन घर वापस लेता आवे। २१वें दिन प्रतिदिन की बची हुई गोली खिलाये। उनमें से एक गोली मछली आदि के रूप में सामने आये तो उसे पकड़ ले। पकड़ते ही वह सिद्ध बीसा यंत्र बन जायेगा। उसे सोने के ताबीज में डालकर पास रखे। इस प्रकार सभी कार्यों में सफलता मिलेगी।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रतिदिन यंत्र का पंचोपचार पूजन करना आवश्यक है। यदि यह क्रम रात्रि में किया जाय तो शीघ्र सफलता प्राप्त होती है। यदि कमी रहेगी तो बीसा यंत्र सिद्ध न होगा।

आगे बताये गये बीसा यंत्र भी पूर्वोक्त विधि से लिखकर नदी में बहाने अर्थात मछलियों को खिलाने से सिद्ध किये जा सकते हैं।

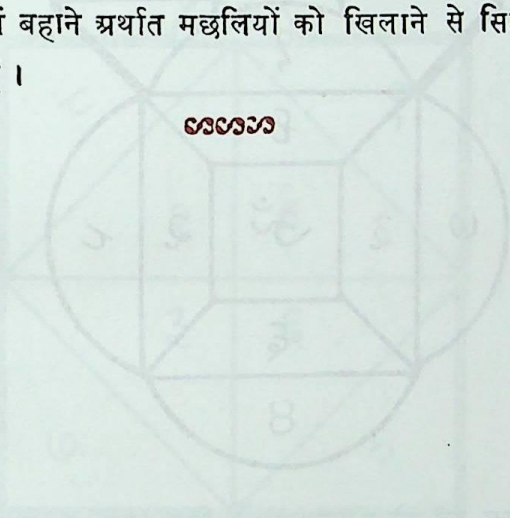

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

९३.

ऋण–मुक्ति के लिए यन्त्र

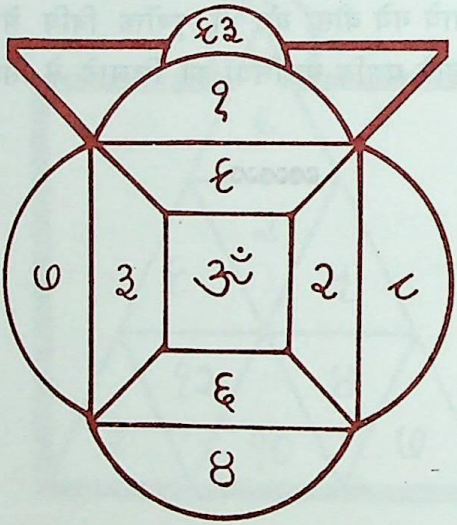

इस यंत्र को मंगलवार के दिन प्रातः ६ बजे से केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। कुल ५००० यंत्र लिखकर, पूजनोपरांत उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दे। ४० दिन तक प्रतिदिन यही क्रिया करने से मनुष्य ऋण–मुक्त हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

९४.

रोग-मुक्त होने के लिए यन्त्र

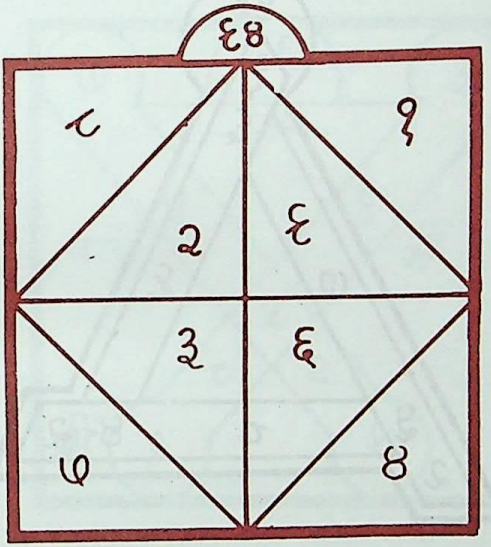

इस यन्त्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

६५.

भाग्योन्नति यन्त्र

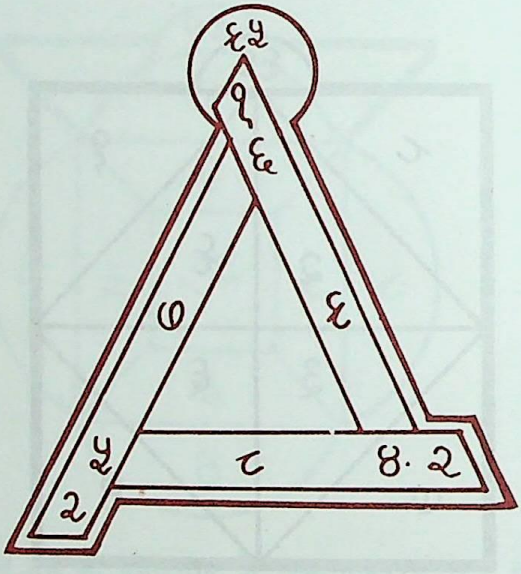

इस यन्त्र को गुरूवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन भोजपत्र के ऊपर केशर से ६२५ यन्त्र लिखे। जितने दिनों में संख्या १०००० पूरी हो जाय, उतने दिनों तक प्रतिदिन यन्त्रों को लिख लिखकर नदी के जल में प्रवाहित करता रहे, तो भाग्य की उन्नति होती है एवं कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

९६.

पुत्री का विवाह होने का यंत्र

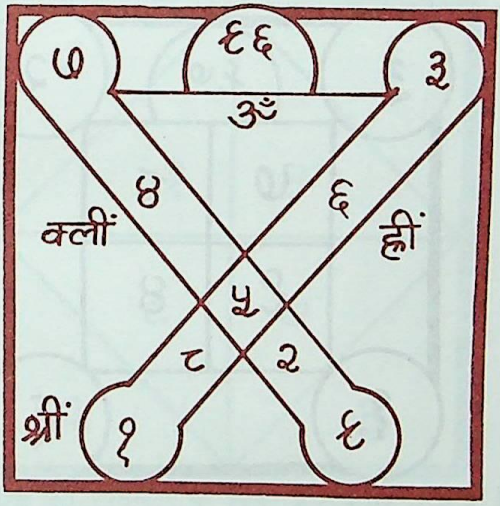

इस यन्त्र को सोमवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन २२५ यन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखे। जब ५००० यन्त्र लिखे जा चुकें, तब सबको एकत्र कर धूप-दीप देकर नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इस यन्त्र के प्रभाव से पुत्री का विवाह आनन्द पूर्वक हो जाता है और उसके लिए चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

९७.

पारिवारिक सुख का यंत्र

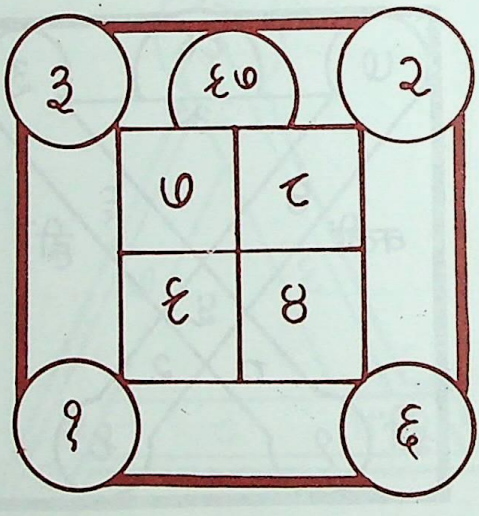

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन से प्रतिदिन १०१ की संख्या में लिखना आरम्भ करे। यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा लिखना चाहिए। जब ५००० की संख्या पूरी हो जाय तब यन्त्रों का पूजन कर उन्हें नदी के जल में विसर्जित कर दे। इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख प्राप्त होता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

९८.

यश तथा सन्तान प्राप्ति का यन्त्र

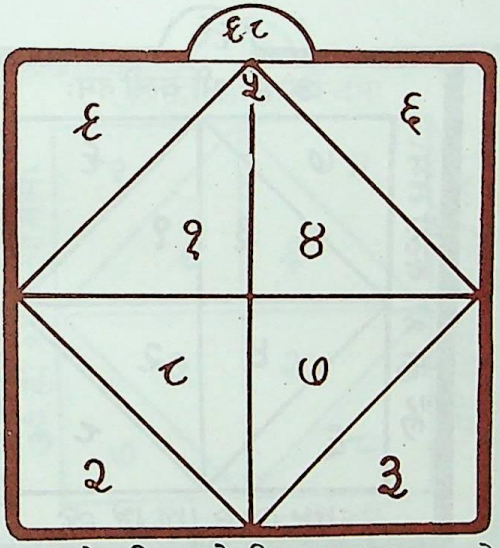

इस यन्त्र को रविवार के दिन प्रातःकाल ५ बजे, लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन १०१ यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर अथवा गोरोचन से लिखे। जब २५० यन्त्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी या समुद्र के जल में प्रवाहित कर दे तो उसके प्रभाव से यश तथा सन्तान की प्राप्ति होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

९९.

ईश्वर कृपा पाने का यन्त्र

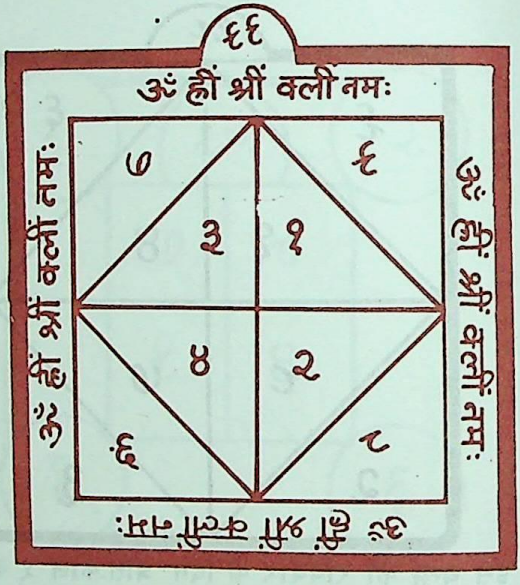

इस यन्त्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना आरम्भ करे तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यन्त्र लिख कर अन्त में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दे तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद् भक्ति की प्राप्ति होती है; यन्त्र लेखक को आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१००.

पदोन्नति का यन्त्र

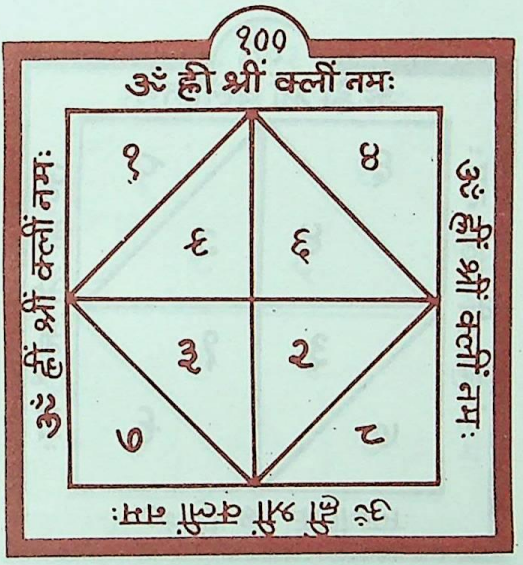

इस यन्त्र को मंगलवार अथवा गुरूवार के दिन लिखना आरम्भ करे। यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यन्त्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यन्त्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने पर पदोन्नति होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०१.

तीर्थ यात्रा का यन्त्र

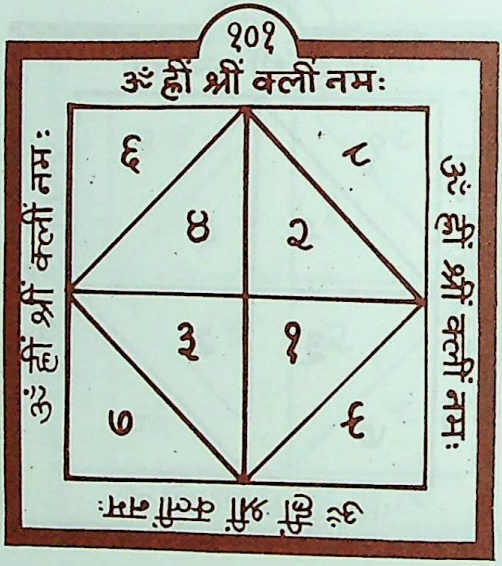

इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध द्वारा ५००० की संख्या में लिखकर धूप, दीप देने तथा बाद में उन यन्त्रों को किसी नदी अथवा समुद्र के जल में विसर्जित कर देने से यात्रा का सुयोग बनता है तथा यश की प्राप्ति होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०२.

मन्दिर निर्माण का यन्त्र

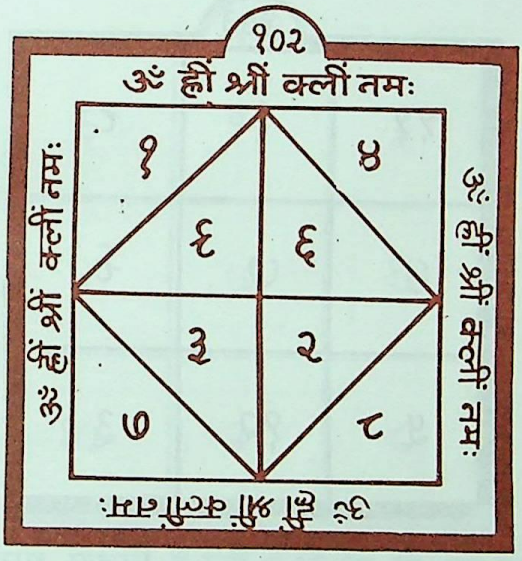

इस यंत्र को भोजपत्र पर केशर द्वारा शुक्ल पक्ष को गुरुवार के दिन ७००० की संख्या में लिखकर उसका धूप दीप आदि से पूजन करे, फिर उन यन्त्रों को किसी बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दे, तो मन्दिर–निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०३.

विद्या प्राप्ति का यन्त्र

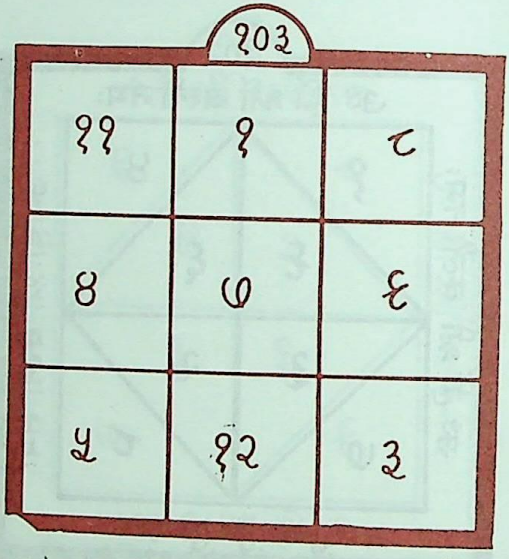

इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन २२५ यन्त्र केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखे और उन यन्त्रों को उसी दिन पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दे। १५ दिन तक इसी प्रकार निरन्तर करता रहे तो साधक को इच्छित विद्या की प्राप्ति होती है। एक यन्त्र ताबीज में भर कर अपनी भुजा में भी धारण करना चाहिए।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०४.

सन्तान-सुख का यन्त्र

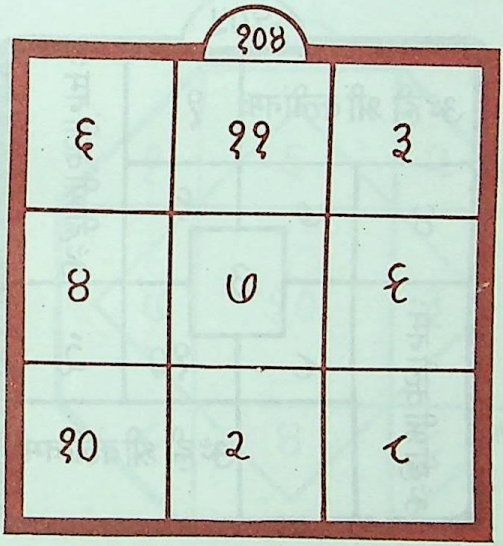

इस यंत्र को रविवार के दिन लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन २०१ यन्त्र लिखे। जब २५०० यन्त्र पूरे हो जाएँ, तब उनका पूजन करके नदी में प्रवाहित कर दे। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान का सुख प्राप्त होता है तथा बिगड़ी हुई सन्तान सुधर जाती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०५.

धन प्राप्ति का यन्त्र

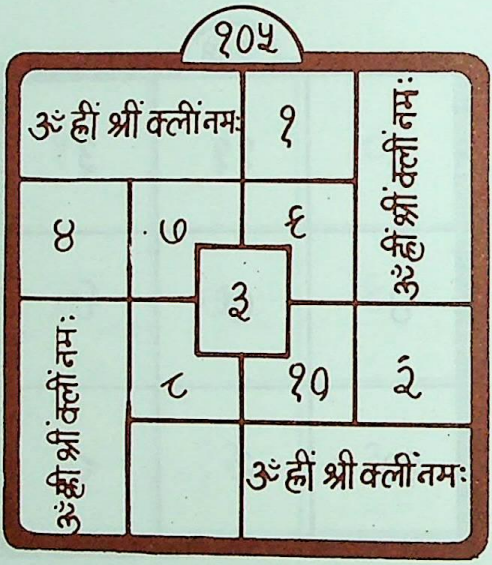

इस यंत्र को गुरुवार के दिन सें केशर द्वारा भोज पत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन १२५ यन्त्र लिखे, जब ५००० यन्त्र लिखे जाएँ, तब उन्हें जल में प्रवाहित कर दे तथा एक यन्त्र को चांदी के ताबीज में भरकर अपनी दायीं भुजा में धारण करे तो धन की प्राप्ति होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०६.

श्री सिद्ध मनोकामना पूर्ण यन्त्र

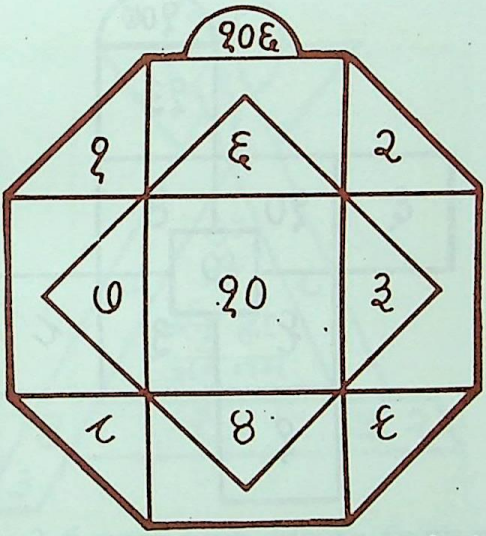

पुस्तक में लिखे गये किसी भी बीसा यन्त्र के विधान को विश्वास पूर्वक पूरा करे और अपने इष्ट देव का ध्यान करके इस यन्त्र को ताबीज में धारण करके पहनने से मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०७.

आजीविका प्राप्ति का यन्त्र

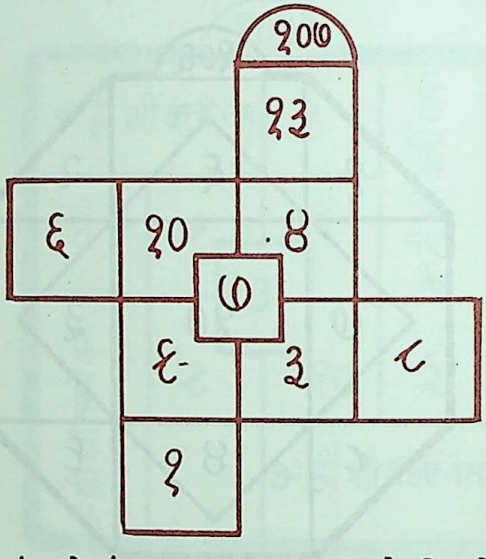

इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदिन २०१ यन्त्र अष्टगंध से भोज पत्र के ऊपर लिखे। जब ५००० यन्त्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दे। इस प्रवाह से अजीविका (नौकरी आदि) की प्राप्ति होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०८.

स्थानान्तरण का यन्त्र

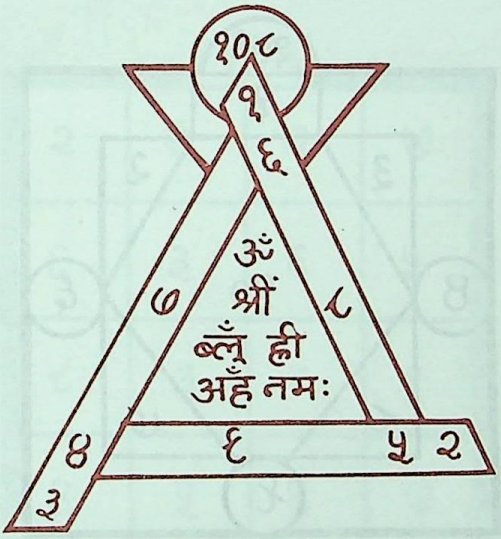

इस यंत्र को मंगलवार के दिन से प्रतिदिन १०१ की संख्या में सफेद कागज या भोजपत्र के ऊपर लिखे। २५०० लिख जाने पर १६ किसी नदी के जल में प्रवाहित कर दे तो साधक का स्थानान्तरण उसके इच्छित स्थान पर हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१०६.

वाहन प्राप्ति का यन्त्र

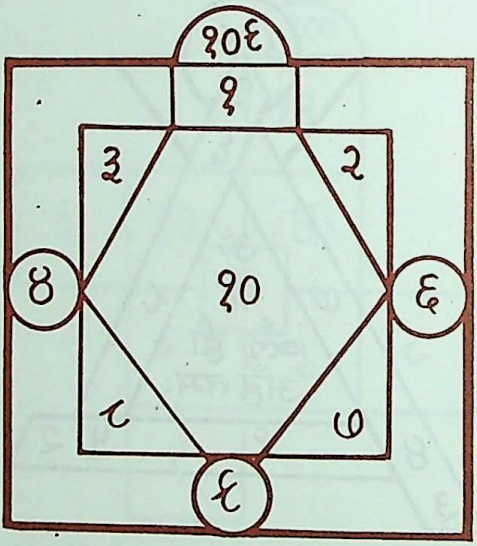

इस यंत्र को मंगलवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर ५०० की संख्या में लिखकर पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दे। ३६ दिन निरन्तर करने से वाहन (मोटर, गाड़ी आदि) की प्रप्ति होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११०.

सर्वकार्य सिद्ध बीसा यन्त्र

११०

२	९	२	७
६	३	६	५
८	३	८	१
४	५	४	७

इसी पुस्तक में दिये गये विधान से जिस प्रकार की इच्छा पूर्ति करनी हो उस अंक से लिखना प्रारम्भ करके, यंत्र को ३५०० बार लिख लें तो यह यंत्र सब कार्यों में सहायता देता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१११.

गृह निर्माण का यंत्र

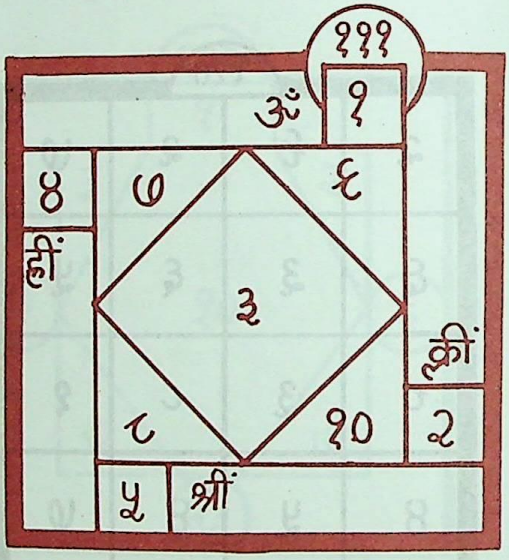

इस यंत्र को शुभ तिथि तथा शुभ दिन में प्रातः ५ बजे से केशर द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र पर ११००० की संख्या में लिखे तथा निम्न मंत्र को भी लिखे और उसे नदी में प्रवाहित कर दे, तो गृह निर्माण की इच्छा पूर्ति हो जाती है।

मंत्र

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि गणपते वांछितार्थ, पुण्य लक्ष्मीदायक लक्ष्मीदायक ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु, सर्व सौख्य सौभाग्यं कुरु कुरु श्रीं ह्रीं स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं क्लीं भगवती मम वांछितं देही देही स्वाहा ॥

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११२.

विशिष्ट बीसा यन्त्र

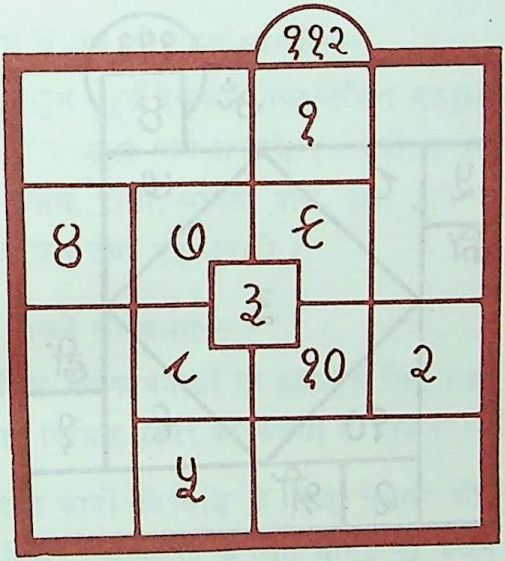

यह भी एक विशेष प्रकार का बीसा यन्त्र है। इसको भोजपत्र पर बनाकर अथवा ताम्रपत्र पर खुदवाकर अपने पास रखें, भुजा पर या गले में धारण कर सकते हैं। इसके प्रभाव से मनुष्य को आत्मबल मिलता है तथा सभी विघ्न बाधायें दूर होकर सुख शाँति की अनुभूति होती है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११३.

जलाशय निर्माण का यंत्र

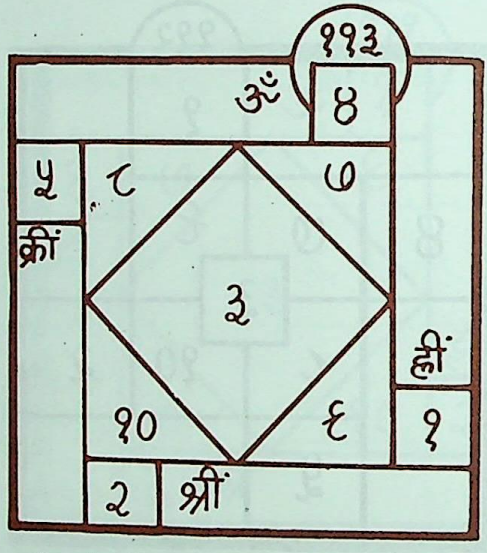

इस यंत्र को भोजपत्र या सफेद कागज पर केशर द्वारा ३१०० की संख्या में लिखकर धूप-दीप देकर नदी के बहते जल में प्रवाहित कर देने से जलाशय, कुआं, बावड़ी, तालाब आदि बनवाने का मनोरथ पूर्ण हो जाता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

सिद्ध पन्द्रह के यन्त्र

पन्द्रह के यंत्र की पूजन सामग्री—

पहले शुभ मुहूर्त देखकर निम्नलिखित वस्तुओं को अपने पास रख ले। सवा पाव लपसी, १० चूड़ी, फराम का पट्टा, अनार की कलम, रोली, चावल, दाल, फूल, हरी गरी के २१ टुकड़े, पान, फल तथा २१ सुपारी।

यन्त्र लिखने की कलम—

विभिन्न मनोकामनाओं की प्राप्ति के लिए पन्द्रह के यंत्र को निम्नानुसार विभिन्न प्रकार की कलमों से लिखना चाहिए–

समस्त कार्यों की सिद्धि के लिए चमेली की लकड़ी की कलम से लिखो। आकर्षण के लिए जामुन की कलम से लिखे। स्तम्भन के लिए बरगद की लकड़ी की कलम से लिखे। वशीकरण के लिए कुश की कलम से लिखे तथा शुभ कार्यो के लिए सोने अथवा चाँदी की कलम द्वारा केशर, चन्दन, तगर, कपूर, और कस्तूरी से यंत्र को लिखना चाहिए।

पन्द्रह का यन्त्र साधने के न्यास

ॐ ह्रीं पंचदशीं सर्व सिद्धि दर्शय स्वाहा।
ॐ श्रीं ह्रीं चामुंडदेव्यै नमः।
ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः॥
श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः चामुंडा ॥

अनामिकाभ्यां नमः ।

दैव्यै कनिष्टकाभ्यां नमः ॥

नमः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ।

जिस वक्त यंत्र साधन को प्रारम्भ करे उस वक्त मंत्र को सात दफे गुन लेवे।

पन्द्रह के यंत्र लिखने की संख्या—

१– लक्ष्मी की प्रसन्नता के लिए २०००।
२– रोग दूर करने के लिए ६०००।
३– वशीकरण के लिए ३०००।
४– ईश्वर की प्रसन्नता के लिए ४०००।
५– देवता की प्रसन्नता के लिए ५०००।
६– रोजगार प्राप्त करने के लिए ४०००।
७– विदेशी को घर बुलाने के लिए २०००।
८– बांझ स्त्री को गर्भ धारण करने के लिए ५०००।
९– मनवांछित कार्य के लिए १५०००।
१०– खेती के उत्पादन में वृद्धि के लिए २०००।
११– मित्र से मिलाप के लिए २०००।
१२– मंत्र की सिद्धि के लिए ३०००।
१३– प्रेत दूर करने के लिए २०००।
१४– गई वस्तु को प्राप्त करने के लिए ५०००।
१५– शत्रु को वश में करने के लिए २०००।
१६– बन्धन मुक्ति के लिए ६०००।
१७– विष नाश के लिए २५०००।
१८– सरस्वती की प्रसन्नता के लिए १०००।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१६– मनुष्य से शत्रुता दूर करने के लिए २०००।
२०– औषधि की सिद्धि के लिए १०००।
२१– तिजारी दूर करने के लिए ६०००।
२२– दुखः दूर करने तथा सुख प्राप्ति के लिए २०००।
२३– राजसभा को मोहित करने के लिए २०००।
२४– राजा को प्रसन्न करने के लिए ४०००।
२५– अनहोनी बात को करने के लिए १ लाख की संख्या में इस यंत्र को लिखना चाहिए।

प्रयोग विधि—

आक के पत्ते पर पन्द्रह दिन तक पन्द्रह–पन्द्रह के यन्त्र लिखे। पत्ते के नीचे शत्रु का नाम लिखकर अग्नि में जला दे तो शत्रु का नाश होता है।

कार्य सिद्धि के लिए पन्द्रह के यंत्र को लिखने के वास्ते उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठना चाहिए तथा अनार की कलम से यंत्र को लिखना चाहिए।

शत्रु को कष्ट पहुँचाने अथवा शत्रु–मारण के लिए पन्द्रह का यंत्र लिखना हो तो दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके बैठना चाहिए तथा लोहे की कलम से लिखना चाहिए। यंत्र को लिख-लिखकर एक सौ एक बार मिटाना चाहिए तथा बैरी के नाम का संकल्प करना चाहिए।

शुभ कार्य के लिए यंत्र लिखना हो तो पहले संकल्प करके शुक्ल पक्ष तथा उत्तम दिन से लिखना आरम्भ करना चाहिए। अशुभ कार्य के लिए लिखना हो तो कृष्ण पक्ष में किसी निकृष्ट दिन से लिखना आरम्भ करना चाहिए। इस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पन्द्रह के यंत्र का साधन करते समय ब्रह्मचर्य से रहना चाहिए केवल मूंग तथा चावल का भोजन करना चाहिए एवं यंत्र को लिखने के बाद नदी में बहा देना चाहिए। जो यंत्र नदी मे निकल कर बाहर आ पड़े, उसे अपने पास रखना चाहिए। उसके प्रभाव से सम्पूर्ण मनोकामनाएँ सिद्ध होती हैं।

रविवार की प्रयोग विधि—

रवित्रार के दिन आक के दूध में मरघट की भस्म मिला कर पन्द्रह के यंत्र को लिखे तथा नीचे शत्रु का नाम लिख कर चिता की अग्नि में डाल दे तथा निम्नलिखित मंत्र का १०८ बार जप करे तो शत्रु विक्षिप्त हो जाता है। मंत्र यह है—

"ओ३म् ह्रीं श्रीं क्लीं चामुण्डा देवी स्वाहा।"

सोमवार की प्रयोग विधि—

सोमवार के दिन सफेद दूब, केशर, सफेद चिरमिटी तथा कपिला गाय का दूध—इन सबको मिलाकर संध्या के समय इस यंत्र को विलोम रीति से लिखे तथा बाहु अथवा कण्ठ में बाँधे तो राजा भी वशीभूत हो जाता है मनुष्यों का तो कहना ही क्या है।

मंगलवार की प्रयोग विधि—

मंगलवार के दिन कौए के पंख की कलम द्वारा कौए के ही रक्त से मुर्दे के वस्त्र (कफन) के ऊपर साध्य व्यक्ति के नाम सहित यन्त्र को लिखकर; उसी के द्वार पर पृथ्वी में गाढ़ दे तो उस मनुष्य का उच्चाटन होता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

बुधवार की प्रयोग विधि—

बुधवार के दिन नागकेशर तथा गोरोचन से यंत्र लिखकर बत्ती बना ले तथा सरसों के तेल के दीपक से उसे जला कर मनुष्य की खोपड़ी में काजल पारे तथा पूर्वोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके उस काजल को आँखों में लगाये तो जो देखे, वही वशीभूत हो जाएगा।

गुरुवार की प्रयोग विधि :—

गुरुवार के दिन हल्दी, गोरोचन और घी—इन सब वस्तुओं को मिलाकर यंत्र को लिखे तथा उसके नीचे साध्य व्यक्ति का नाम लिखकर यंत्र को आसन के नीचे दबा दे तो साध्य व्यक्ति का आर्कषण होता है।

शुक्रवार की प्रयोग विधि :—

शुक्रवार के दिन कपूर, बच, कूठ और शहद; इन सब को मिलाकर यन्त्र को लिखे तथा उसे कण्ठ अथवा भुजा में धारण करे तो उसे देखते ही साध्य स्त्री धन और प्राण सहित साधक के समीप चली आती है।

शनिवार की प्रयोग विधि :—

शनिवार के दिन चिता की लकड़ी की कलम से मुर्गे के रक्त द्वारा उल्टा यंत्र लिखकर मरघट में गाड़ दे तो यंत्र के साथ जिस साध्य व्यक्ति का नाम लिखा होगा, उसका क्षय हो जायेगा।

पन्द्रह के यंत्र की अन्य विधियां

बरगद की कलम द्वारा कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से इस यंत्र

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

को लिखकर आरम्भ करने पर धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अनार की कलम द्वारा पृथ्वी पर एक सहस्त्र संख्या में यंत्र लिखने पर बन्धन से छुटकारा मिलता है तथा स्वामी से मित्रता होती है।

पीपल की कलम द्वारा यंत्र लिखने पर दरिद्रता का नाश होता है।

गो मूत्र, मैनसिल, कपूर तगर और गोरोचन—इनकी स्याही बनाकर पीपल की जड़ की कलम से भोजपत्र पर इस यंत्र को एक सहस्त्र की संख्या में लिखने से मनोवाँछित फल की प्राप्ति होती है।

बेल पत्र का रस, हरिताल और मैनसिल— इन सबको मिलाकर बेल की कलम से दो सहस्त्र की संख्या में यंत्र को किसी शुभ स्थान में बैठकर पृथ्वी पर लिखे तो मनोभिलाषित कार्य पूरा होता है।

आक के पत्तों के रस से आक के पत्ते पर ही १०८ यंत्र लिखकर नीचे शत्रु का नाम लिखे। फिर उन्हें कीकर के वृक्ष से बाँध दे तो इन्द्र के समान प्रबल शत्रु को भी ज्वर एवं देहशूल उत्पन्न होता है।

हल्दी को पानी में घिसकर उसके द्वारा पत्थर पर लिखे और उस को शत्रु की चौखट में गाढ़ दे तो उसकी इष्ट-मित्र, बन्धु-बान्धव आदि सभी से कलह होती है।

अपामार्ग के रस से भोजपत्र के ऊपर यंत्र लिखकर कण्ठ

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

में बांधने से इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि सब प्रकार के ज्वर दूर हो जाते हैं।

भागरे के रस से भोजपत्र के ऊपर यंत्र लिखकर बाहु अथवा हृदय में धारण करने से शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त होती है।

पन्द्रह के यंत्र का मंत्र

"ॐ ह्रीं क्लीं पारस्वपक्ष्या नवनागकुल सेवनाय स्वाहा।"

पन्द्रह के मंत्र को निम्नलिखित कामनाओं के लिए विभिन्न प्रकार की वस्तुओं पर सवा लाख की संख्या में लिखकर, उन यंत्रों की गोली बनाकर आटे में दबा कर गोली बना दे तथा प्रत्येक यंत्र को उक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके, उन गोलियों को ऐसे जलाशय में डाल दे, जहाँ मछलियाँ हों और वे उन गोलियों को खाले तो लिखित यंत्रानुसार मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। गोलियों की डालते समय भी उक्त मंत्र का जप करते रहना चाहिए।

विभिन्न मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए मंत्र को निम्नानुसार वस्तुओं पर लिखना चाहिए—

सन्तान की प्राप्ति के लिए शतवार के पत्तों पर लिखे, भाग्यवृद्धि के लिए बरगद के पत्तों पर लिखे, देश अर्थ के लिए कमल के पत्तों पर लिखे, काम-अर्थ के लिए कांसी के पत्र पर लिखे तथा भोजन प्राप्त करने के लिए केले के पत्ते पर लिखे।

इसके बाद उपयुक्त स्थान पर घट स्थापन करके, पट्टे पर रोली बिछावे। पट्टे के सिर की ओर खड़ी बत्ती वो दीपक में घी भर कर जलावे। पाँव की ओर गूगल की धूनी दे तथा अग्नि

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

रखे। लपसी तथा पूड़ी के आधे-आधे भाग को पट्टे के दाई-बाई ओर रखे फिर पट्टे के ऊपर अनार की कलम से यंत्र नं० ११४ लिखे। यंत्र लिखते समय निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करना चाहिए—

"ॐ नमो चामुण्डा माई आई घाई मूवा मरा लिया उठाई बाल रखे, बालनी कपाल राखे कालिका दाई भुजा नृसिंह वीर बाई हनुमंत वीर राखे वीरों का वीर खेलता आवता वीर लगावे पाय जो यह घट पिंड की रक्षा करे तो उलट वेद वाही पर पड़े चलो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

११४

६	१	८
७	५	३
२	९	४

इसके पश्चात मंत्र का पूजन करके रोली, चावल, फूल, गरी का एक-एक टुकड़ा, पान, सुपारी चढाकर, गूगल की धूनी दे तथा निम्नलिखित मंत्र को एक बार पढ़े—

"ओ३म् ऐं ह्रीं चामुण्डायै विच्चैः।"

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

इसके पश्चात यंत्र को मिटाकर दूसरा यंत्र लिखे तथा इसी प्रकार पूजन तथा मंत्रोच्चारण आदि करे। इस तरह २१ यन्त्र लिखे तथा सबका पूजन करे। २१ वें यंत्र के आगे उक्त नवाक्षर मंत्र का ६ सहस्त्र की संख्या में जप करे। इस विधि द्वारा २१ दिन में यंत्र सिद्ध होगा तथा मंत्र का जप भी सवा लाख पूरा हो जायेगा। तब मंत्र के जप अर्थात सवा लाख का दशांश होम, होम का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। फिर प्रतिदिन एक यंत्र लिखकर एक माला अर्थात १०८ बार मंत्र का जाप करना चाहिए।

जब किसी कार्य को सिद्ध करने के लिए यंत्र लिखना हो तो शुभ कार्य के लिए शुक्ल पक्ष में तथा अशुभ कार्य के लिए कृष्ण पक्ष में लिखना आरम्भ करना चाहिए। इस यंत्र का साधन निम्नलिखित कार्यों की सिद्धि के लिए विशेष रूप से किया जाता है—

(१) लक्ष्मी (धन) प्राप्त करने के लिए।
(२) सरस्वती (विद्या) प्राप्त करने के लिये।
(३) सभा को वश में करने के लिये।
(४) पंथ की सिद्धि के लिये।
(५) औषधि को सिद्धि के लिये।
(६) परदेश गये हुए को बुलाने के लिये।

इन सब कार्यों की सिद्धि के लिये दो-दो हजार की संख्या में यंत्र को लिखना चाहिये।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

(७) मनुष्य को वश में करने के लिये ।

(८) शत्रु का नाश करने के लिये ।

(९) मित्र से मिलने के लिये ।

इन सब कार्यों की सिद्धि के लिये तीन-तीन हजार की संख्या में यंत्र को लिखना चाहिये ।

(१०) रोग दूर करने के लिये ।

(११) कैद (बन्धन) से छूटने के लिये ।

इन सब कार्यों की सिद्धि के लिये छः छः हजार की संख्या में यंत्र को लिखना चाहिये ।

(१२) ईश्वर की प्रसन्नता के लिये ।

(१३) राजा की प्रसन्नता के लिये ।

इन सब कार्यों की सिद्धि के लिये चार-चार हजार की संख्या में यंत्र को लिखना चाहिये ।

(१४) खेती में वृद्धि के लिये ।

(१५) बन्ध्या स्त्री के पुत्र होने के लिये ।

इन सब कार्यों की सिद्धि के लिये पाँच-पाँच हजार की संख्या में यंत्र को लिखना चाहिये ।

(१६) मनोभिलाषा की पूर्ति के लिये इस यंत्र को १५ हजार की संख्या में लिखना चाहिये ।

अब विभिन्न प्रकार के अन्य मनोरथों की प्राप्ति के लिये यंत्र को जितना और जिस प्रकार से लिखा जाना चाहिये, उसका वर्णन किया जाता है ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

शत्रु को नष्ट करने के लिये—

इस यंत्र को १५ दिन में १५०० की संख्या में आक के पत्ते पर लिखकर अग्नि में जलाना चाहिये, यंत्र के साथ ही अपना मनोरथ भी लिखना चाहिये। यदि शत्रु की हानि चाहे तो यंत्र को श्मशान में गाढ़ना चाहिये।

चोर के बुलाने के लिये—

यन्त्र लिखकर चरखे में बाँधकर उल्टा फिराना चाहिये।

वाक्य-सिद्धि के लिए—

अष्टगन्ध से कागज के ऊपर १० हजार यन्त्र लिखकर मन्त्र संयुक्त होम करना चाहिये।

दरिद्रता-नाश के लिए—

पीपल की कलम द्वारा पीपल के वृक्ष के नीचे कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से आरम्भ करके २ हजार यन्त्र लिखने चाहिये।

विशेष मनोरथ की प्राप्ति के लिए—

अनार की कलम से बरगद के वृक्ष के नीचे एक हजार यन्त्र लिखने चाहियें।

वाक्य सत्य करने के लिए—

बेल की कलम से पवित्र स्थान में २ हजार यन्त्र लिखने चाहिये।

यन्त्र के अंक रखने की विधि

सर्वत्र यन्त्र की १ से ९ तक अंक संख्या है, परन्तु एक तान्त्रिक महापुरुष के अनुसार १५ के यन्त्र की चाल को जिस

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकार बताया गया है, उसे नीचे लिखे यन्त्र में प्रदर्शित किया गया है।

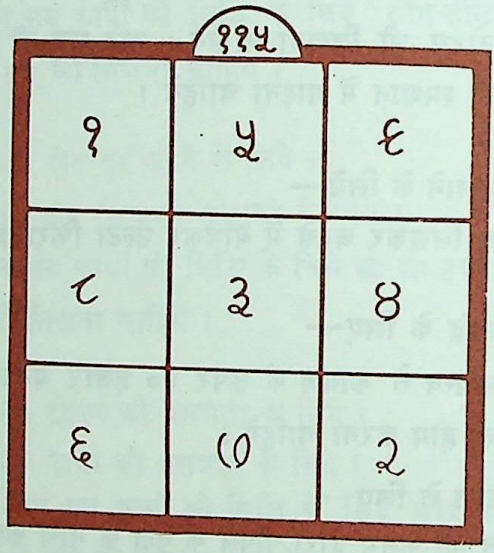

खाकी, आबी, आतशी तथा बादी यन्त्रों में अंक रखने की विधि भी इस प्रकार बताई है। इसका प्रसंगवश उल्लेख किया जा रहा है, हमारी राय में यह विधि पूर्वापर किसी विधि से शास्त्र या विधान-सम्मत नहीं है।

खाकी में	आबी में	आतशी में	बादी में
८/५/२	२/७/६	४/९/२	६/७/२
३/५/७	९/५/१	३/५/७	१/५/९
४/९/२	४/३/८	८/१/६	८/३/४

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अन्य ज्ञातव्य विषय

जिस मनोरथ के लिए भी १५ का यन्त्र जितनी संख्या में लिखा जाय, उसका दशांश होम, ब्राह्मण-भोजन आदि कराना आवश्यक है। यह स्मरण रखना चाहिए कि यन्त्र को पहले सिद्ध कर लेना आवश्यक है। यन्त्र को सिद्ध किये बिना किसी भी कार्य में सफलता नहीं मिलती। यन्त्र सिद्ध करने की विधि संक्षेप में बताई गई है, फिर भी इसमें सिद्ध (प्रवीण) पुरुष के सानिध्य में दक्षता प्राप्त कर लेना नितांत आवश्यक है। बिना गुरु के ज्ञान प्राप्ति की आशा, दुराशा मात्र ही सिद्ध होगी। किसी का अहित भी नहीं सोचना चाहिए।

दिन (वार) के अनुसार पन्द्रह के यन्त्र की साधन-विधि का पहले वर्णन किया जा चुका है, अब अन्य मतानुसार वारों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा गया है उसका उल्लेख किया जाता है—

रविवार—के दिन इस यन्त्र का साधन शत्रु को बावला करने के लिए करना चाहिए। आक का दूध लगाकर उसमें श्मशान की राख मिलायें तथा मुर्दे के कफन पर शत्रु के नाम सहित यन्त्र को लिखकर पूर्वोक्त मंत्र का १०८ बार जप करके उसमें यन्त्र को अभिमन्त्रित करे। तत्पश्चात यन्त्र को घर की चौखट के नीचे गाढ़ दें तो शत्रु बावला हो जाता है।

सोमवार—के दिन वशीकरण के लिए इस यन्त्र का साधन करना चाहिए। दूध, केशर और सफेद चिरमिटी को श्वेत गाय के दूध में घिसकर उसके द्वारा भोजपत्र के ऊपर यन्त्र को लिखे। फिर पूजादि करके यन्त्र को कण्ठ अथवा मस्तक में धारण करे। जिस व्यक्ति को वश से करना हो उसका नाम

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

यन्त्र के नीचे लिखना चाहिए तथा पूर्वोक्त नवाक्षर मंत्र का १०८ की संख्या में जप करना चाहिए। प्रत्येक बार अन्त में

'अमुकस्य मम वश्य कुरु कुरु स्वाहा

वाक्य का उच्चारण अवश्य करना चाहिए। इस वाक्य में प्रयुक्त 'अमुकस्य' के स्थान पर साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

मंगलवार–के दिन उच्चाटन कार्य के लिए इस यंत्र का साधन करना चाहिए। कौए के पंख की कलम द्वारा कौए के ही रक्त मे मुर्दे के कफन पर यन्त्र लिखकर, उसके नीचे साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए तथा उसको १०८ मन्त्रों से अभिमन्त्रित करके साध्य व्यक्ति के घर की चौखट के नीचे गाढ़ देना चाहिए।

बुधवार–के दिन वशीकरण के लिए इस यन्त्र का साधन करना चाहिए। नागकेशर और गोरोचन को मिलाकर कागज के ऊपर यन्त्र लिखे, फिर उसकी बत्ती बनाकर, मनुष्य की दो खोपड़ी मंगाये। एक खोपड़ी में सरसों का तेल भरकर बत्ती जलाये तथा दूसरी खोपड़ी में उससे काजल पारे। काजल को पूर्वोक्त मंत्र द्वारा १०८ बार अभिमन्त्रित करके आँखों में लगाकर साध्य व्यक्ति के सामने जाये तो वह देखते ही वशीभूत होकर तथा बैचेन होकर समीप आ जाता है। मन्त्र के साथ ही साथ व्यक्ति का नाम भी लिख देना चाहिए।

गुरुवार–के दिन आकर्षण के लिए इस यन्त्र का साधन करना चाहिए। गोरोचन, तगर और हल्दी को घी में मिलाकर साध्य-व्यक्ति के नाम सहित यन्त्र लिखना चाहिए फिर उसे

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

अपने आसन के नीचे गाढ़कर, स्वयं आसन के ऊपर बैठकर १०८ की संख्या में मंत्र का जप करना चाहिए इस साधन के प्रभाव से साध्य व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के समीप चला आता है।

शुक्रवार--के दिन स्त्री-वशीकरण के लिए इस यंत्र का साधन करना चाहिए। बच और कूठ को शहद में मिलाकर भोज पत्र के ऊपर साध्य स्त्री के नाम सहित यन्त्र को लिखना चाहिए तथा विधिवत पूजन एवं १०८ मन्त्र को अपने कण्ठ अथवा मस्तक में धारण करना चाहिए।

शनिवार--के दिन मारण-कर्म के लिए के लिए इस यन्त्र का साधन करना चाहिए। चिता की लकड़ी की कलम बनाकर कफन के ऊपर यन्त्र लिखकर उस के साथ शत्रु का नाम भी लिखना चाहिए। यन्त्र को उल्टा भरना चाहिए अर्थात् नीचे से आरम्भ करना चाहिए। फिर उसे शत्रु को चौखट के नीचे गाढ़ देने से शत्रु यमलोक को प्राप्त होता है।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११६.

पन्द्रह के यन्त्र के विविध स्वरूप

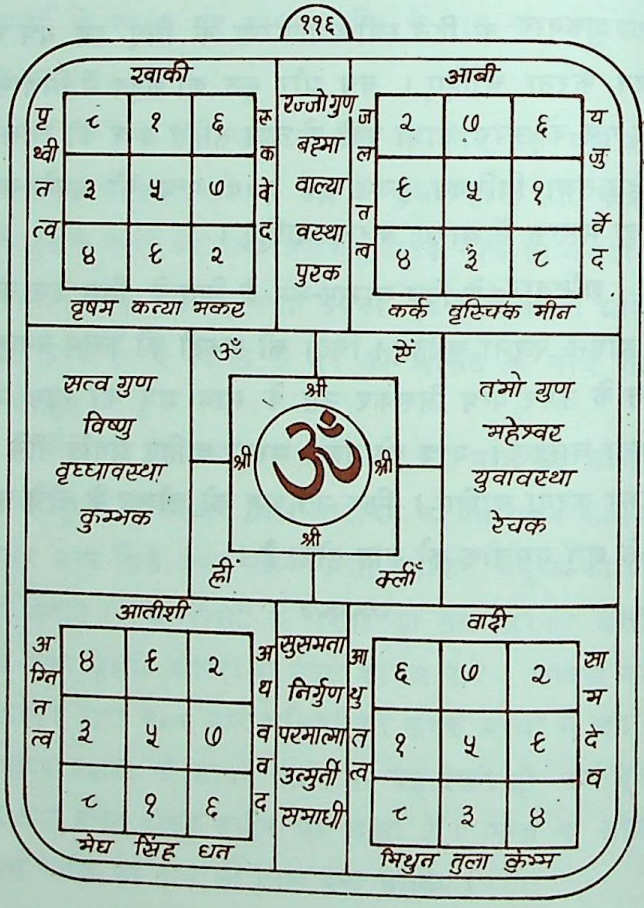

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११७.

बिच्छू सर्पादि नाशक यन्त्र

११७

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	६	१
४	६	३२	३५

यन्त्र को मालकांगनी के रस से भोजपत्र पर लिखकर घर में शुद्ध जगह में रख दिया जाये तो सर्व बिच्छू एवं सर्प भाग जायेंगे ।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

११८.

महा विजय यन्त्र

११८

ह्रीं	ॐ कुरू कुरू स्वाहा ॐ ऋषभः अजितः सम्भव				ह्रीं	क्षिप ॐ स्वाहा ॐ क्षां श्री अभिनंदनः सुमती				श्रीं
ॐ ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्ये नमः नेमी पार्श्व वर्धमान स्वाहाः	४७	५८	६९	८०	१	१२	२३	३४	४५	ॐ धर्म देवती रक्ष सुधर्म वामती रक्ष चंद्र प्रभु सुबुधि
	५७	६८	७९	९	११	२२	३३	४४	४६	
	६७	७८	८	१०	२१	३२	४३	५४	५६	
	७७	७	१८	२०	३१	४२	५३	५५	६६	
ॐ	६	१७	१९	३०	४१	५२	६३	६५	७६	क्लीं
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः अरमलि मुनि सुव्रत नमीः	१६	२७	२९	४०	५१	६२	६४	७५	५	नर सिंह गुरुम्वी नमः पदम प्रभु सुपार्श्वः
	२६	२८	३९	५०	६१	७२	७४	४	१५	
	३६	३८	४९	६०	७१	७३	३	१४	२५	
	३७	४८	५९	७०	८१	२	१३	२४	३५	
क्षां	अनीत धर्मः शान्ति कुंथ				क्रीं	शीतल श्रेयासः वासु पूज्यः विमलः				क्षां

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

पन्द्रह के विविध यन्त्र

११९.

उत्तम यन्त्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

१२०.

मध्यम यन्त्र

८	३	४
१	५	९
६	७	२

मोहिनी विद्या अथवा मन्त्र शास्त्र के षट् कर्मों जैसे मारण, मोहन, वशीकरन, उच्चाटन, स्तम्भन विद्वेषण आदि किसी भी कर्म की साधना करने के पूर्व साधक को चाहिये कि वह स्वच्छ स्थान में स्वच्छ कपड़े पहनकर तथा काला भैरव आदि देवताओं को ध्यान करके अपनी रक्षा के लिये पन्द्रहे के यन्त्र का तावीज गले या बाजू में बांधे ताकि उसका कोई नुकसान न हो। उक्त दोनों यंत्रों को प्रयोग में ला सकते हैं।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१२१.

प्रत्येक कार्य में सफलता पाने के लिए प्रसिद्ध — पन्द्रहे का यन्त्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

इस यन्त्र के सिद्ध होने से मनुष्य को हर कार्य में सफलता होती है। यदि प्रतिदिन प्रातः पवित्र होकर सौ बार ऊपर दिखाये प्रकार से पन्द्रहे का यन्त्र लिख लिया करे तो उससे यश और गौरव की वृद्धि होती है। विशेष रूप से इसके सिद्ध करने की रीति यह है कि सोमवार के दिन प्रातः ही शुद्ध होकर हवन करे और ईश्वर का नाम लेकर अपने कार्य की ओर लक्ष्य रख कर कागज पर जायफल से यन्त्र लिखे और धूप से उसको धूपित करे। फिर उसको सन्दूक में रख दें। इसी प्रकार २१ दिन तक करे तो साधक को कार्य में अच्छी सफलता हो। यदि इस यन्त्र को चांदी में मढ़वा कर गर्दन में या बाजू पर बाँध ले तो यह यन्त्र उसकी हर समय रक्षा करता रहेगा।

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

धारण करने योग्य कुछ अन्य यन्त्र

इन यन्त्रों में से किसी भी यंत्र को (अपने इष्ट के अनुसार) ताबीज में पवित्रता पूर्वक धारण करने से उस देवता की विशेष कृपा प्राप्त होती है तथा बाधायें दूर होकर मनवाँछित कार्य में सफलता मिलती है। इन आगे दिये गये तीनों यन्त्रों को इसी प्रकार से अथवा ताँबे पर बनवा कर गले में धारण करना चाहिये।

१२२. श्री गणेश धारण यन्त्र (मंत्र सहित)

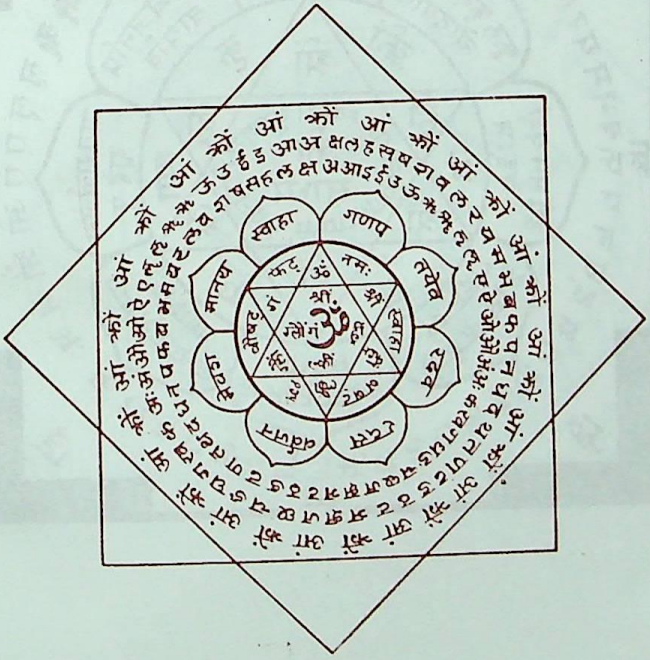

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, ...

१२३. श्री कृष्ण धारण यन्त्र (मंत्र सहित)

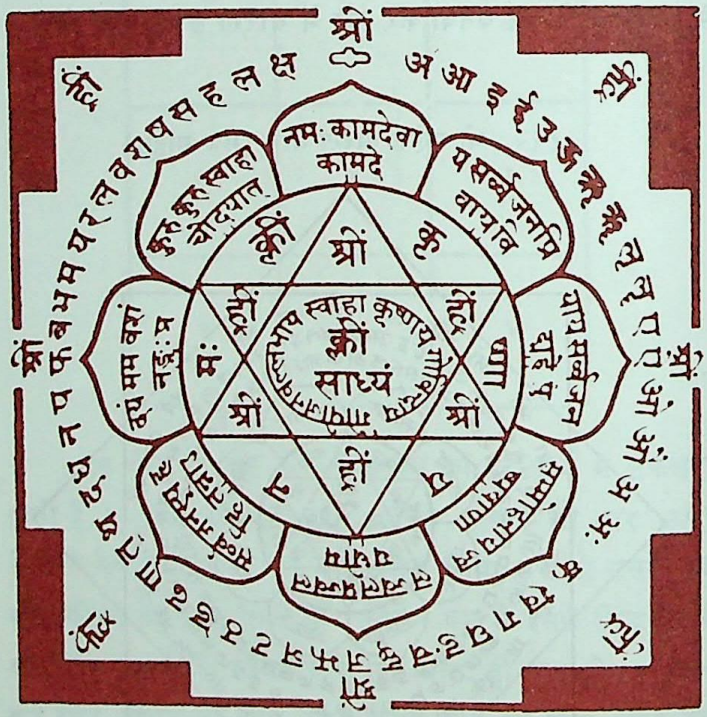

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

१२४. श्री दुर्गा धारण यन्त्र (मंत्र सहित)

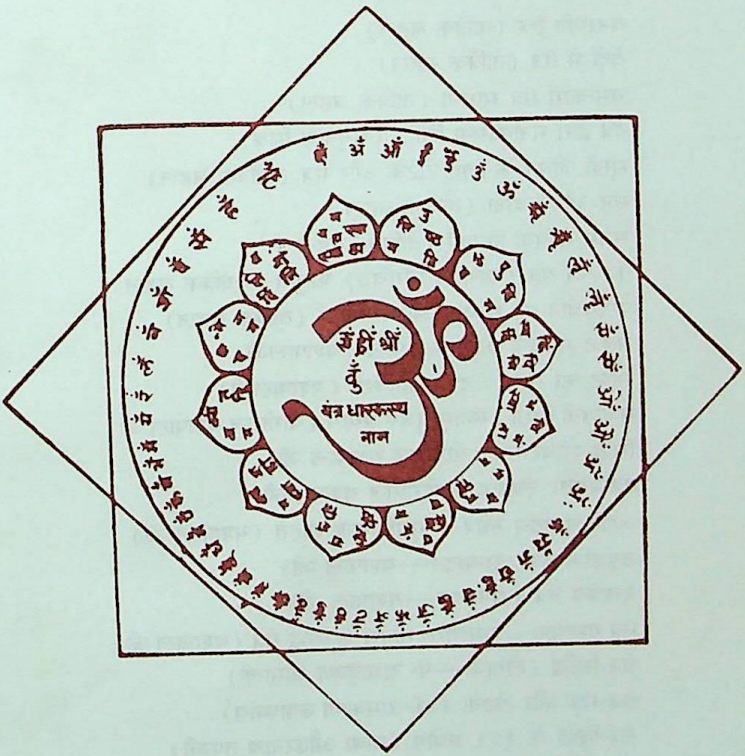

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

मंत्र तंत्र सम्बन्धी नए प्रकाशन

सौन्दर्य लहरी (यंत्रों और व्याख्या सहित)
तंत्र द्वारा यश, धन और विद्या प्राप्ति
गोरख तंत्र (तांत्रिक बहल)
त्रिसूक्तं (हिन्दी अनुवाद सहित)
धनदायक तांत्रिक प्रयोग (तांत्रिक गोपालराज)
मृत आत्माओं से सम्पर्क (तांत्रिक बहल)
वनस्पति तंत्र (तांत्रिक बहल)
वेदों में तंत्र (तांत्रिक बहल)
चमत्कारी मंत्र साधना (तांत्रिक बहल)
तंत्र द्वारा मनोकामना सिद्धि (भृगुनाथ मिश्र)
सुखी जीवन के लिए टोटके और मंत्र (तांत्रिक बहल)
रत्न और रूद्राक्ष (तांत्रिक बहल)
सुगम तांत्रिक क्रियाएँ (तांत्रिक बहल)
तंत्र मंत्र यंत्र (चाणक्य विरचित) प्रस्तुति—तांत्रिक बहल
पराविज्ञान की साधना और सिद्धियां (तांत्रिक बहल)
संकट मोचिनी कालिका सिद्धि (यशपालजी)
सृष्टि का रहस्य : दश महाविद्या (यशपालजी)
सजीवनी विद्या : महामृत्युंजय प्रयोग (योगीराज यशपाल जी)
सिद्ध शाबर मंत्र (योगीराज यशपाल जी)
तंत्र प्रयोग लेखक—योगीराज यशपालजी
आदित्य हृदय स्तोत्र—सूर्योपासना सहित (यशपाल जी)
उड्डीश तंत्र (सम्पादन—यशपाल जी)
दत्तात्रेय तंत्र (सम्पादन—यशपाल जी)
मंत्र रामायण—रामचरित मानस के सिद्ध मंत्र (यशपाल जी)
तंत्र सिद्धि (लेखक—पं० राधाकृष्ण श्रीमाली)
तंत्र-मंत्र और टोटके (डॉ० रामकृष्ण उपाध्याय)
यंत्र विद्या के १२१ प्रयोग (बाबा औढरनाथ तपस्वी)
मंत्र प्रयोग (लेखक—बाबा औढरनाथ तपस्वी)
आदि मंत्र-शास्त्र (गर्ग-महेश्वर संवाद)
रूद्राक्ष भस्म और त्रिपुण्ड्र विज्ञान (डॉ० उपाध्याय)
रुद्राक्ष महात्म्य और धारण विधि (बाबा औढरनाथ)

रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन)

रेलवे रोड, आरती होटल के पीछे, हांसी

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri

बाबा की ओर से

आज के इस आधुनिक युग में भी विश्व के सभी धर्मों के लोग मंत्र तंत्र और यंत्रों की गहनता को स्वीकार करते हैं। इस विद्या की कई प्राचीन श्रेष्ठ पुस्तकें हैं परन्तु उनका प्राचीन स्वरूप अब समाप्त हो गया है। वर्तमान पुस्तक **'यंत्र विद्या के १२१ प्रयोग'** इस विद्या की पुनः स्थापना के लिए एक भागीरथ प्रयत्न है। इसमें दिये गये यंत्र व उनकी विधियाँ बड़े-बड़े साधु सन्यासियों व कुछ अलभ्य पुस्तकों के कटे-फटे अंशों से प्राप्त की गई हैं। मैंने सभी यंत्रों को विश्वास से प्रयोग किया है जो हर स्थिति में ठीक उतरे हैं। परीक्षा करने के लिए यंत्र का प्रयोग करना इस विद्या का अपमान करना होगा क्योंकि श्रद्धा ही इस विद्या की सिद्धि के लिए एकमात्र कुंजी है। अतः श्रद्धाहीन पाठक या साधक ये पहले समझ लें कि यंत्रों की परीक्षा के लिए उनका कोई भी प्रयोग असफल हो सकता है अथवा उनके स्वयं के लिए हानिकारक भी।

इस संग्रह में सभी तरह के यंत्र सम्मिलित किये हैं आप इन यंत्रों को बन्दूक से छोड़ी हुई गोली ही समझिये। अधिक प्रशंसा नहीं करना चाहता हूँ क्योंकि ये एक गुप्त विद्या है और इसका वास्तविक सार तो एक साधक ही समझ सकता है। इन सबको ऐसे सिद्ध पुरुषों से प्राप्त किया गया है कि जिसे आप मूल्य खर्च करके भी प्राप्त नहीं कर सकते। इस विद्या को प्राप्त करने का अधिकार भी सभी को है—

जात पात पूछे नहिं कोई,
हरि को भजे सो हरिको होई।

जो नियमबद्ध होकर साधना करेगा उसको सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

—औढरनाथ 'तपस्वी'

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

CC-0. Nanaji Deshmukh Library, BJP, Jammu. Digitized by eGangotri